अभागा

मैक्सिम गोर्की के सर्वप्रथम उपन्यास
'लकलेस पवेल' [Luckless Pavel] का हिंदी अनुवाद

अ भा गा

भूमिका
वीरेन्द्र त्रिपाठी
अनुवादक
नूर नबी अब्बासी

न व यु ग प्र का श न
दिल्ली

प्रकाशक
नवयुग प्रकाशन,
चावड़ी बाजार,
दिल्ली।

प्रथम आवृत्ति] [मूल्य साढ़े तीन रुपये

मुद्रक
रामा कृष्णा प्रेस,
कटरा नील, दिल्ली।

भूमिका

गोर्की की महत्ता के बारे में दो रायें नही मिलतीं । सभी एक स्वर से उन्हें विश्व-साहित्य की निधि के रूप में स्वीकार करते हैं ।

हमारे देश में साहित्यकारों के उचित सम्मान की व्यवस्था अभी नही हो पायी है । हमारे ही देश में क्यों, अभी संसार के आधे हिस्से में साहित्यकार या तो अर्धविक्षिप्त है या झूठी प्रशंसा के आत्माभिमान में लिप्त है । उचित आत्मिक प्रतिष्ठा, सामाजिक पुरस्कार और पाठकों की सहानुभूति ही तो लेखक का सम्बल है ।

महान लेखकों को हमेशा संघर्षशील व्यक्तित्व की आवश्यकता होती है । मैक्सिम गोर्की महान लेखक थे । घटनाओं की गहराई में उतरने की उनकी सूझबूझ और मानवता के प्रति अखण्ड विश्वास की वृत्ति दुर्दमनीय थी । उनकी मानवप्रियता, उसकी अत्यन्त लोकप्रिय सूक्ति 'इंसान' कितनी मधुर है इसकी ध्वनि' से प्रकट है ।

दूसरे कथाकारों की तरह गोर्की ने भी अपना जीवन लघु कथाओं से प्रारम्भ किया । लघु कथाओं में एक असाधारण थीम और घटना पात्रों की लपेट में आकर विशिष्ट रूप धारण कर लेती है । यही विशिष्टता कहानी-कला को नवीन और पुरातन काल दोनों में लोक-प्रिय बनाये रही है । पर गोर्की ने बंधी लीक से कुछ छिटककर अपनी कहानियों में और भी आवश्यक तत्वों का प्रवेश किया, विशेषत: समस्यात्मक घटनाचक्रों का जो तत्कालीन कथा-साहित्य में अप्राप्य थे । जीवन की समस्याओं में जितना हा उलझाव होगा उतनी ही कठिनाई होगी मानवीय चित्रण में, पर गोर्की की पकड़ ने उनके कथा-साहित्य मे उलझाव की कोई गुंजाइश ही नहीं छोड़ी ।

प्रारम्भ में गोर्की स्वयं रोमानी थे, जो विशेषता उनके जीवन की कठिनाइयों की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप उनमें उत्पन्न हुई थी पर उनका सतर्क ध्यान उन दिनों भी पीड़ा और दमन के प्रति निस्पृह विद्रोही नही था, विद्रोह में वह सदैव क्रियात्मक रहे ।

गोर्की की तरुणाई नाना प्रकार के छोटे-मोटे कामों को करते

बीती। वे काम करने पर विवश हुए क्योंकि उनके माता-पिता उन्हें काफी छोटी उम्र में छोड़कर मर गये थे। उस दौर में गोर्की को रूसी जिंदगी के अनेक अनुभव हुए, जिनकी आधार-शिला पर उन्होंने अपना जीवनदर्शन बनाया और जीवन के पहले हिस्से मे उन अत्याचारों और पीड़ाओं के प्रति विद्रोह प्रकट करते रहे। अक्तूबर-क्राति से पहले उनके जीवन का मूल उद्देश्य जारशाही के अत्याचारों का आमूल-चूल विनाश रहा और उनकी यह प्रवृत्ति उनकी इस कला से पहले ही सभी रचनाओं में प्रतिध्वनित रही है।

ज़ारशाही ने रूस को पददलित किया था। सांस्कृतिक और भौतिक उन्नति के सभी द्वार जनता के लिए बन्द थे। भला जनता के हिमायती गोर्की कैसे इसे सहन कर सकते थे ? उनका मनुष्य प्रेम, जिसके आधार पर उनकी स्वयं की अनुभूतियाँ थीं, कैसे न विद्रोह करता ?

हिन्दी के बहुत कम ऐसे पाठक होंगे जिन्होंने रूसी उपन्यास 'मा' न पढ़ा हो। 'मा' इस युग की दस्तावेज है जो सामूहिक जनशक्ति और चरित्र की उत्तरोत्तर ऊँचाई के लिए प्रेरणा वा स्फूर्ति प्रदान करती है। इस उपन्यास में व्यक्ति और समाज का नया सम्बन्ध दिग्दर्शित है। इसमें व्यक्तियों में संघर्ष नहीं, उन व्यक्तियों में जो अपने एकांत स्वार्थ के वशीभूत होकर अपने सीमित स्वार्थों के लिए झगड़ते हैं, बल्कि है समुदायों का संघर्ष, जिन्दगी में नया निखार लाने के लिए, बुनियादी उद्देश्यों और आदर्शों के लिए।

गोर्की की सभी रचनाओं का मुख्य थीम (केन्द्र) यही है कि मनुष्य जिस पीड़ित अवस्था में पहले रहा, अब नहीं रहेगा। गोर्की ने अपना लेखक-जीवन परित्यक्तों और दुखियों के बारे में लिखने से प्रारम्भ किया। गोर्की ने अपना अधिक समय पीड़ितों के चित्रण में लगाया, न कि पीड़कों के जैसा उनके युगीन कई लेखकों ने किया है। और उनकी इसी विशेषता के कारण वह साहित्य में निश्चित धारा प्रवाहित कर सके। उन्होंने अपनी रचनाओं में उनका चित्रण किया जो

पूँजीवाद के विकास के फलस्वरूप अपने सामाजिक वर्ग से छिटक गये थे और बेसहारा हो गये थे। उनकी रचनाओं में समाज के वर्गों का यह रूप स्पष्टतः प्राप्य है—उनका चित्रण चतुर्मुखी है।

उनका आदर्श गिरे हुए को और गिराना नहीं, बल्कि गिरकर उठने वाले इंसान की सहायता करना था। उनके इसी आदर्श ने उनकी रचनाओं में ऐसे पात्र या व्यक्ति विश्व-साहित्य को प्रदान किये हैं। गोर्की महान मानवतावादी थे पर उनकी मानवता की नीव दया पर नहीं, उत्साह पर आश्रित थी। उनमें और साधारण मानवतावादी लेखकों में यही मौलिक अन्तर है। साधारण मानवतावादी दुःख, पतन और क्रोध का चित्रण करके सन्तुष्ट हो जाता है, पर गोर्की जैसा मानवतावादी उस दुःख, पतन और क्रोध को तार्किक आधार देकर संसार के नये निर्माण के लिए आह्वान करता हैं। साधारण मानवतावादी स्वप्नप्रिय और निष्क्रिय तटस्थ सत्यों का उद्घाटन करते हैं, जब गोर्की जैसा मानवतावादी नये सत्यों का निर्माण करता है, क्योंकि वह सत्य भी समाज की जड़ों में खोजता है वातायन में नही। इसीलिए गोर्की का मानवतावाद सर्वहारा मानवतावाद है।

उनकी सर्वोत्कृष्ट रचना 'मा' में उनकी यह ध्वनि सदैव ही गूँजती रही है। इसमें व्यक्ति 'सक्रिय' नायक है, समुदाय नायक है और उसके आदर्श और संयुक्त विचार नायक है। उन्नीसवीं सदी के उपन्यासकारों में व्यक्ति की पीड़ा और उसकी निरन्तर ह्रासोन्मुखी प्रतिभा का 'सजीव' चित्रण है, पर गोर्की ने उपन्यासों को एक नयी दिशा दी और वह दिशा थी समुदाय का नायक होना। व्यक्ति के रोमानी विद्रोह से पूरे समाज का वर्ग का विद्रोह गोर्की ने बड़ी कुशलता से और प्रभावपूर्ण मनोवैज्ञानिक ढंग से यह दिखाया है कि किस प्रकार समुदाय की आशा-आकांक्षाएँ व्यक्ति को ऊँचा उठाती हैं और उसके लिए उनका मूल्य अमोल हो जाता है। 'मा' के पात्र मस्तिष्क

के खिलवाड़ नहीं, रोमानी कल्पना के शिकार नहीं, बल्कि वे जीवन्त ऐतिहासिक काल की उपज हैं और यथार्थ जीवन से लिये गये हैं और रूस के तत्कालीन नर-नारियों की आकांक्षाओं को प्रकट करते हैं।

गोर्की के उपन्यासों में और भी कई विशेषताएँ परिलक्षित होता हैं। उनके एक दूसरे उपन्यास 'क्लिम समागिन का जीवन' में उन्होंने मरणोन्मुख समाज के पात्रों में और नये उठ-उभरते 'सक्रिय' नायकों का संघर्ष चित्रित किया है। उन्होने व्यक्ति को ऊँचा उठाया ही है साथ ही समाज को भी बहुत ऊँचा उठा दिया। समागिन एक ऐसा बुद्धिजीवी है जो जनता के विरुद्ध खड़ा होता है और समझता है कि वह 'सांस्कृतिक मूल्यों का स्वतन्त्र निर्माता है।' गोर्की ने सांगोपांग रूप से उसका पतन दिखाया है, उसके जीवन-दर्शन का खोखलापन चित्रित किया है, उसके व्यक्तित्व की व्यर्थता प्रदर्शित की है और जनता से उसकी स्वतन्त्रता की लड़ाई से पृथक् होने वा सांस्कृतिक निर्माण की शक्ति का क्षय प्रस्तुत किया है।

गोर्की हर प्रकार के सामाजिक और जातीय उत्पीडन के सक्रिय विरोधी थे। वह उन सब जीवन दर्शनों का डटकर मुकाबला करते थे जो जन-साधारण और स्वतत्रता तथा जनतन्त्र के विपरीत थे। वे सदैव ही सामाजिक बुराइयों से कड़ा और सतत सघर्ष करने के हामी थे। उनके अनेक नाटकों मे एक बहुत प्रसिद्ध नाटक 'अतल गहराइयाँ', तथाकथित मानवतावाद, प्रभावहीन सहानुभूति और आत्मा को थपकियाँ देकर विभ्रान्त और उच्छिद्र करने वाली प्रत्येक धारणा को नंगा करता है। इस नाटक मे गोर्की ने धैर्य को 'दासीय आचारवृत्ति' (जेहि विधि राखे राम तेहि विधि रहिये, कोइ नृप होई हमें का हानी) जैसी वृत्तियाँ आत्म-समर्पण, बुराई के प्रति संघर्ष न छेड़ने की वृत्ति और सहते ही रहने और कुछ न करने की प्रवृत्ति के विरुद्ध ललकारा है।

गोर्की बहुमुखी प्रतिभा के लेखक थे। उन्होंने आलोचनाएँ लिखी है, कविताए लिखी है और नाटक, कहानी व उपन्यास के लिए तो वे

अत्यन्त प्रसिद्ध है। उनकी आलोचनाओं से रूस में उनके आगे की पीढ़ी के साहित्यकारों ने बहुत कुछ सीखा है और परवर्ती साहित्यकारों पर उनका यथेष्ट प्रभाव है। वे चाहते थे कि सोवियत साहित्य 'नस्लभेद से दूर जातिवर्ग विभेदों से विमुख' एक ऐसे मनुष्य को जन्म दे, जो मानवता का उत्कृष्ट सृजन है। इसीलिए उन्होंने एक बार रोमां रोलाँ को लिखा था—'हम जनता को नायक बनना सिखाना चाहते हैं। हम एक ऐसे व्यक्ति का निर्माण करना चाहते हैं जो निःस्वार्थ हो, वीर हो, निडर हो, निःस्वार्थी हो, किसी आदर्श का प्रेमी हो और ईमानदार हो तथा जिसे महान कार्य का हौसला हो।' इसी धारणा से नये कलात्मक प्रकटीकरण की खोज प्रारम्भ हुई, क्योंकि 'शौर्य के काम शौर्यमयी भाषा चाहते हैं और जीवन शौर्यमयी कविता चाहता है गोर्की ने सोवियट लेखकों का आह्वान किया, एक ऐसी कला निर्मित करने के लिए जो हमारे युग के उस मनुष्य का चित्रण कर सके जो 'इतनी सुन्दर और इतनी अद्भुत' वस्तुओं की रचना कर रहा है। इस रचनात्मक प्रतिभा की प्रशंसा ही सोवियत लेखकों का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। परन्तु उन्होंने सुन्दरता के प्रति कभी अवहेलना नहीं दिखायी, बल्कि सदैव ही 'सुन्दरता की प्यास' और मनुष्य में 'पृथ्वी को सुन्दर बनाने' के हौसले को मुख्य स्थान प्रदान करते रहे।

उन्होंने इस नयी कलात्मक अभिव्यक्ति को 'समाजीय यथार्थवाद' कहा है। अन्धकार को नष्ट करना, मानवोन्नति में बाधक सभी प्रवृत्तियों को नयी यथार्थता के गुम्फन से अभिभूत कलात्मक छवि-चित्रों द्वारा परास्त करना ही इसका मूल उद्देश्य है। भूतकाल और वर्तमान की ही आलोचनात्मक तस्वीर देना इसका काम नहीं, बल्कि प्रथमतः देश में प्राप्य क्रांतिकारी कार्यों की उचित भावनात्मक सहायता और समाजवादी भविष्य के उच्च लक्ष्यों पर प्रकाश डालना इसका काम है।

गोर्की यह चाहते थे कि सोवियत कलाकार अपनी पुरातन परम्परा को पुनर्जीवित करें और ग्राम-साहित्य से सम्बन्ध स्थापित करें। गोर्की ने स्वयं सोवियत परिस्थितियों के अनुकूल जनगीतों को पुनजीवित किया। यद्यपि वे समाजवादी संस्कृति के बहुत बड़े उपासक थे, तो भी उन्होंने प्राचीन रूसी और विदेशी साहित्य के बीच गहरा सम्बन्ध बनाये रखा।

उनका कहना था कि सच्ची कला वहीं उत्पन्न हो सकती है जहा लेखक और पाठक के बीच पूरा-पूरा विश्वास स्थापित होता है। लेखक का काम है कि वह मनुष्य की आत्मा की शक्ति को प्रकट करे। जब लेखक हमारे जीवन के सुख-दुःखों के बारे मे कुछ कहता है तो अच्छी या बुरी चीजों के बारे में व्यर्थ अथवा घृणित वृत्तियों के बारे में लिखता है, तब अगर वह ईमानदारी से अपने विचार प्रकट करता है, मानो दोस्त को कुछ सलाह दे रहा हो तो पाठक उसे सहज में समझ लेगा और सचमुच ही उसे अपना मित्र समझेगा।

लेखक का कार्य बहुत कठिन होता है। लोगों के बारे में कहानियाँ लिखना, सिर्फ ताना बुनना ही नही है। शब्दों के सहारे, जैसे कलाकार रंगों से चित्र भरता है, चित्र प्रस्तुत करना लेखक का परिश्रम है। ऐसा कर सकने के लिए विषय-वस्तु की मुख्य बारीकियों को समझना, कार्यकलापों का गहन अध्ययन और फिर उन्हें शब्दों से सजीव रूप मे लिखना जिससे पाठक उन छापे के अक्षरों की ओट से हाड़-माँस का जीवित पात्र देख सकें, उसके कामों में ऐसी तन्मयता और सरसता हो जो पाठक के तन्तुओं को झकझोर सके, वह समझे कि वह धटना इसी प्रकार हो सकती थी और किसी दूसरे ढब से नहीं।

गोर्की की रचनाओं में यह सहज सुलभता, गहराई और भावोद्रेक उत्पन्न करने की क्षमता पग-पग पर विद्यमान है। इसीलिए सोवियत साहित्य और विश्वसाहित्य में उनका यथेष्ट सम्मान किया जाता है और उनकी डाली लीक पर चलने में साहित्यकार अपना मान समझते हैं।

गोर्की का उद्देश्य मानव की प्राण प्रतिष्ठा करना था। सत्य, शिव और सुन्दर के उपासक मानव की सांस्कृतिक, भौतिक और आत्मिक उन्नति के लिए निरन्तर संघर्ष में रत रहना ही उनका मूल मंत्र था, और यही मत्र वह पाठकों और लेखकों, दोनों के लिए समान रूप से छोड़ गये है। समाज के प्रति सही और स्वच्छ दृष्टिकोण, व्यक्ति का उसके निर्माण मे योग और उसके स्थान के निर्धारण पर उन्होंने नये लेखकों को चेतावनी देते हुए कई बार कहा था, 'साहित्य क्या है इस पचड़े में मत पड़ो, साहित्य अपने लिए नहीं होता, दुनिया में कोई भी वस्तु अपने लिए ही नहीं हैं, प्रत्येक वस्तु किसी अन्त के लिये (उद्देश्य के लिए) है और एक-न-एक रूप में आश्रित, सम्बन्धित और गुम्फित है।······कलाकार उस सत्य का निर्माण करता है जो मनुष्य को उन्नत करता है।'

गोर्की सौन्दर्य- शास्त्र में नयी पद्धति के जन्मदाता थे, क्योंकि उन्होंने सुन्दरता के विचार को एक नये रूप में गूँथना प्रारंभ किया। काव्य का प्रमुख आधार 'कल्पना' पूँजीवादी समाज में छिन्न-भिन्न हो जाती है क्योंकि यथार्थता स्वप्न के मुकाबले सर्वदा कटु रहती है। समाजीय यथार्थवाद काव्यगत कल्पना के लिए महान् सम्भावनाओं के द्वार खोलता है। समाजीय यथार्थवाद के सत्त्व की परिभाषा करते हुए गोर्की ने लिखा था—'सच्ची कला को अतिशयोक्ति का अधिकार होता है, हरकुलीज, प्रोमेथ्यूज, दौन क्विक्जो और फास्ट केवल 'कल्पना के फल' नहीं,बल्कि पूर्ण न्यायसंगत और आवश्यक काव्यगत उन उपादान में से हैं जो सत्य है। हमारा सत्य और जीवित नायक, वह मनुष्य जो समाजवादी संस्कृति बना रहा है, हमारी कहानियों और उपन्यासों के नायकों से कहीं अधिक बड़ा और सुशील है। साहित्य में उसका चित्रण और भी महान और प्रभावशाली होना चाहिए। यह सिर्फ जीवन की ही माँग नहीं, बल्कि समाजीय यथार्थवाद की माँग है, क्योंकि इसका आधार यह मान कर चलना है और ऐसा है कि

मान्यता अतिशयोक्ति की बहिन ही तो है।

इंसान में निरन्तर बढ़ने की आकांक्षा और उनके लिए आवश्यक समाधान के प्रति सतर्कता ही साहित्यकार का रचनाओं में मूल उद्देश्य हो, यही गोर्की का व्यक्तित्व स्पष्ट करता है।

प्रस्तुत पुस्तक गोर्की के सर्वप्रथम उपन्यास 'आर्फन पाल' या 'लकलैस पवेल' का हिन्दी अनुवाद है। गोर्की की यह रचना उनके शहर के ही एक पत्र में क्रमशः छपी थी। अपनी मृत्यु से पहिले गोर्की इस रचना पर फिर परिश्रम करना चाहते थे (जैसा कि उनकी मृत्यु के पश्चात् प्राप्य उनके कागज-पत्रों से प्रकट है) पर असामयिक निधन के कारण वह संशोधन-परिवर्द्धन अधूरा ही रह गया।

'आर्फन पाल' जब छपा उस समय गोर्की छब्बीस बरस के थे और साहित्य में डग ही भर रहे थे। समाज के अशिव की ओर घृणा और शिव को उजागर करने की उनकी प्रवृत्ति उभर ही रही थी। उनकी इस रचना में हमें इसकी स्पष्ट झलक मिलती है। परन्तु पाल, उसकी परिस्थितियाँ, तत्कालीन रूस की परिस्थितियाँ, स्त्रियों की दशा और पुलिस का चिट्ठा हल्के-हल्के रूप में सभी कुछ तो है इसमें और सर्वोपरि प्यार का जज़बा। पीड़ित मानवता के चित्रण में गोर्की ने प्रारम्भ से जो मोह दिखाया वही एक दिन उसकी महनता का आधार बना।

'आर्फन पाल' का अनुवाद श्री नूर नबी अब्बासी ने किया है, जो अपने सुन्दर अनुवादों के कारण अब प्रख्यात हो चले हैं। उनकी भाषा मे रवानी है और ताज़गी भी। सबसे बड़ी बात तो यह है कि उनमें मूल रचना की शैली और भाषा के मुहाविरे समझने और उनको देशी रूप में ढालने की सामर्थ्य है, जो आज की हिंदी के कम अनुवादकों के हिस्से में आई है।

१८—११—५४

जामा मस्जिद, दिल्ली —वीरेन्द्र त्रिपाठी

१

मेरे नायक के माता-पिता बड़े विनम्र लोग थे। वे गुमनाम रहना चाहते थे और इसीलिये उन्होंने अपने नवजात शिशु को एक निर्जन गली में, एक मकान की चारदीवारी के समीप छोड़ दिया और अंधियारी रात्रि मे विलीन हो गये। उनके इस कृत्य से प्रकट होता है कि अपनी स्वत: की उस सृष्टि पर उन्हें कोई विशेष गर्व नहीं हुआ और न ही उनमें इतनी नैतिक शक्ति थी कि वे अपने पुत्र का इस प्रकार पालन-पोषण करते कि वह बड़ा होने पर उनके स्वभाव के प्रतिकूल निकलता।

यदि उपर्युक्त विचार ने ही उन्हें पुत्र-त्याग पर विवश किया था तो इसका प्रमाण उस रात में जबकि उन्होंने अपने बालक को समाज के सुपुर्द करने का निश्चय किया था—एक संक्षिप्त पुर्जे से मिलता है। वह पुर्जा बालक के चिथड़ों से जिनमें कि वह लिपटा हुआ था चिपका हुआ था। "बालक का नाम रखा गया है, पाल"। वे पूर्ण रूप से मूर्ख या हतबुद्धि तो नहीं थे क्योंकि उनका ऐसा करना केवल एक ही बात का प्रतीक है कि माता-पिताओं में अधिकांश का यह विचार होता है कि वे अपनी सन्तान को वे ही आदतें, पक्षपातपूर्ण भावनाएँ, विचार और तौर-तरीके सिखाएँ जिन पर उन्होंने अपने जीवन का एक लम्बा समय नष्ट किया है।

चार दीवारी के सहारे छोड़ जाने के कुछ समय पश्चात तक नन्हा पाल एक सच्चे भाग्यवादी की नाईं वहाँ पड़ा रहा। वह बड़ी विनयशीलता से मुँह में रखा रोटी का टुकड़ा चूसता रहा। जब वह यह करता-करता ऊब गया तो उसने जीभ से उसे बाहर निकाल दिया और

एक हल्की-सी आवाज निकाली जिससे रात्रि की निस्तब्धता में शायद ही कोई बाधा पड़ी हो।

वह अगस्त की रात थी, अंधेरी और ताजगीपूर्ण। ऐसा महसूस होता था मानो पतझड़ समीप है। लचकदार भोजपत्र की शाखाएँ जिन पर पहले से ही बहुत से पीले पत्ते थे और जिनमें से कुछ जमीन पर गिर पड़े थे नन्हें पाल की ओर झुक गये थे। कुछ-कुछ देर में ऐसा होता कि पत्ते आहिस्ता से अपने आप को शाखाओं से अलग कर लेते, कुछ संकोच के साथ नर्म और घनी हवा में चक्कर लगाते और धीरे-धीरे जमीन पर आ गिरते। दिन में काफी बारिश हुई थी। सँध्या होने तक सूर्य ने अस्त होते हुए जमीन को पूरी तरह से गरमा दिया था।

कभी-कभी तो पत्ते पाल के नन्हें लाल मुँह पर गिर पड़ते जिसे उसकी मां ने इस तरह कस कर चिथड़ों में लपेटा था कि मुश्किल से ही उसका कुछ हिस्सा दीख पड़ता था। जब पत्ते इस प्रकार गिरते तो पाल मुँह बनाता और पलकें झपकाता था। वह तब तक इसे बरदाश्त करता रहा जब तक कि उसने अपने चिथड़े न हटा लिए और अपना नन्हा-सा शरीर रात की नमी में खोल न दिया। और तब अपने को स्वाधीन समझ उसने अपना नन्हा पैर उठा कर मुँह से लगा लिया और उसे चुपचाप चूसता रहा लेकिन साथ ही जो मजा उसे आ रहा था वह भी जाहिर ही है।

लेकिन आप मुझे क्षमा कीजिये। यहाँ मै बालक के व्यवहार का जो उसने चारदीवारी के सहारे पड़े रहते समय किया था तर्क संगत दृष्टि से जिक्र कर रहा हूँ। मै स्वयं तो उसे नही देख रहा था। केवल वह सुन्दर, गहरा आकाश जो सुनहरे तारों से भरा हुआ था, उसे देख रहा था। और दैवीय शक्तियाँ हालाँकि वे बहुधा कवियों के और सच्चे भक्तों के होठों पर होती है दुनिया के मामलों के प्रति उस समय भी हमेशा की भाँति उदासीन थीं।

यदि मैने पाल को उस चार दीवारी के समीप देख लिया होता तो

उसके माता-पिता के लिये मेरी क्रोधाग्नि प्रज्वलित हो उठती और बच्चे के प्रति मुझमें अपार दया-भाव उमड़ आता। मैं तुरन्त पुलिस को बुला लेता और उसके बाद अपने को गर्वशाली समझता हुआ मैं घर लौटता। मेरी जगह कोई और व्यक्ति भी यही करता। मेरा वास्तव में इस पर विश्वास भी है। लेकिन उस समय वहाँ कोई नहीं था और इसीलिए उस शहर के निवासी अपने सद्विचारों का सहज प्रदर्शन करने से बंचित रहे। अधिकतः लोग अपने सद्गुणों के प्रदर्शन को अत्यन्त महत्त्वशील और कार्य साधक व्यवसाय समझते हैं बशर्ते कि वह व्यवसाय अन्य प्रतियोगी हितों में हस्तक्षेप न करे।

लेकिन वहाँ तो कोई था ही नहीं। आखिरकार पाल ठण्ड में बुरी तरह अकड़ गया। उसका पैर मुँह से अलग हो गया। पहले कुछ हल्की और धीरे-धीरे रोने की आवाज आई और फिर जोर-जोर के रोने-चीखने से रात्रि की नीरवता विचलित हो उठी।

उसे देर तक नहीं रोना पड़ा क्योंकि कोई आधे घण्टे में ही एक व्यक्ति घूमने वाले लंबे वृक्ष के तने की समानता लिये हुए आया और बालक की ओर झुका। भारी आवाज में बड़बड़ाते हुए उसने कहा, "हरामी कहीं के," और मुँह भर के एक तरफ थूका। फिर उसने बच्चे को उठा लिया और जैसे भी वह उसे लपेट सकता था बड़ी सावधानी से उसे लपेट कर बच्चे को अपने कोट में ठूँस लिया और इस प्रकार कड़कड़ाती ठण्डी हवा और पाल के रोने को एक साथ उसने बंद कर दिया।

"हे भगवान, यह एक और आन पड़ा! हरामी कहीं के! अब ये इस गर्मी में तीन हो जायेंगे। कमबख्त कहीं के! एक और टपक पड़ा! पाप, पाप..........और अधिक पाप! मै तो इस पर थूकता हूँ।"

यह था क्लिम विस्लोव, चौकीदार जो नैतिकता का बड़ी कठोरता से पालन करता था पर हाँ, उसकी नैतिकता उसके घोर शराबी होने में कभी बाधक सिद्ध न हुई। न ही उसकी इस भ्रष्टता में उसने हस्तक्षेप

किया कि वह माँ, बाप और आत्मा इन तीन प्रतीकों का बड़ा परम भक्त था।

"इसे जरा पुलिस चौकी तक ले चलो !"

यह आज्ञा एक साधारण से सिपाही कार्पेको की थी जो उस शहर का छटा हुआ दौ ज्वाँ* था। उसकी मूँछे लाल और नुकीली थीं और आँखें ऐसी साहसी थी कि वह बड़ी जल्दी किसी भी लड़की के हृदय को प्रज्वलित कर सकता था। यह हुक्म एरिफी गिबली को दिया गया था जो एक सिपाही था, बड़ा ही उदासीन और निराशपूर्ण व्यक्ति जिसे यदि कुछ प्रिय था तो वह एकान्त, पुस्तकें, चहकते हुए पक्षी और घृणा थी तो बकवास से, टैक्सी ड्राइवरों से और स्त्रियों से।

एरिफी गिबली ने नन्हें पाल को अपनी बाहों में ले लिया और वह वहाँ से जाने ही को था कि अचानक रुक गया। उसने बच्चे के चिथड़े खोले ताकि उसका चेहरा दिखाई दे। कुछ क्षण वह बच्चे की ओर निहारता रहा फिर उसके गाल छुए, उस पर झुका, मुँह भींचा और अपनी जीभ गीली कर ली।

पाल फिर चुपचाप अपना रोटी का टुकड़ा चूस रहा था उसे दिल-चस्पी ही न थी कि वह देखे और समझे कि एरिफी गिबली अपने उन विचित्र हाव-भावों द्वारा क्या कहना चाहता है। उसने उत्तर दिया पर वह केवल भवों द्वारा जिससे कोई निश्चित, स्पष्ट या समझने योग्य बात नहीं हो सकी।

और इसके बाद एरिफी गिबली इतनी जोर से हँसा कि उसकी मूँछें उड़ कर उसकी नाक से लगीं। उसकी बड़ी सियाह दाढ़ी हिली और उसके कानों से जा टकराई। ज्योंही वह सड़क पर चला उसने बड़े जोर से पाल से प्रश्न किया, "अगली पीढ़ी का आदमी है, एँ ?—और उत्तर में बालक ने स्वीकार सूचक सिर हिला दिया और गलगल करने लगा।

---

*लार्ड बायरन के उपन्यास "दौं ज्वाँ" का नायक।

"अखह ! ओक्खो ! क्रू-क्रू-क्रू ! बुर-बुर !" एरिफी गिबली ने कबूतर की नाईं गुटरगूँ किया। एक बिजली के खंभे के पास पड़े ढलवाँ पत्थर पर बच्चे पर आँखें गड़ाये वह बैठा था मानो बच्चे की ओर से किसी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा कर रहा हो।

बच्चा उलझन में पड़ गया, एरिफी की फूहड़ भाषा वह न समझ पाया। उसने कई बार सिर हिलाया, लापरवाही से अपनी भवें उठाईं लेकिन रोटी के टुकड़े को मुँह से न निकलने दिया।

एरिफी ठहाका मार कर हँस पड़ा।

"यह पसंद नहीं, ऊँह ? अबे—मच्छर कहीं के !"

इस शब्द "मच्छर" पर बच्चा पूरी तरह समझ गया कि उसे कुछ मिलने-मिलाने वाला नहीं है इसलिये उसने अपना मुँह और आंखें फाड़ कर उसे देखा। वह बड़ा गड़बड़ाया-सा लग रहा था लेकिन सच तो यह है कि वह अपनी रोटी चबा रहा था।

एरिफी ने बड़ी फुर्ती से उसे झंझोड़ा और रोटी निकाल फेंकी, फिर बड़ी जिज्ञासा भरी दृष्टि से बच्चे को देखा मानो अपने को यह विश्वास दिलाना चाहता है कि उसने वह रोटी उसके मुँह से नहीं निकाली है।

पाल खाँसने लगा।

"शून्शू !" एरिफी गिबली भाप निकालते हुए रेल के इंजन की भाँति सी-सी की आवाज करने लगा। वह बच्चे को हिलाने-डुलाने लगा और उसने समझा कि उसकी यह चाल खांसी को रोक देगी। लेकिन बच्चा तो उससे भी कहीं जोर-जोर से खाँसने लगा।

"अरे-रे-रे !" एरिफा ने साँस ली। वह उलझन में पड़ गया और इधर-उधर लाचारी से ताकने लगा।

गली सोई हुई थी। कुछ-कुछ देर में सड़क के दोनो ओर रोशनियां टिम-टिमा उठतीं। दूर कुछ फासले पर ऐसा दीख पड़ता था मानो रोशनियाँ बिल्कुल सटी हुई है—एक दूसरे से काफी नजदीक हैं। लेकिन

सारी गली की रोशनी धुँधली थी, ऐसा लगता था मानो वह किसी प्रकार की काली दीवार पर झुकी हुई हों जो इतनी ऊँची है कि अपने ऊपर फैले हुए आकाश को घूर रही हो, चमकते-दमकते तारों की सजीव झिल-मिलाती किरणें ऐसी चमकती थीं मानो तारे मुस्करा रहे हों।

एरिफी ने सियाह दीवार से नजरें हटा लीं और नीचे की ओर देखा।

शहर दीख रहा था, गहरे रंग की इमारतों का समूह ऐसा लग रहा था, मानो एक इमारत दूसरी पर धकेल दी गई हो और लैंपों की टिमटिमाती रोशनी उन्हें बार-बार प्रकाशित कर देती थी। कुछ-कुछ देर में मुश्किल से सुनाई देने वाली आवाजें उभरतीं और दब जातीं मानो कोई आलसी और उदासीन व्यक्ति अपना सिर ऊपर को करे और फिर झुका ले।

वह निस्तब्ध और भयावह दृश्य देखकर एरिफी को ग्लानि हुई। उसने पाल को अपने खुरदरे कपड़े की जाकेट में जोर से दबा लिया, अपने सीने से लगाकर भींचा और ऊपर आकाश की ओर देख कर गहरी साँस ली। पाल को दबाव के कारण धसका लगा और अब वह दहाड़ने वाला ही था।

"फूहड़ साले!"

शहर के बारे में अपने विचारों को इस बुलन्द बाँग तरीके से जाहिर करके एरिफी रपसवां पत्थर से उठा और गली में चलने लगा। उसने बच्चे को अपनी बाँहों में दबा लिया था और उसे बड़ी सावधानी से लिए जा रहा था। कुछ देर तक वह एक गली से निकलता और दूसरी में घुस जाता था। जाहिर है वह कुछ विशेष और असाधारण विचारों तले दबा चला जा रहा था क्योंकि सारी सड़क पर उसे यह पता ही न चला कि किस प्रकार गलियाँ एक जगह इतनी सकरी हैं और दूसरी जगह कहीं अधिक चौड़ी हो गई हैं। कहीं एक दूसरे को काट देती हैं और कहीं मिल गई है। इसी तरह विचारों में डूबा वह अचानक शहर

के स्कवायर में आन पहुँचा। लेकिन उसे तब तक यह ख्याल न हुआ कि वह स्कवायर में है जब तक कि उसे अपने सामने फ़ौवारा और उसके दोनों ओर लैप पोस्ट न दीख पड़े। यह फौवारा स्कवायर के बीच में बना हुआ था। एरिफी पुलिस थाना कहीं पीछे छोड़ आया था।

अपने को व उस बोझ को कोसते हुये वह लौटा। लैंप की रोशनी एरिफी के कंधों पर पड़ी और पाल का नन्हा चेहरा दिखाई दिया जिसे कोट के सफेद कपड़े में बड़ी सख्ती से दबाया गया था।

"सो गया जान पड़ता है!" एरिफी ने बच्चे पर से आँखें हटाये बगैर ही धीरे से कहा। उसका गला बुरी तरह रुंध गया और इस तनाव व पीड़ा से बचने के लिये उसने नाक सिनकी। उसने सोचा, कितना अच्छा हो अगर बच्चे अपनी जिन्दगी के प्रारंभिक दिनों में ही यह जान लें कि जिंदगी में कैसी-कैसी हिमाकत भरी पेचिदगियां होती हैं। लेकिन अगर ऐसा ही होता तो आने वाली नस्लों का वह इंसान जो उसकी गोद में था गहरी नींद न सो पाता। वह तो शायद खूब जोर-जोर से रोता व चिल्लाता।

एरिफी गिबली पुलिस का सिपाही था और अधेड़ उम्र का था इसलिए जिंदगी की पेचीदगियों से परिचित था। वह जानता था कि अगर आप एक बार भी चीख कर नहीं बोलते तो पुलिस का सिपाही तक आपको नहीं पूछेगा। और अगर आप दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकते तो आप तबाह हो जाते हैं क्योंकि आखिर इंसान अकेला जीता ही कितना है? सदियों तक तो जीता नहीं है। यह विचारहीन बालक जरूर तबाह हो जायगा क्योंकि ऐसे खतरनाक मौके पर यह सो रहा है।

"अरे ओ!" एरिफी ने थाने के मेहराब के नीचे चलते हुये बड़ी ग्लानि के साथ पुकारा।

"कहाँ से आये हो?" सफेद कोट में विभूषित उसके साथी ने अनापेक्षित रूप से उसके सामने आते हुये पूछा।

"मेरी तो गश्त पूरी हो गई।"

दूसरे ने संतोष की साँस ली और बड़ी खुशी-खुशी पाल के गालों में उँगली गड़ा दी।

"यह कौन है?"

"अबे चुप कर, बेवकूफ! दीखता नहीं बच्चा है!"

"तुझे शैतान का वास्ता! यह बकवास क्या कर रहा है?"

"कौन है ड्यूटी पर अभी?"

"गोगोलेव।"

"सो रहा है?"

"घोडे बेचकर!"

"मारिया कहाँ है?"

"वह भी सो रही है। और क्यों न हो वक्त भी सोने का ही है।"

"उँह हूं, वह तो ठीक है।...." एरिफी गिवली ने खुसर-पुसर के अंदाज में कहा। वह विचार-मग्न था और हिला तक नहीं।

"मेरी ड्यूटी भी बस अब खतम होने ही वाली है। फिर मैं भी जाकर सो सकता हूं!" दूसरे ने कहा और चलने लगा।

"जरा ठहरो, मिखाइलो!" एरिफी ने ढीले हाथ से उसकी आस्तीन पकड़ कर खींची और फिर राजदाराना अंदाज में उसके कान में कहने लगा :

"मारिया से अगर बात करें तो कैसा रहे? तुम्हारा क्या ख्याल है?"

"हाँ, हाँ, बस इसी के तो वह इन्तजार में है!" मिखाइलो व्यंग्य-पूर्ण हँसी हँसा और पाल के शाँत, सोये हुये चेहरे को देखने लगा। "भाई मेरे, वह तो अपने बच्चों से भी ऊब गई है।"

"अरे तो क्या एक रात भी न रखेगी?" एरिफी ने ऐसे स्वर में कहा जिसे वह बड़ा तर्क पूर्ण समझा।

"तो फिर मैं क्या करूँ? यह तो सिर्फ......तुम तो जानते ही हो

उसे—मुझे वह यहाँ से निकाल बाहर करेगी......अच्छा, जरा दो तो मुझे देखता हूं क्या होता है।"

एरिफी ने बड़ी सावधानी से पाल को अपनी बाहों से मिखाइलो की बाहों में दे दिया। उसने पंजों के बल चल कर अपने साथी का बरामदे तक पीछा किया और उसके कंधों के ऊपर से बड़ी दिलचस्पी से बच्चे के चेहरे को झाँकने लगा और जब मिखाइलो के भारी बूट की बरामदे के पत्थर के फर्श पर टप-टप की आवाज आई तो उसने अपनी सांस रोक ली। वे चलते-चलते दरवाजे तक पहुँच गये।

"तुम जाओ, मैं यहीं रुकता हूँ," एरिफी ने सरगोशी के अंदाज में कहा।

मिखाइलो ने दरवाजा खोला और अदृश्य हो गया।

एरिफी निश्चल खड़ा रहा। उसे बड़ी व्याकुलता और कसक महसूस हुई। अपने कोट के कफ़ से उसने एक धागा खींच लिया, बड़ी शक्ति से अपनी दाढी कुरेदी, दीवार का कुछ पलस्तर निकाल लिया लेकिन इनमें से किसी भी बात ने उसका दिल हल्का न किया।

दरवाजे के पीछे से कुछ मौन झगड़े की आवाज़ सुनाई पड़ी।

"गालियां तो खूब दी उसने और बकी-झकी भी पर ले लिया उसे!" मिखाइलो ने दरवाजा खोलते हुए ऐलान किया। उसके सफाचट चेहरे पर विजयोल्लास के भाव अवगत हुये।

"वाह, मार लिया शेर!" एरिफी गिवली ने साँस ली। दोनों बाहर आने के लिये बढ़े।

"अच्छा, चल दिये भई! मैं अपने पहरे पर जा रहा हूँ।"

"अच्छा, ठीक है। जाओ।" मिखाइलो ने लापरवाही से कहा। वह एक कोने में गया, कुछ घास-फूस उसने जमा की और अपने सोने के लिये बिस्तरा तैयार करने लगा।

एरिफी धीरे-धीरे सीढियाँ उतरने लगा। जब वह तीसरी सीढ़ी पर पहुँचा तो उसे महसूस हुआ मानो उसके कदम सीढ़ियों से चिपके

जा रहे हों। कई मिनट वह वहां निश्चल खड़ा रहा। अंत में निम्नांकित कथोपकथन लैम्प की उस मद्धम रोशनी में हुआ :

"माइक ?"

"अब क्या है ?"

"तुम कल उसे छोड़ आओगे ?"

"हूँ ? बच्चों को ? हाँ, हाँ बिल्कुल !"

"अनाथालय में ?"

"ना बेवककूफ कही के, लुहार के यहाँ !"

कुछ क्षण दोनों मौन रहे। मिखाइलो ने अपने कोने वाले बिस्तर में घास लगाई। उसके बूट फर्श पर फिसलने लगे। एरिफी ने नजर उठाई और निद्रामग्न शहर को देखा। काली अँधियारी रात्रि ने सारे मकानों को एक सफेद, ठोस दीवार में परिणत कर दिया था। गलियों की सियाह रेखाएँ गहरी दरारें मालूम दे रही थीं। शहर के एक किनारे पर बाईं ओर अनाथालय स्थित था। वह पत्थर की बड़ी इमारत थी, बहुत ही सफेद और दीखने में सख्त। उसमें बड़ी-बड़ी खाली खिड़कियां थी। वहाँ न फूल थे और न ही उन खिड़कियों पर लटकने वाले पर्दे।

"वहाँ तो वह मर जायगा।" एरिफी भुनभुनाया।

"कौन, बच्चा ? हाँ हो सकता है। इत्तफाक है कोई बच जाय क्योंकि—तुमतो जानते हो—वहाँ की सफाई। और वहाँ की जो व्यवस्था है............"

लेकिन यहाँ मिखाइलो पर नींद ऐसी हावी हुई है कि वह खुर्राटे लेने लगा। सफाई के ध्वसांत्मक प्रभाव पर जो उसकी राय थी और बच्चों पर जिस प्रकार का नियन्त्रण वहां रखा जाता था वह सब बगैर किसी व्याख्या या जोर के ऐसे ही रह गए।

एरिफी कुछ ज्यादा देर तक खड़ा रहा; फिर अपने पहरे पर लौट गया।

जब वह वहाँ पहुंचा तो रात ढल चुकी थी और उषा आगमन के कारण वायु में ताजगी पैदा हो गई थी। जहाँ उसकी झोंपड़ी थी वह कमो-बेश जंगल ही था। अब उसे पहले से कहीं अधिक अकेलापन महसूस हुआ, उसे लगा मानो वह सारे शहर से बिल्कुल अलग है! और ये विचार अब उसे पहले से कहीं अधिक दुःखद जान पड़े। पहले कभी इस प्रकार के विचार ने किसी खास भाव अथवा विचार को नहीं उकसाया था लेकिन आज जरूर उकसाया। पुरानी भद्दी झांड़ियों से सटी एक बेंच पर जो दरवाजे के ऐन सामने थी, वह बैठ गया। एरिफी की बुढ़ापे से झुकी कूबड़वाली आकृति वहां के वातावरण से बिल्कुल घुल-मिल गई। वह विचारसागर में डूब गया। बड़े धीरे-धीरे विचार उसके मस्तिष्क को स्पर्श करने लगे। उसके किसी भी विचार को स्पष्ट रूप में और प्रश्न बनकर सामने आने के लिये काफी समय लगता था: क्या लोगों को अधिकार है कि वे बच्चे पैदा करें चाहे उन्हें पाल सकें या नहीं?

जब वह अपनी बुद्धि को पूरी तरह झिझोड़ चुका तो उसने बड़ी दृढ़ता और निष्कर्षपूर्ण स्वर में अपने प्रश्न का उतर दिया, "नहीं, उन्हें अधिकार नहीं है।" तब कहीं जाकर उसका दिल हलका हुआ। उसने गहरी साँस ली और हवा में अपनी मुट्ठी धमकाने के अन्दाज में लहराते हुए दाँत पीसकर कहा—"सुसरे कहीं के।"

सूर्य उदय हुआ। उसकी पहली किरणों ने झोंपड़ी की खिड़कियों पर अपना प्रकाश बिखेरा और शीशे के रंग को ज्वाला की भाँति सुनहला कर दिया। झोंपड़ी की वे दोनों खिड़कियाँ, ऐसा महसूस हुआ मानो किसी अजनबी राक्षस की हँसती हुई बड़ी-बड़ी आखें हैं, जिसका बड़ा ही तीव्र हरा सिर है और जो भगवान की धरती को देखने के लिये जमीन से निकल रहा है।। एल्डर झाड़ियां जो सरकते-सरकते छत पर पहुँच गई थीं बहुत कुछ उस राक्षस के बालों का जूड़ा है। और दरवाजे में जो दरारें थीं वे उसके सुखी, मुस्कराते हुये माथे पर नालियाँ सी प्रतीत हो रही थीं।

२

अगले दिन दोपहर को एरिफी मारिया के घर बैठा हुआ था। मारिया के नक्शो-निगार बड़े तीखे और आखें हरी थीं। वह मैली-कुचैली पोशाक पहने थी, उसकी घघरी उसने ऊपर को मोड़ रखी थी और आस्तीनें भी चढ़ी हुई थीं, उसकी हर हरकत वीर-रस प्रधान कविता की भाँति चुस्त और फुर्तीली थी।

एरिफी गिबली उससे बहुत कुछ कहना चाहता था लेकिन चूँकि बोलने की उसे आदत न थी इसलिये उस समय उसके साथ बैठा हुआ वह बहुत अटपटा और भद्दासा महसूस कर रहा था। मारिया के शान्त एवं सावधानीपूर्ण व्यापारों ने अपने आत्म-निश्चय और शक्ति द्वारा उसे काफी दबा दिया था। वह नारी जाति से घृणा करने वाला व्यक्ति था और अपनी इस प्रवृत्ति को वह छिपा न सका। जिस प्रकार वह मरिया के चौड़े चेहरे की ओर उदासीनता से निहार रहा था और मुह भर-भर के फर्श पर थूक रहा था उससे तो उसकी यह जहनियत और भी स्पष्ट होती जा रही थी।

नन्हा पाल मुश्क बेंत की बनी हुई कुर्सियों के गद्दे पर चिथड़ों में लिपटा हुआ लेटा था। वह उस समय शारीरिक व्यायाम में व्यस्त था और हाथों से पैर पकड़-पकड़ कर उसे मुंह में देने की कोशिश कर रहा था। लेकिन उसके लाल, मोटे पाँव ने अवज्ञा प्रकट की और नन्हा पाल उस पर दुखी न होकर खुशी की आवाजें निकालता रहा।

"हाँ तो ओ काफिर! क्या करोगे तुम अब इसका?" मारिया ने अपनी कुर्ती से मुँह पोंछा और एरिफी के रू बरू बैठते हुये कहना शुरू किया। "मैं तो इसे अपने यहां रख नहीं सकती, उं हूं, नहीं। बूढ़ी

किताएंवा के सिर पटको इसे ले जाकर । दो रूबल लेगी वह तुमसे और इसे पाल देगी। बच्चा एक महीने से ज्यादा का हो गया है और अच्छा खासा तन्दुरुस्त और शाँत बच्चा हैं। कोई तकलीफ नहीं देगा उसे। ले जाओ और उसे दे दो ।"

"और अगर उसने इसे भूखों मार दिया तो ?"

"भूखों मार दिया ? भूखों क्यों मार देगी ?" मारिया ने चुटकी ली ।

"और क्या ?·······वह भी तो औरत हैं और···········"

"ओ ए, बंद हो जाय तुम्हारी जबान खुदा करे, मरदूद कहीं के !" लो मैं अभी उसे वहाँ ले जाती हूँ और बस होगया काम । सतर उसके पहले है ही । इकत्तरवां यह हो जायगा । हां, हाँ, हां !······ मजा आ जायगा ! भूखों मारेगी ? और बच्चे पालता फिर कौन है तुम्हारे ख्याल से—तुम जैसे शैतान ? अरे ! औरत ही तो सारी कूवत है ! तुम जैसे शैतानों को कौन पालता-पोसता है ? क्या तुम किसी लौहार की निहाई पर मढ़े गये थे, क्यों ? तुम्हें हक मिल गया है ना बातचीत करने का, इसीलिये !"

"अच्छा, भौंके मत जाओ बस," एरिफी ने असल बात पर आते हुये कहा और मारिया की नजरों से बचने लगा जो किसी खास अंदाज में उस पर गड़ी हुई थी । "मेरा वह मतलब नही था । मैं तो यह सोच रहा था······"

"खामोश—बहुत होगया ! तुम्हें खुश करने के लिये कोई अपने तौर-तरीके नहीं बदल दूँगी, समझे ! देखते हो कौन कह रहा है यह सब । बहुत बड़ी हस्ती तुमसे बात कर रही है ! क्या यह हो सकता है कि मेरी जबान इतनी सख्त और शक्तिशाली हो कि तुम उसे सुनकर मर जाओ ? क्या तुम्हारे खयाल में किसी और अंदाज में भी तुमसे बातचीत की जा सकती है ? तुम जैसे आदमी को तो उठते जूती और बैठते लात पड़नी चाहिये ।"

"अच्छा, अच्छा जरा समझदारी बरतो।"

एरिफी ने बड़ी सख्ती से महसूस किया कि इस मुँहफट औरत को खूब फटकारे। पर उसने अपने भावों को वदलने का प्रयत्न किया और जब वह दब ही न सके तो उसे और भी घबराहट होने लगी।

"हाँ तो बोलो, क्या किया जाय, जल्दी करो और मैं चली। मैं तुम्हारी बात नहीं बर्दाश्त कर सकती।"

"जी हां, क्या कहने है आपकी नजाकत के। बुद्धू कही की!"

यह सुनना था कि मारिया का झगड़ालू और आक्रामक स्वभाव काफूर हो गया और गालियां-कोसनों का उसका सोता यकबयक सूख-सा गया। सारे घर में वह ऐसी बौखलाई हुई फिरी कि एक क्षण को जो रुकती। सारे काम उसने एक साथ करने शुरू कर दिए, अभी खाना पका रही है तो अभी सी रही है; एक मिनट इस बच्चे को खिलापिला रही है तो दूसरे ही मिनट दूसरे को; कभी चूल्हे के ऊपर के बच्चों को खिलाती है तो कभी उसके पीछे के बच्चों को! कभी पर्दे के पीछे जाकर बिस्तर बिछाती है तो कभी खिड़की में जाकर मुर्गियों को आवाज देती है; वहाँ से हटी तो फिर बच्चों के पास आ जाती है जो किसी कोने में पड़े खूब जोर-जोर से अपने राग अलाप रहे हैं। अंत में वह एरिफी के सामने आन खड़ी हुई और कमर पर दोनों हाथ रख कर उसने निम्नलिखित व्याख्यान दे डाला:

"पहले तो तुम जाओ उस सूबेदार के पास और उससे कहो कि मैं खुद ही बच्चे को रखे लेती हूँ। और इसके बाद हर महीने पेशगी दो रूबल मुझे लाकर दो। मैं उन्हें बुढ़िया किताएवा को दूँगी। और एक रूबल कमीज और कंबल के लिये। ....और हां, दूसरी चीजे तो है ही। और उसके बाद—बाहर निकल जाओ यहाँ से! तंग आ गई मैं तुमसे—मुर्दार कही के!"

एरिफी उठा, गहरी साँस ली और चुपचाप बाहर निकल गया।

शाम को बूढ़ी किताएवा मारिया से मिलने आई। उसकी बाईं

आंख कानी थी और चेहरा, रंग व आकार दोनों में मुर्झाई हुई मूली के समान दीखता था। उसकी ठोड़ी एक जरा-सी सफेद शाही दाढ़ी से सुशोभित थी। वह ख़रेंदार बारीक आवाज में बोलरही थी और हर क्षण या हर तीसरे शब्द पर, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में, किसी न किसी साधु-संत को तंग करती थी और या तो उनका हवाला अपनी सच्चाई की गवाही के लिए देती थी या फिर बिना किसी तुक के उनके नाम ले देती थी।

मारिया ने बड़ी रूक्षता से उसे स्थिति समझाई, जरूरी आदेश उसे दिये और इस चेतावनी के साथ अपनी बात पूरी की :

"देखो, अब जरा सावधान रहना ! इस हद तक भी तुम जा सकती हो पर इससे आगे हरगिज नहीं। अपनी मर्यादा देखलो।" उसने किताएवा को धमकाते हुए अपनी उँगली हिलाई।

बूढ़ी किताएवा ने छोटी-सी गेंद बनकर मारिया के सामने सिर झुकादिया। आत्म-ग्लानि की दल-दल में लुढ़कते हुये वह गुलामों की भाँति रूखेपन से मुस्कराई और करीब-करीब सरगोशी के अन्दाज में उसने कहा :

"मारिया तिमोफियेवना, प्यारी ! तुम तो मुझे जानती हो। किसी और से दगा कर लूंगी पर तुमसे कभी नहीं......" और तब उसने अपना सिर इस प्रकार हिलाया मानो यह प्रकट कर रही हो कि उसे कहना तो बहुत कुछ है मगर शक्ति नहीं कि कह दे।

"बिल्कुल ठीक कहा। मैं तुझे खूब अच्छी तरह जानती हूँ, पारसा, बुड्ढी दगाबाज ! हाँ, मैं तुझे खूब जानती हूँ।"

यह कुछ जरूरत से ज्यादा जोर के साथ कहा गया था जो कि एक बुढ़िया के लिये नहीं कहा जाना चाहिये था।

नन्हा पाल पहले की भाँति अब भी उसी गद्दे पर चुपचाप लेटा हुआ था। सिर्फ उसी वक्त कुछ अनेच्छा उसने जाहिर की जब बूढ़ी किताएवा ने बड़ी श्रद्धापूर्वक धीरे से कहा, "खुदा हम पर रहम

करे !" और उसे अपनी बाहों में उठा लिया। तब वह फिर चुप हो गया और अपने को भाग्य के हाथों सौंप कर तब तक चुप रहा जब तक कि बुढ़िया उसे बाहर गली में न ले आई। गली में आकर सूर्य की ओर देखकर उसने ऐसा मुँह बनाया कि मानो उसके टुकड़े ही तो कर डालेगा क्योंकि सूर्य की किरणें सीधे उसकी आंखों को देख रही थी, लेकिन उसके चिढ़ाने से कोई मक्सद हल न हो पाया। फिर उसने अपना सिर हिलाया पर उसका भी कोई खास असर न हुआ। सूर्य सीधा उस पर पड़ता रहा और उसके गालों की पतली चमड़ी को जलाने लगा और अब उसने दहाड़ना शुरू किया।

"अरे बदमाश कहीं के ! वहाँ घर में लेटा था बिल्कुल चुपचाप था जैसे मुँह में दूध लिये लेटा है और ज्योंही मैं तुझे बाहर लेकर आई कि चीखने लगा। चुप होजा और पड़ा रह ऐसे ही अब !"

बूढ़ी किताएवा उसे एक गोद से दूसरी गोद में झुलाती हुई चलती रही। हाल ही में बूढ़ी किताएवा को पांच नन्हें दुधमुहों को पालना पडता था जो मुस्तकिल तौर पर भूख से व्याकुल हो चीखते रहते थे और बुढ़िया को क्षण भर की भी शांति या विश्राम न मिलता था........या खुदा ! एक और ले लिया है मैंने, अब छः हो जायेंगे, उसने दिल में सोचा। ये लोग हैं तो निश्चित रूप से दर्दसरी पैदा करने वाले लेकिन तसल्ली इस बात की है कि काफ़ी खाने को न भी मिले तब भी आप भूख से मरते नहीं हैं।

सूर्य की तिरछी किरणें धुँधली, पुरानी और हरे रंग की खिड़की में से होकर कमरे में पड़ रही थीं। खिड़की की दरारें पोटीन से भर दी गई थीं और उसमें खिड़की के शीशे पर एक खूबसूरत डिज़ाइन बन गया था। ऐसा महसूस होता था मानो सूर्य की किरणें उन दो नीचे कमरों को नौसादर व चूने से भरी गंध से सिकुड़ गई थीं और मुर्झा गई थीं। कमरों की छतें धुएँ से काली होगई थीं, दीवार पर लगे कागज़ गंदे थे और फट गये थे और फर्श बड़े-बड़े दरारों से

सुसज्जित था और अपनी दुर्दशा पर कराह रहा था।

पहला कमरा जिसे बच्चों का कमरा कहा जाता था स्पार्टा नगर की-सी सादगी से सजा हुआ था जिसमें तीन लम्बी-चौड़ी बेंचें कचरे से लदी हुई थी, बस और कुछ नहीं था। कमरा इतना गंदा था कि जाहिर तौर पर मक्खियाँ भी उस सड़े गंदगी भरे वातावरण में रहने से डरती थीं और इसीलिये कुछ देर उन बच्चों के कमरे के बदबूदार वातावरण में चक्कर लगाकर वे जल्द ही हार जाती थीं और विरोध-स्वरूप झट से भिनभिनाते हुये दूसरे कमरे में चली जाती थीं या फिर एक खुले दरवाजे में से होकर उस बड़े हाल में चली जाती थीं जो कुछ हरे आइल क्लाथ जैसे कपड़े से ढँका हुआ था।

दूसरा कमरा एक विभाजन द्वारा बच्चों के कमरे से अलग कर दिया गया था और उसमें एक छोटा टेढ़ा-मेढ़ा दरवाज़ा काट कर बना दिया गया था। दरवाजे के ऐन सामने एक मेज़ रखी थी जिस पर एक बेरंगा समावार* रखा था जो एक ओर को झुका हुआ था। समावार बिल्कुल बेकार था और उस पर कई जगह गड्ढे पड़े हुए थे। वह सदैव सीटी मारता रहता था और पुराने रोगी की भाँति अक्सर कराहता रहता था। बूढ़ी किताएवा की गृहस्थी में जिस गंदगी का बोलबाला था उसमें ऐसे समावार की मौजूदगी कुछ अजब न थी।

उन दोनों कमरों में मालूम होता था कोई है ही नहीं। मक्खियों की निराशाजनक भिनभिनाहट, और समावार की असंतोष प्रकट करती हुई आवाज़ों के अतिरिक्त और कोई आवाज़ नहीं सुनाई देती थी। लेकिन निपट एकान्त का प्रभाव उस समय लुप्त हो जाता था जब कोई दरवाजे के पास अँधियारे कोने को देख लेता था। वहाँ बेंच पर कोई जीवित वस्तु हिलती रहती थी। वह किसी की टाँग थी जो हवा में उठती थी और फिर अर्ध वृत्ताकार की आकृति बन जाती थी। कोई

---

* रूसी केतली

भी श्रोता यदि गौर से सुनता तो कुछ बड़ा ही धीमा और बोझिल-सा ठुनकना सुन सकता था।

इस टाँग का और उस दूसरी का, भी जो मुड़ी हुई थी और हरी और मुलायम हड्डियों वाली थी मालिक एक बच्चा था जो कोई डेढ़ बरस का था। बूढ़ी किताएवा कभी-कभी जब उस पर क्रोधित हो जाती तो उसे 'गाजर' कहा करती थी। और जितने भी बच्चे उसके यहाँ पालने के लिये रखे गये थे उनमें से सभी को उसने इस क़िस्म के समुचित और मजेदार नाम दे रखे थे। उस मुलायम हड्डियों वाले बच्चे को 'गाजर' बड़ा ही उपयुक्त नाम दिया गया था। उसके चेहरे की भुर्रियाँ ऐसी थीं मानो बुढ़ापे से पड़ गई हों, बीमारी की वजह से वह बिल्कुल सूख-सा गया था और उसका शरीर विकृत भी हो गया था। अजीबो-गरीब उलझन के भाव जो उसके चेहरे पर अंकित थे ऐसा आभास दिलाते थे मानो वे उसके छोटे-से मुर्झाये हुये चेहरे पर जम गये हों, मानो वह यह जानने का प्रयत्न कर रहा हो कि आखिर वह कौन-सी चीज़ है जो मुझे इस दुनिया में इस विलक्षण और लँगड़ाती स्थिति में लाई होगी! मानो यह अनुमान लगा रहा हो कि किसने मेरे साथ यह निर्दय, क्रूर और व्यर्थ का मज़ाक किया होगा और क्यों किया होगा। हालाँकि ऐसा लग रहा था कि वह यह सब जानने की कोशिश कर रहा है लेकिन साथ ही यह भी स्पष्ट ही दीख रहा था कि वह यह निष्कर्ष भी निकाल चुका है कि ऐसी कोशिशें हैं वृथा ही और इस प्रकार प्रतिकूल परिणामों के कारण सदैव उदास व दुखी ही रहता था।

कई दिन तक वह वहीं कोने में पड़ा रहा। कभी इस टाँग को उठाकर, कभी दूसरी मुड़ी हुई टाँग को उठाकर वह बड़े गौर से काफ़ी देर तक उनकी ओर देखता रहता था। उसके गहरे नेत्रों में घूरने और एकाग्रचित्तता से देखने की शक्ति और बड़ा ही गम्भीर भाव था जो बहुधा रोगी बालकों की आँखों में दृष्टिगोचर होता है। वह अपनी

टाँगों का परीक्षण करता और वड़ी फोकी-फोकी आवाज़ में तुतलाहट से बोलता था। उसके पीले, रक्तहीन होंठ उसके दाँतहीन दाडों व मसूड़ों का तथा नन्ही पीली-सी जीभ का पता देते थे। उसके बाज़ू जिन्हें वह हिला न सकता था, एक कड़े में फँसे हुये थे और उसकी कलाइयाँ उसकी बगलों के सहारे रखी थीं। यद्यपि उसकी टांगें घुटनों से ऊपर-ऊपर तो खासी हालत में थीं लेकिन घुटनों से नीचे का भाग धनुष जैसा झुका हुआ था जो टखनों के पास से मुड़ा हुआ था। कभी-कभी तो वह अपनी टाँगों के परीक्षण व अध्ययन से ऊब जाता था। फिर असमंजस के उसी अपरिवर्तित भाव से वह अपनी दृष्टि छत पर टिकाता जहाँ खिड़की में से दाखिल होती हुई सूर्य की किरणों से पानी के टब में पड़ने वाला सूर्य का हिलता हुआ प्रतिबिम्ब देखता और फिर छत को घूरने लगता। लेकिन फिर प्रत्यक्ष रूप से जब वह यह समझ जाता कि सूर्य की किरणों को अपना निकटतम परिचित व मित्र बनाने से कुछ लाभ न होगा तो वह फिर अपनी गंभीर नज़रों को छत से हटा कर पैरों पर ले आता जो शायद उसके लिये सबसे ज्यादा रुचिकर थे। सूर्य की किरणों मे उसे इसलिये भी दिलचपस्पी नहीं थी क्योंकि वह महसूस करता था कि शीघ्र ही ये सब सांसारिक चीजें लुप्त हो जाएँगी—उसकी देखने की शक्ति, उसकी विचार-शक्ति, वह स्वयं निकट भविष्य में धरती के ऊपर से नीचे ज़मीन में पहुँच जायगा।

वह बूढी किताएवा के यहाँ अठारह महीने से रहता आया था लेकिन उसे उसने पैसे दो महीने के ही दिये थे। अब वह उस समय की बड़ी व्याकुलता से प्रतीक्षा कर रही थी जब वह "उसकी कोठरी खाली करेगा" और इसी प्रकार का मंगल भाषण वह उसके साथ किया करती थी।

एक बार वह उसकी मा की कोठरी में गई थी उसने उस पीलिया से पीड़ित झुकी हुई दर्जन को पलंग पर बराये नाम ज़िंदा लेटे हुये

देखा था।

"कहो, मन्नी कैसी हो ?" कहते हुये बूढ़ी किताएवा जहाँ मा निश्चल लेटी थी उसी के पास पलँग पर बैठ गई। "तुम में पैदा करने की तो ताक़त थी अब उसे खिलाने के लिये कौड़ी नही छोड़ी तुमने ? यह तो बुरी बात है। फिर मैंने कोई तुम्हारे पापों का बोझ ढोने का जिम्मेदारी थोड़े ही ले रखी है। मुझे पैसे दो वरना अपने बच्चे को वापस ले जाओ। मैं कोई ऐसी दानशील स्त्री नही हूँ।"

मा की मन्द, नीली आँखें खुलीं और खुली ही रह गईं, उनमें गहरे दुःख और भय के भाव चमक उठे।

"अम्मा !" उसने रुंधे स्वर में कहा। "मैं सब चुका दूँगी ! एक-एक कोपेक चुका दूँगी तुम्हारा। विश्वास रखो सारा हिसाब चुकता कर दूँगी। मैं अपने जिस्म से गोश्त काट कर उसे बेचूँगी और तुम्हारे पैसे अदा करूँगी। मै कोठा खोल के बैठ जाऊँगी·········ज़रा सब्र करो, अम्मा ! मुझ पर तरस खाओ, दया करो मुझ पर और उस ग़रीब पर·········आय, आय, आय·········दया करो !"

बूढी किताएवा ने उसकी सिसकियाँ और आहें सुनीं और देखा कि उसके पिचके हुये और मुर्झाये हुये गालों पर से आँसू ढुलक रहे हैं। उसने देखा कि उसकी सूखी छातियों में स्पन्दन हो रहा है।

"अरे पतिता ! बेशर्म कुलटा ! तुम जैसियों को तो खूब ज़ोर-ज़ोर से पीटना चाहिये। हां, और क्या !" उसने झिड़कते हुये कहा।

"ओह, अम्मा ! वह मुझसे प्यार करता था, मुझसे शादी करना चाहता था !·········"

"वह तो बेटी पुराना रोना है हजार बार सुन चुकी हूँ वह मैं।"

ऐसा प्रतीत हो रहा था कि बूढ़ी किताएवा ने न सिर्फ वह रोना रोते सुना था बल्कि खुद भी रोया था। उसने मुँह बनाया खाँसी, झुकी, कुछ क्षण सोचा और बीमार स्त्री का चुम्बन लेकर चली गई और जाते-जाते यह आज्ञा दे गई कि वह शीघ्र ही अच्छी हो जाय।

लेकिन स्त्री ने आज्ञोलंघन किया और चल बसी। 'गाजर' बूढ़ी किताएवा के अनाथालय में ही रहा। वह जल्द ही उससे ऊब गई। बाद में उसने उसे एक कोने में डाल दिया और यह आशा की कि कुदरत को जो मंजूर है वह अपने आप हो जायगा। उसने अपने आपको इसी विचार से संतुष्ट किया कि अब वह किसी भी प्रकार अधिक नहीं जी सकेगा और इस प्रकार वह अपने अंतःकरण में उठते हुये गुबार को शान्त करती रही।

गाजर के अतिरिक्त चार और भी वहाँ थे। तीन का पैसा तो वक्त पर मिल जाता था और चौथा भीख माँगने जाता था और जो कुछ लाता था उससे कहीं अधिक उसे अपने रहने-खाने के लिये देना पड़ता था। वह मोटा, गोल और गुलाबी गालों वाला छः वर्ष का छोकरा था जिसका नाम था गुर्का बाल। बड़ा ही दिलेर लड़का था वह और बूढ़ी किताएवा की उस पर विशेष कृपा दृष्टि-थी।

"तू आगे चल कर परले दर्जे का बदमाश निकलेगा गुर्का!" जब वह शाम की भीख माँग कर लौटता तो बूढ़ी उसकी इसी तरह प्रशंसा किया करती थी। उसी समय वह अपने चमड़े के कश्कोल में से रोटी के टुकड़े, समावार के ढक्कन, दरवाजे से हत्थे, बाट, खिलौने, बत्तियाँ, छोटी कढ़ाइयाँ और इसी तरह का कूड़ा कचरा निकाल कर रख देता था।

"ओह, कैसा बदमाश बन जाऊँगा मै! सब कुछ चुरा भागूगा मैं, घोड़े तक भी नहीं छोड़ूँगा मैं!"

"और जो पुलिस वालों ने पकड़ के तुझे भेज दिया सायबेरिया तो?" बूढ़ी किताएवा ने स्नेह भरे स्वर में पूछा।

"मैं भाग निकलूँगा!" गुर्का ने तुरन्त उत्तर दिया।

और तब बूढ़ी किताएवा उसे सात कोपेक दे देती और बाहर खेलने भेज देती।

बाकी तीन लड़के भी एक दूसरे से बहुत भिन्न नहीं थे वे अभी

तक कोई वैयक्तिक लक्षण-विशेष अपनाने नहीं पाये थे। जरा ज्यादा देर तक भूखे रहे कि तीनों ने चीखना शुरू कर दिया और जब उन्हें ज्यादा खिला दिया जाता था तब भी रोते-पीटते थे। जब बूढी किताएवा उन्हें पिलाना भूल जाती तब भी वे अपना राग अलापते थे और जब जबरदस्ती पिला देती थी तब भी वे भिनभिनाते ही रहते थे। और भी बहुत सी बातें थीं जिनकी वजह से वे रोने लगते थे, लेकिन ये बातें व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से बूढी स्त्री को महत्वपूर्ण लगी ही नहीं क्योंकि वह इतनी तीव्रता और जोर के साथ उन बच्चों पर चीखती थी कि तमाम बच्चों की आवाजों का कोरस उसी में डूब जाता था। साधारणतया वे बेचैन बच्चों का गिरोह था जो प्रति दिन भोजन, पानी, सूखे पलुत्रे हवा और दूसरी चीजें माँगते थे जिनके लिये उन्हें शायद ही कोई अधिकार था क्योंकि वे अधिक जिये नहीं थे अभी मात्र जीना प्रारम्भ ही किया था उन्होंने। चूँकि बूढ़ी किताएवा का ऐसा स्वार्थवादी सिद्धान्त था इसलिए वह उन्हें लाड़-प्यार नहीं करती थी और प्रकट रूप में उन्हें आत्म-विश्वासी बनाने की वह कामना करती थी, चाहती थी कि ये बालक स्वयं इस योग्य हो जायँ कि अपने भले के लिए आवश्यक प्रत्येक वस्तु वे स्वयं ही प्राप्त कर सकें।

बूढ़ी किताएवा की दिनचर्या इस प्रकार शुरू होती थी :

गुर्का बाल पाँच बच्चों मे सवेरे सबसे पहले उठ जाता था। वह बूढ़ी किताएवा के कमरे में जो बाकी चार बच्चों के कमरों से अलग था, सोता था। आँख खुलने के शीघ्र बाद ही वह झट अपने संदूकों के बनाये बिस्तर से उछल पड़ता, तकिये के नीचे कुछ टटोलता और एक लंबा मुर्गे का पर खींच लेता। वह दबे पाँव और बड़ी सावधानी के साथ बच्चों के कमरे में दाखिल होता, बगैर कोई शोर किये दरवाजा खोल लेता और दबे पांव फर्श पर से गुजर जाता। गर्मियों में फर्श के सूखे हुये तख्ते चर्र-चूँ की आवाजें निकालते थे और सर्दियों में एक तख्ता दूसरे पर चढ़ जाया करता था। इस प्रकार गुर्का चुपके-

चुपके किसी भी बच्चे के पास जा पहुँचता जो सो रहा हो। वह उस पर झुकता और उसकी नाक में पर डालकर गुदगुदी करने लगता। बच्चा एक करवट से दूसरी बदल लेता, सिर इधर-उधर हिलाता, कुछ हास्यास्पद ढंग से गुर्राता और हाथ से अपनी नाक मलता। उस प्रति-क्रिया पर गुर्का अपनी हँसी न रोक पाता और लाल गुबारे की भांति गाल फुला कर फिर वही हरकत जारी रखता। आखिरकार बच्चा उठ बैठता और रोने-चीखने लगता। शीघ्र ही दूसरा उठ जाता और फिर तीसरा भी यही करता और पहले दोनों की सहानुभूति में चीखता जबकि गुर्का अपने पूरे जोर के साथ पुकारता "अम्मा", एक से दूसरे बच्चे की तरफ भागता, साँप की नाईं फुंकारता, मुँह बनाता, उनके नथौड़ों में फूँकता और बहुधा इसी प्रकार दिल भर कर वह अपना मनोविनोद करता था।

अब तो एक बाक़ायदा संगीत मंडली जम जाती जो ताल और लय तथा बदआवाज़ी मे बड़ी ही विलक्षण लगती। बच्चे खाँसते, छीकते चिल्लाते, रोते-रोते बेदम हो जाते, फिर रोने लगते, मानो उन्हें कढ़ाई में भूना जा रहा हो।

'गाजर' को कभी कोई चिंता नहीं हुई। गुर्का को उसकी घूरने वाली और लगातार टाँगों का परीक्षण करने वाली आँखों से बड़ा डर लगता था। एक बार गुर्का 'गाजर' को भी अपने शिकार में शामिल करने की गरज से उसकी ओर जा रहा था कि गुर्का ने देखा वे आंखें उसी पर गड़ी हुई हैं। वे बच्चे की आँखें नहीं दीखती थीं, ऐसा लगता था किसी सिपाही की आँखें हों। और कई कारण थे जिनके डर से गुर्का सिपाही से कुछ घबराता-सा था। वह बड़े बाअदब तरीके से एक से मिलकर अपना रास्ता लेता। गुर्का एक बार जो 'गाजर' के पास से पीछे हटा तो फिर कभी उसने इस मुलायम हड्डियों वाले बच्चे को नहीं छेड़ा।

"ओह—हो—हो! तो करदिया उन्होंने भौंकना शुरू!......

कर दिया माँगना शुरू कमबख्तों ने !······चीख रहे हैं !······चीखने दो मरों को !" बूढ़ी किताएवा उठ बैठती और बहुत से अनकहे विशेषण याद करती और तरह-तरह से उन्हें दोहरा-दोहरा कर इस्तेमाल करती।

गुर्का अपनी शक्ल गंभीर बना लेता और दूसरे कमरे में चला जाता। गुब्बारे की भाँति अपने को फुलाता और समावार को घसीट कर हाल में ले आता जहाँ वह उसे यों ही खड़खड़ाने लगता। वैसे आमतौर पर इस खुशबाश लड़के को शोरगुल करने में बड़ा मजा आता था और जितना जबरदस्त शोर होता उतना ही खुश वह होता था।

बूढ़ी किताएवा बड़ी सावधानी से बच्चों के नीचे से गीले पोतड़े निकालती।

"हां, हां चिंघाड़े जाओ, शैतानो ! लो जम्हाइयाँ, मेंढ़को !"

घर पर बूढ़ी किताएवा किसी पवित्र पादरी या शहीद का नाम नहीं लेती थी क्योंकि वह सोचती थी कि वह स्वयं भी तो एक शहीद ही है।

बच्चे रोते-पीटते, गुर्का गरजता और कूदता और बूढ़ी किताएवा उन पर कोसनों की बारिश करती। बच्चों के कोलाहल से पड़ोसी उठ बैठते और यह निश्चित निष्कर्ष निकालते कि अब सवेरे के छः बज गये हैं।

यह शोर-गुल, हंगामा और चीख-पुकार निरंतर दो घण्टे चलती रहती और जब बुढ़िया उनके पोतड़े बदल देती, उन्हें नहला देती और खिला-पिला देती तब कहीं जाकर वह शांत होते। तब वह चाय पीने बैठती। गुर्का अब तक अपनी चाय पी चुका होता था। वह अपनी झोली निकालता उसे झट टोपी की शक्ल देता, सिर पर ओढ़ लेता और भीख माँगने दौड़ जाता।

चाय के बाद बुढिया बच्चों को खींच कर बाहर आँगन में ले आती जहाँ उन्हें वह बुढ़िया, सूखी रेत के संदूकों पर बिठा देती। बच्चे

कोई तीन घण्टे लगातार धूप में सिकते और दोपहर के खाने तक वहीं बैठे रहते। इसी दौरान बूढ़ी किताएवा पोतड़े धोती, सीना-पिरोना करती, रफू करती, चीखती-चिल्लाती, बच्चों को खाना खिलाती और जैसे कि वह करती थी "हजार काम कहती जिससे उसका बदन चूर-चूर हो जाता।"

कभी-कभी दो-तीन सहेलियां आ निकलतीं। और वे सहेलियां थीं विविध कद की स्त्रियाँ जो दो पेशे अपनाये हुये थीं एक तो आपको जेल भिजवाने का प्रबंध कर सकती थी और दूसरे के सम्पर्क से आप आज नही तो कल अस्पताल पहुँच जाते।

इन सहेलियों के साथ दो या तीन बोतलें जरूर होती थीं। कुछ ही देर में बाहर गलियों की हवा और पड़ोसियों के कानों पर किसी कटु-गीत का जैसे "विश्वासघाती और बदमाशो" से सम्बन्धित अथवा इसी प्रकार के किसी और गीत का आक्रमण होता। कुछ देर बाद कुछ चुनिन्दा कसमें सुनाई देतीं, फिर "मदद मदद !" की पुकार सुनाई पड़ती और अंत में दो में से एक चीज होती, या तो सहेलियां बूढ़ी किताएवा के बाल खीच कर उसे जमीन पर गिरा देतीं या बूढ़ी किताएवा अपनी एक और सहेली से मिलकर दूसरों को पीटती थी। लेकिन परिणाम सदैव एक-सा ही रहता था—पहले तो एक गहरी नींद और बाद में दोस्ताना मिलाप।

ऐसे मौकों पर बच्चे अकेले ही छोड़ दिये जाते थे। वे गला फाड़-फाड़ कर चिल्लाते और बड़ी आसानी से या तो भूखों मर जाते या रोते-रोते उनकी आंतें निकल आतीं यदि कोई उस समय उनके बचाव के लिये न पहुंचता। जब युद्धोन्मत्त, लड़ती हुई सहेलियां लड़ते-लड़ते थक जाते तो आंगन के एक अंधियारे कोने में एक मढ़इया का दरवाजा खुलता और एक थल-थल शरीर वाली स्थूलकाय स्त्री अपना चेचक भरा चेहरा लिये बाहर निकलती।

वह बाहर निकलती, जम्हाई लेती और अपने हाथ से मुंह ढक

लेती और फिर अपनी चमकदार, भावहीन नजरों से आकाश की ओर देखती। रेत के एक सन्दूक के पास जाकर वह किसी बच्चे को वहां से हटाती और खुद उस संदूक पर बैठ जाती। उसके बाद धीरे-धीरे वह अपनी पोशाक के कालर के बटन खोलती और बच्चे का सिर अपने सीने में घुसेड़ लेती और भूखे बच्चे के दूध पीने की मध्यम-सी आवाज सुनाई देने लगती।

उस स्थूलकाय स्त्री के चेहरे पर कोई ऐसा भाव न आता जिससे कि किसी भी देखने वाले को यह आभास होता कि वह जो कुछ कर रही है वह उसके दयालु स्वभाव-स्वरूप कर रही है। उसका चेहरा चेचक के दागों से बुरी तरह छिद्रित था और इसीलिये बड़ा भावहीन और मद था। बस यही सब वहाँ देखा जा सकता था।

एक को खिलाने के बाद वह दूसरे के पास जाती और फिर तीसरे के पास और अंत में वह उस कमरे में चली जाती जहां 'गाजर' लेटा हुआ होता। पहले वह उसे अपनी गोद में ले लेती और खिड़की तक ले जाती। बच्चा आँखें झपकाता और उस पर पड़ती हुई धूप से बचने के लिये मुँह फेर लेता। इसके बाद स्थूलकाय स्त्री कमरे के बाहर निकल आती और आँगन में पहुँच कर एक रेत के संदूक पर जा बैठती और बच्चे के मुँह में अपना दूध दे देती। वह उसका पीला सिर और गाल थपथपाती रहती है और बच्चा बड़े आलस्य से दूध पीता रहता। जब वह दूध पी चुकता तो वह उसे संदूक में बिठा देती और उसके जीर्ण मुलायम नन्हें बदन को रेत से ढकने लगती यहां तक कि सिर्फ उसका सिर दिखाई देता बाकी सब कुछ रेत में छिप जाता।

जाहिर है इस व्यवहार से 'गाजर' बहुत खुश होता क्योंकि इससे उसकी आंखें चमकने लगतीं और उसके चेहरे की निश्चल भाव-भंगिमा अदृश्य हो जाती। उसे देख कर मोटी औरत मुस्कराने लगती। इस मुस्कान से उसके चेहरे का सौन्दर्य तो क्या बढ़ता हाँ, उससे वह कहीं अधिक चौड़ा अवश्य लगने लगता। वह लगातार घण्टों उससे बड़-बड़

करती रहती और जब वह रोने लगता तब कहीं उसे महसूस होता कि बच्चा रेत और धूप से जल रहा है । वह उसे गोद में ले लेती और शांतिपूर्वक झुलाने लगती। वह कुछ प्रसन्न नजर आता क्योंकि नींद में भी उस चेहरे पर मुस्कान खेलती होती । वह उसे चूमती और कमरे में ले जाती। फिर वह आँगन में चली आती और रेत पर बैठे बच्चों को देखती—उसका चेहरा वही भावहीन और ठोस चेहरा दिखाई देता। कभी-कभी जब वे सोये नहीं होते थे तो वह उनके साथ खेलती थी, उन्हें दोबारा खाना खिलाती थी और झोंपड़ी के उस छोटे दरवाजे में से लुप्त हो जाती थी जो आँगन में एक दूरस्थ कोने में स्थित था। वहाँ से वह अपने अधखुले दरवाजे में से देखती रहती थी। और अगर रात हो जाती और किताएवा अब तक अपनी अचेत अवस्था में होती तब भी स्थूलकाय स्त्री वहाँ से आती और बच्चों को सुला देती थी।

कहीं ऐसा न समझिये कि मैं यहाँ किसी कृपालु अप्सरा का चित्रण कर रहा हूँ। नहीं, साहब हरगिज नहीं! वह तो बस एक औरत थी जिसके चेहरे पर चेचक के दाग थे और जिसकी छातियाँ बड़ी विशाल और भरी-पूरी थीं। और वह गूँगी थी। वह एक शराबी लुहार की पत्नी थी। एक बार उसके पति ने इस बेदर्दी और ऊँटपटाँग तरीके से उसके सिर पर कुछ दे मारा था कि उसने क्रोध में अपनी जीभ के दो टुकड़े कर लिये थे। पहले तो वह इस घटना से दुःखी हुआ पर बाद में वह उसे मूक राक्षसी कहने लगा। और यही बस था।

बूढ़ी किताएवा ने वहाँ गर्मियों में बच्चों के रहने-सहने का यही अंदाज था। सर्दियों में वे कुछ और ही ढंग से रहते थे—रेत के संदूक आँगन में न होकर स्टोव पर रखे जाते थे। बूढ़ी किताएवा ने रेत को बच्चों के शारीरिक विकास के लिये बहुत महत्त्वपूर्ण वस्तु समझा था।

नन्हे पाल के और उसके साथियों के पालन-पोषण में कोई विशेष अंतर न था सिवाय इसके कि कभी-कभी एक बड़ी-सी काली दाढ़ी उसके रेत के संदूक पर झुकती और काली, गहरी आंखें बड़ी देर तक

गौर से उसकी ओर देखती रहतीं।

पहले तो पाल इस प्रेत से भयभीत हो जाता था लेकिन धीरे धीरे वह उसका आदी हो गया। यहां तक कि वह अपने नन्हें-नन्हें हाथ उसकी छितराने वाली दाढ़ी में भोंक देता जिससे प्रेत को गुदगुदी होने लगती। न वह अब उन मंद, अस्पष्ट आवाजों से ही डरता था जो उन बड़े-बड़े चमकदार दाँतों में से आती थीं जो उसकी दाढ़ी के बीच में दिखाई देते थे। कभी-कभी दो शक्तिशाली हाथ उसे रेत से अलग हटा लेते थे और उसे हवा में झुला देते थे। नन्हा पाल अपना चेहरा ऐंठ लेता था और डर के मारे चुप हो जाता था। जब झुलाना बंद होता तो वह बड़े जोर से चीख मारता। और चीख सुनते ही वह विशाल काय काला व्यक्ति जो उसके सामने खड़ा होता खुद भी चिल्ला पड़ता :

"ऐ औरत ! सुनती नही हो क्या ?"

"सुन रही हूँ भाई, सुन रही हूँ !" किताएवा गुस्से में आकर जवाब देती और कहीं से रेंगती हुई निकल आती। "श, शा, शा नहीं, नहीं मुन्ने कुछ नहीं है बेटा, यह तो अपना ही आदमी है मोती! ओह हो हो हो, रोओ नहीं। बस चुप हो जाओ, शाबाश !"

"ये इतने जोर-जोर से क्यों चिल्ला रहे हैं ?" प्रेत की धीमी आवाज आँगन में गूंज जाती।

"चीख रहे है, बुढ़्ढे बाबा, चीख रहे हैं। वे सब के सब ही चीखते हैं !" लड़खड़ाती जोर की व्यंग्यपूर्ण आवाज़ फिर सब ओर गूँज उठती।

"तुम इन्हें साफ़ नहीं रखतीं—वे सब गंदे हैं ?"

"हाँ, हाँ भई सब गंदे हैं। बहुत गंदे हैं !"

प्रेत की धीमी, असमंजस पूर्ण आवाज रुँध-सी जाती और बुढ़िया की चिल्लपों वाली आवाज खाँस उठती।

"क्यों ये चीजें बेहतर नही हो सकती ?" धीमी आवाज वाले ने झिड़कते हुए पूछा।

"नहीं, हो क्यों नहीं सकतीं, हो सकती हैं ! बहुत बेहतर हो सकती हैं, कहीं अधिक अच्छी हो सकती हैं ।" चीखने वाली बुढ़िया ने मजाक उड़ाते हुए कहा ।

"तो फिर ऐसा करती क्यों नहीं हो तुम ?" धीमी आवाज वाले बूढ़े ने धमकाते हुए कहा ।

"अरे मेरे बल्लू ! मै तो अब बूढ़ी हो चूकी हूँ, असहाय हूँ और गरीब हूँ। क्या करूँ यह गरीबी कुछ करने ही नहीं देती । बस यही बात है, और कुछ नही ।" चीखने वाली बुढ़िया ने आजिजी से कहा ।

कुछ क्षण दोनों मौन रहे ।

"श........श ....श.......सो जा मेरे लाल। सो........जा ! सो........जा.......ना," हवा मे हल्की-सी आवाज गूंजी ।

"अच्छा भई चल दिये, फिर आयेंगे ! जरा सावधानी बरतती रहो !" धीमी आवाज वाले ने अपना कहना खतम किया ।

"हाँ, हाँ भई एहतियात बरतूँगी," चीखने वाली बुढ़िया ने बड़ी नरमी से जवाब दिया ।

और उसके बाद लौटते हुये कदमों की भारी आवाज सुनाई पड़ी ।

३

चार साल बाद बालक पाल एरिफी गिबली की झोंपड़ी में आकर रहने लगा। वह छोटी-छोटी टाँगों वाला बड़े सिर का लड़का था, जिसकी गहरी आँखें थीं जो उसके चेहरे में धँसी हुई थी। चेहरा चेचक के कारण विकृत हो गया था।

पाल बातूनी बच्चा नहीं था और इसीलिये वह सदैव किसी ऐसी चीज की ओर देखता रहता था जो केवल उसे दिखाई देती थी। यही कारण था कि उसके वहाँ आने से उस झोंपड़ी के निवासी सिपाही की एकांत जिंदगी में कोई बाधा नहीं पड़ी। इन चार वर्षों में एरिफी गिबली के सिर के बाल और दाढ़ी कुछ रुपहली सफेद रंग के हो गये थे जो भाँज से लगते थे। अब वह पहले से कहीं अधिक शांत और गम्भीर हो गया था और पुण्य ऋषियों-मुनियों के जीवन से संबन्धित पुस्तकें पढ़ने में उसकी रुचि अधिक बढ गई थी।

पाल के जीवन के दिन बड़ी खामोशी और समानता के साथ गुजरते रहे। सुबह के समय पक्षियों की चहचहाहट से, जो सूर्योदय होते ही उसकी पहली किरणों से वार्तालाप शुरू कर देते थे, उसकी आँख खुलती थी। पाल अपनी आँखें खोलता और स्टोव के पीछे बिछे अपने बिस्तर पर से उन्हें पिंजरे में कूदते-फाँदते बड़ी देर तक निर्निमेष देखता रहता। वे पक्षी एक स्थान से दूसरे स्थान पर कूदते, पानी में कूदकर छींटे उड़ाते, बीज कुतरते और अपने-अपने ढंग से चहचहाते रहते। वे गीत तो बड़ी गर्मजोशी से और सशक्तता से गाते थे पर उसमें सुरीलेपन और सुन्दरता का नितान्त अभाव था। हरी चिड़ियों

का मधुर गान, सुनहरी चिड़ियों की बोझिल सी-सी और बड़ी-बड़ी चिड़ियों की हास्यास्पद, कर्कश चीखें, कोलाहल के, जो कि उस छोटे धुँओं से भरे कमरे में हो रहा था, लहराते हुये विचित्र प्रवाह में विलीन हो जातीं थी।

एक खामोश अपंगु चिड़िया भी थी। खिड़की में लटके हुये बड़े पिंजरे में वह अकेली ही थी। वह एक पट्टी पर अपने पाँव जमा देती और उस पर कलाबाजियाँ खाने लगती और निरन्तर अपना सिर हिलाती-डुलाती रहती। अचानक वह पतली-सी लम्बी सीटी बजाती जिससे बाकी सारे पक्षी गड़बड़ा जाते और एक दम चुप हो जाते। वे अपना प्रतिकूल राग रोक देते और इस प्रकार इधर-उधर देखने लगते मानो उस अनोखी सीटी की ध्वनि क्यों और कहाँ से आई है इसे समझने की कोशिश कर रहे हों। इसके बाद ही मैना की पड़ोसिन बड़ी चिड़िया एक सबल सेनापति की भाँति अपने सीने पर लाल पर लगाये हुये सहसा आग-बबूला हो जाती और अपने आपको फुला लेती। वह चंचल हो कुलबुलाती, मैना की ओर को अपना सिर बढ़ाती, पक्षी जाति के स्वभाव के बिल्कुल प्रतिकूल सर-सर और सी-सी करती, अपनी चोंच खोलती और अपनी बड़ी सी जीभ बाहर निकाल लेती। लेकिन मैना उसकी ओर बिल्कुल ध्यान न देते हुये झूमती रहती और फलसफियाना अंदाज में अपना सिर हिलाती-डुलाती रहती। उसके स्याह चेहरे में केवल उसी समय कुछ जान पड़ती जब कोई झींगर उसके पिंजरे में रेंग आता लेकिन यह हुलास भी कुछ क्षण ही रहता था। मैना के सारे बर्ताव में और खासकर उसकी सी-सी में जिसका अन्य पक्षियों पर गंभीर प्रभाव पड़ता था कुछ बहुत ही गहराई और संशयात्मकता थी। ऐसा आभास होता था मानो वे शब्द किसी चतुर वयोवृद्ध व्यक्ति के है जो यौवन के जोशीले और आशावादिता से भरे-पूरे भाषणों में कहे गये थे। कभी-कभी मैना पिंजरे में सहसा कूदने-फाँदने लगती और पर फड़फड़ाने लगती। वह अपनी चोंच खोलती,

अपने पर नोचती और कुछ ऐसा महत्त्वपूर्ण और दृढ़ रुख इख्तयार करती मानो अभी सीटी बजाने वाली है—लेकिन वह सीटी न बजाती। वह फिर अपने उसी दार्शनिक मौन में जा बैठती मानो दर्शा रही हो कि अभी उसके काम का समय नहीं आया है, या कहीं ऐसा न हो कि उसे यह विश्वास हो गया हो कि वह कुछ ही क्यों न करे जगत-व्यवहार को नहीं बदला जा सकता।

पाल को भी अन्य पक्षियों की निस्बत मैना ही अधिक प्रिय थी क्योंकि वह शक्ल-सूरत में चाचा एरिफी से मिलती-जुलती थी। चाचा एरिफी को भी मैना पसन्द थी और सबसे पहले उसी का पिंजरा साफ किया जाता था और उसमें ताजे बीज और पानी रखा जाता था।

सवेरे जब तक एरिफी न आ जाता पाल सोया ही रहता था। पता नहीं क्यों, चाचा एरिफी को अपनी झोंपड़ी अच्छी नहीं लगती थी। दिन हो या रात ज्यादातर वह बाहर ही रहते थे। चाचा एरिफी बड़े आहिस्ता से और सावधानी से किवाड़ खोलते, अपना स्याह सिर कमरे में घुसेड़ते और पूछते :

"उठ बैठे तुम ?"

"हाँ, उठ बैठा !" पाल जवाब देता।

तब चाचा एरिफी चले जाते और समावार चूल्हे पर चढ़ा देते। समावार बहुत पुराना था जिस पर टीन के अनेकों भद्दे और असुन्दर पैबन्द लगे हुये थे। हत्थे की जगह घोड़े की नाल लगी हुई थी जो तार से बाँध दी गई थी। समावार चढ़ा देने के बाद एरिफी पिंजरे साफ करता और तब तक फर्श पर झाड़ू लगाता रहता जब तक कि समावार की सीटी की पतली आवाज उसे न सुनाई पड़ती। फिर बजाहिर नम्रता जताते हुये वह अपनी मोटी और धीमी आवाज में पाल को चीखकर पुकारता :

"चलो उठो और हाथ-मुँह धो लो। और भगवान का नाम लो !"

पाल उठता, हाथ-मुँह धोता और भगवान का स्मरण करता। वह ये तमाम काम बड़ी खामोशी और आहिस्तगी से करता। उसके चेहरे पर गांभीर्य और स्थिरता होती जो बहुत कुछ उस बड़े लड़के के समान होती जो अपने काम की जरूरत और अहमियत से पूरी तरह परिचित हो। उसकी यह आकृति, उसके बिखरे बालों और गम्भीर चमकदार आँखों सहित ऐसी प्रतीत होती मानो कोई छोटी छछूँदर हो जो आने वाले दिन का काम करने का संकल्प कर चुकी हो। उसके बाद एरिफी की निगरानी में नहा-धोकर और बालों में कंघा करके वह कृत्रिमता से दबाई हुई ध्वनि में अपनी सुबह की प्रार्थना पढ़ता और उस हास्यजनक व भद्द समावार के सामने मेज पर बैठ जाता। अब तक वह अपने वहशी आकर्षण का काफी भाग कभी का खो चुकता और उसके दृढ़ महत्व की गंध कुछ हास्यस्पद बन जाती।

खामोशी के साथ वे चाय पीते थे और उसी खामोशी के साथ वे दिन का अधिकांश भाग व्यतीत करते थे। चाय पी चुकने के बाद एरिफी खाना बनाता। यानी सर्दियों में वह स्टोव जलाता, पतीली में पानी उबालता, उसमें तरकारी डालता और ऊपर से थोड़ा गोश्त डाल देता था। अपने नंगे हाथों से पकड़कर वह पतीली को आग पर रख देता। गर्मियों में अपनी झोंपड़ी के पीछे आँगन में बैठकर थोड़ी-सी आग जलाता और उसमें आलू सेंक लिया करता था। पकाने की क्रिया-विधि स्त्रियों से पूछने की तिरस्कारपूर्ण भावना का कहीं उसे शिकार न होना पड़े इस भय से वह सीधा-सादा खाना तैयार करता था। अपना स्वास्थ्य बिगाड़ने को वह तैयार था पर छुरी-काँटे, बेलन, मथानी और ऐसी ही दूसरी चीजें जो स्त्रियाँ इस्तेमाल करती हैं वह कभी इस्तेमाल न करता था हालाँकि ये सब चीजें उसके पास थीं जरूर।

पाल छोटा चारखानेदार पतलून और चमकीली लाल कमीज पहने बड़ी अकड़ व अदा के साथ एरिफी के साथ-साथ चलता रहा

और हर वह चीज जो उसे दीख पड़ी बड़ी गौर से देखता गया। चाचा एरिफी से सवाल करने की तो उसे बहुत कम नौबत आती। एरिफी के दो टूक, रूखे जवाबों को सुनकर पाल को बातचीत करने की इच्छा ही न होती। जब एरिफी झोंपड़ी में जा घुसता तो वह कुछ देर तक खड़ा हो उसे देखता रहता फिर वह बाहर गली में निकल जाता। उसे कड़ी आज्ञा था कि कहीं दूर न जाय।

झोंपड़ी कस्बे के एक छोर पर स्थित थी। उसकी खिड़कियों में से मैदान दिखाई देता था। जिसमें से फौलाद-सी सफेद नदी बहती थी। उससे कुछ दूर एक और मैदान था जो गर्मियों में तो हरा-भरा और आकर्षक होता था पर सर्दियों में रूखा और अकेला पड़ा रहता था। उससे भी दूर जायें तो जंगल की विशाल दीवारे क्षितिज को सँभाले हुए दीख पड़ती थीं। दिन के समय वह अचल, अँधियारा और सुन-सान रहता था। लेकिन शाम को जब उसके पीछे सूर्य अस्त होता था तो वह बैंजनी और सुनहरी किरणों से सजा हुआ होता था।

पाल चलता-चलता नदी पर पहुंच जाता, बेद वृक्षों से घिरे हुये वायुमंडल में वह चट्टान पर जा बैठता और पानी में तिनके फेंकता ताकि उन्हें बहते हुए देख सके। सूर्य की किरणें पानी पर अठखेलियाँ कर रही थीं और वायु ने अपनी नृत्य करती हुई कल-कल ध्वनि से उसे ढँक लिया था। लहरों की तट के तारों को छू-छूकर छेड़ी हुई लोरियाँ सुन-सुनकर वह अक्सर सो जाया करता था।

यदि एरिफी उस समय घर पर ही होता तो वह आकर उसे ले जाता था। वे साथ-साथ दोपहर का खाना खाते थे और पाल फिर शाम तक के लिये नदी की ओर चला जाता था। वह वहाँ अकेला ही खेलता रहता था या फिर तुलका से खेलता था। तुलका एक ऐंची आँख वाली, भिखमँगी और चोर लड़की थी जो आठ साल की थी। वह गंदी भी थी और शोर भी खूब मचाती थी। एरिफी उसे बिल्कुल पसन्द न करता था। जब कभी वह झोंपड़ी पर आ जाती तो वह उसे

वहाँ से निकाल बाहर करता था।

शाम होते समय पाल बैठा सूर्य को अस्त होते हुये जीवित व सुन्दर वन को अंधकार से परास्त होते हुये देखा करता और खुद भी संध्या के बढ़ते हुये अधकार में घिर जाता था। उसके बाद वह घर लौटता और जाकर सो रहता। अगर एरिफी घर में हुआ तो वह पहले प्रार्थना आदि कर लेता और अगर वह बाहर हुआ तो न प्रार्थना होती न कपड़े उतारे जाते बस जाते ही बिस्तर में जा लेटता।

और इस प्रकार दिन पर दिन बीतते गये। एक-एक दिन बोझिल, खामोश और मंद होता। और जैसा कि सर्वदा होता आया है वे एक जंजीर बना लेते जिनमें रोज कड़ियाँ बढ़ती जाती, हफ्ते, महीने और साल बनते जाते और······पाल बड़ा होता गया और उसकी जिंदगी पेचीदा होती गई। वह विस्मय में डूबा सोचने लगा यह नदी बहती हुई कहाँ जाती है; इस जंगल के पीछे क्या चीज छिपी हुई है; ये बड़े-बड़े बादल आखिर क्यों आकाश में तैरते रहते है; यह पत्थर जब ऊपर फेंका जाता है तो अपने आप ही नीचे जमीन पर क्यों आ गिरता है। उसे आश्चर्य होने लगता कि गाँव में जहाँ छतें इतनी गुंजान हैं क्या होता रहता है और उस गाँव के परे कौन क्या करता रहता है। संसार में जहाँ दिन भर इतना कोलाहल मचा रहता है और रात में इस कदर शाँति व निस्तब्धता छाई रहती है आखिर क्या हो रहा है। लेकिन ये प्रश्न उसने एरिफी से कभी न पूछे। शायद उसने सोचा हो कि जो शख्स इतना मौन व खामोश रहता है इन तमाम बातों के बारे में क्या जानता होगा। एरिफी की खामोशी और उसका उदासीन चेहरा लड़के को प्रायः उलझन में डाल देता था।

जब मिखाइलो उससे मिलने कभी-कभी आता तो पाल किसी कौने में बैठकर उससे जी-भर के बातें करता। मिखाइलो भी खूब बातें किया करता था और हमेशा एरिफी से आते ही सवाल करता :

"कहो दरवेश? जिन्दा हो अब तक? शादी-ब्याह का कोई

इरादा नहीं ?" और फिर जब वह देखता कि एरिफी उस ओर से बिल्कुल उदासीन बैठा है तो सहसा जोर का एक ठहका मारता।

लेकिन इस उदासीनता से मिखाइलो तनिक भी निरुत्साह न होता। वह अपना क्लीन शेवन चेहरा रूमाल से पोंछता और बड़े आराम से एक बेंच पर बैठकर "फिर वही पुराना राग अलापने लगता" जिसे उसका उदासीन मित्र (एरिफी) नापसन्द करता था और क्रोधित हो उठता था।

"आज तो भाई साहब, मैंने भी डँट के खाना खाया है। मारिया ने जर्मन गेहूँ का काशा पकाया था। ओह, क्या लजीज काशा था वह! ......और वह भी दूध और किशमिश के साथ। ऐंह? बड़ा मजेदार था वह! जब मारिया पकाने पर आती है तब क्या कहना, मजा आ जाता है। और दूसरे काम भी जब करती है तो वाह उसी खूबी से। सीना-पिरोना और वैसी ही दूसरी चीजें, मै कहता हूँ हरेक काम वह जोरदार तरीके से करती है! आह, कितनी अच्छी बीवी है मेरी आह, हा! तुम भी ऐसी ही कोई औरत ले आओ एरिफी, समझे? ऐसी ही औरत एं ?"

"कुत्ते की तरह भौकती भी तो है वह!" एरिफी, या तो समावार के पास खड़खड़ करता या पहले से ही मेज पर बैठा अपनी मूँछें चाय की प्याली मे डुबोते हुये सख्ती से उसे फटकार बताता।

मिखाइलो विस्मय से अपनी भँवे ऊपर को करता।

"क्या कहा तुमने भौकती है वह? तो फिर क्या हुआ? माना वह भौकती भी है तो फिर? और यह सच भी है! तुम तो जानते हो कि कोई भी मियाँ-बीबी इससे बचे नही रहते। इसके बिना तो काम ही नहीं चलता। हरेक कोई अपने आपको को ऊँचा समझता है, कोई भी झुकना नहीं चाहता। मेरी ही मिसाल ले लो। क्या मै उससे हार मानूँगा? तेरी जानकी कसम ऐसा नहीं करूँगा। मसलन मैंने जोर से पुकारा, 'मारिया' और अगर उसने मेरी न सुनी तो...दिया मैंने एक

झापड़ उसके मुँह पर, और ऐसा ही हरेक के साथ होता है।"

"ओर वह भी तो तेरे को देती है फिर" एरिफी गिब्ली ने रूखेपन से जवाब दिया।

"दो अच्छा, हाँ देती हूँ!······दो दे भी दिये तो क्या हुआ? क्या वह मेरी बीवी नहीं है? उसे भी मेरे दो झापड़ लगाने का हक है लेकिन मै तो उससे हार नही मानता। मै फिर उसे ऐसी कर्री मार लगाता हूँ कि······"

"और वह फिर तेरी बेलन से खबर लेती है जैसा कि उस बार किया था········" एरिफी ने उसकी बात न मानते हुये कहा।

"बे——ल——न——से!······तेरी ऐसी की तैसी! तेरा मतलब है वह मुझे रोज बेलन से ठोंकती है? ठीक है एक बार ऐसा होगया था, बस। बेलन! बस उसे ही ले बैठा।"

कुछ क्षण खामोशी रही। मित्रों ने चाय पी और एक दूसरे की ओर देखा।

"और हाँ, तुम्हारी चिड़ियों का क्या हुआ? जिन्दा है सब?"

"देखलो खुद ही।"

"अच्छा, ठीक हैं। चिड़ियें—आ हा क्या कहने हैं! में भी सोच रहा हूँ कुछ चिड़ियें खरीदने का।"

"तुम्हारी घरवाली उन्हें भून खायेगी," एरिफी ने व्यंग्य किया।

"कभी नहीं! उसे तो खुद चिड़ियें पसन्द हैं। अभी कुछ दिन हुये उसनें एक कल हँस खरीदा है। और वह भी कैसे!" यकायक मिखाइलो की बाँछें खिल गईं। "क्या बात पैदा की है उसने! बड़ी चालाक है वह! ज्यों ही किसी शराबी किसान पर उसकी नजर पड़ी कि लगी फटकारने उसे। 'तुम-तुम शराब पिये हो', वह कहती है, 'और मैं, जानते हो, पुलिस के सिपाही की बीवी हूँ अगर तुमने ठीक से बात ठीक नहीं की तो मैने बुलाया अपने आदमी को। अभी पकड़ के ले जाएगा कोतवाली तुम्हें। चाहते हो कोतवाली जाना?'

बेचारे किसान ने सोचा कहीं शराब पिये हुये पकड़ा न जाऊँ और इसी डरके मारे उसने अपना बेहतरीन कलहँस तीस कोपेक में दे दिया। और क्या कलहँस है आय हाय—मोटा, चतुर, बड़ा रोबदार चेहरे वाला—बिल्कुल अपने सार्जण्ट जैसा ! हाँ भैया, मेरी बीवी तो हीरा है हीरा। और अगर तुम्हें भी वैसी ही कोई मिल गई तो तर जाओगे कहता हूँ। तुम्हें अपनी मुट्ठी में कर लेगी और वह भी कैसे ? मुँह नहीं खोलने देगी तुझे दोस्त हाँ !"

"तो उससे क्या फायदा होगा ?" एरिफी ने मालूम किया।

"उससे क्या फायदा होगा ? औरत से ! अरे जब घर में औरत आ जाती है तो घर की काया ही पलट जाती है । एक तो यह कि बच्चे होने शुरू हो जाते हैं; मकान साफ हो जाता है और फिर डाँटने-फटकारने और मनाने के लिये भी एक इन्सान आ ही जाता है······"

बस अब मिखाइलो लगा स्त्रियों के अनुपम गुणों की सूची बखानने। नारी जाति के प्रति उसका एक अत्यन्त स्वस्थ और प्रशंसनीय दृष्टिकोण था जिसके कारण स्त्रियों की न्यूनताएँ भी उचित जान पड़ती थीं। स्त्रियाँ ही उसके लिये लालसा की वस्तु थीं और उसकी दूसरी लालसा थी खाना। उन दोनों उत्कण्ठाओं की परस्पर खूब स्पर्धा होती रहती थी। स्त्रियाँ उसकी जिंदगी का आदि थी और वे ही उसका अंत; वे ही ऐसा सीमेंट थी जो जीवन के विविध रूपों को एक ठोस, सम्पूर्ण आकार में मे गूँथती है । वे ही उसके लिये एक ऐसी शक्ति थी जो प्रत्येक वस्तु को ध्वनि, रग और सार प्रदान करती थी। स्त्रियों के बारे में वह बुलन्द आवाज मे तीन घण्टे तक एक साथ बातचीत कर सकता था। उसके कवित्वपूर्ण मुहावरे एरिफी को परेशान कर देते थे और वह उदास चेहरा लिये नीचे को घुसता जाता मानो अपने मित्र की बातचीत से दूर भागने के लिये मेज के नीचे सरकने की कोशिश कर रहा हो। आखिरकार जब उसकी सहिष्णुता खतम हो जाती तो वह उठ खड़ा होता और गुर्रा पड़ता :

"मैं ऐसा ही अच्छा ! समझे, बस बहुत हो गया। तुम्हारा बस चले तो तुम तो आदमी की जान निकाल लो !"

इस घुड़की से वक्ता एकदम रुक गया लेकिन ऐसा भी नहीं सिट-पिटाया कि बिल्कुल चुप हो जाय। अजी नहीं ! उसने जरा इधर-उधर नजर डाली और फिर अपना वही राग अलापने लगा।

"अपने स्टोव पर पुताई करवा लेनी चाहिये ! देखो तो भला अपने स्टोव को ! छिः ! छि ! लानत है तुम पर ! अब अगर तुम्हारे पास औरत होती ना……"

लेकिन एरिफी जरा खांस देता और अपनी टाँग या बाजू उठाकर एक दूसरे पर रखकर अपना क्रोध प्रगट करता।

"नाराज न होओ, भैया ! जरा ठहरो; आ जाओगे रास्ते पर अपने आप ही। तुम जैसे व्यक्ति की इस तरह बरबादी हो यह हरगिज मुम-किन नहीं……"

"माइक ! बंद करो यह सब !" एरिफी ने मुट्ठी मेज पर ठोंकी।

"अच्छा अच्छा। नहीं कहेंगे कुछ । पर तुझे भी शैतान का हवाला !"

कई क्षण तक स्तब्धता छाई रही।

"मैं घर जा रहा हूँ। थोड़ी ही देर में काम कर चला जाऊँगा। मारिया राह देख रही होगी। आय–हाय क्या खाना खाया है आज हमने ! सूअर के गोश्त का कीमा, बकव्हीट का काशा और फैटबैक। तमाम चीजें यखनी में पकाई गई थीं। मुँह से पकड़ो और फिसल जाय ओह ! और तुम यहाँ न जाने क्या कचरा खाते हो ! यह भी कोई खाना है ? लेकिन अगर तुम्हारे पास……चलो छोड़ो, नहीं कहता। मै चुप ही रहूँगा—मैं तो अब जा ही रहा हूँ, चल दिया बस। अच्छा फिर मिलेंगे। मै चलता हूँ। आओ कभी हमारे यहाँ। पाल कहाँ है ? पाल, ए शैतान कहीं के, कहां है रे तू ? यहाँ नहीं है शायद। क्या ख्याल हैं उसका ? ठीक है ? गली में रहना होगा वह तो ऐं ? अरे रे, क्या

जिंदगी है उस गरीब की भी ! लेकिन अगर तुम्हारी बीवी होती तो·······"

अंत में एरिफी की बड़बड़ाहट सुनकर वह वहाँ से चला जाता। मिखाइलो के चले जाने के घण्टों बाद तक एरिफी कुछ परेशान रहता। उसके सारे शरीर में वायु के दुःखप्रद झोंके झरझरी पैदा करते रहते।

मिखाइलो की बातें हमेशा एक ही जैसी होती थीं। पाल उसके वाक्य के शुरू के शब्द सुनकर ही अंतिम शब्दों का अनुमान लगाना सीख गया था। उसे न तो मिखाइलो का मुँडा हुआ चिकना चेहरा पसन्द था न ही उसकी उदास आखें अच्छी लगती थीं जो दो बटनों सी लगती थीं, न उसकी आत्म-सन्तुष्ट धीमी आवाज उसे भाती थी और न ही कभी उसे उसकी पूरी भद्दी आकृति अच्छी लगी जिसकी छोटी-छोटी टाँगें और बाहें थी और वर्गाकार बालों से भरा सिर था। मिखाइलो और एरिफी के अपने प्रति दृष्टिकोण को देखकर पाल को उनकी विषयासक्तता से घृणा हो गई और वह उनसे दूर रहने लगा। अपने इस विचार के कारण उसे "छोटा कपटी" की संज्ञा मिल गई। पाल ने महसूस किया कि चाचा एरिफी बावजूद उनकी काली दाढ़ी, सबल आकृति और कठोर व भयकंर मौन के मिखाइलो की सुन्दरता से कुछ कम नही है।

उन दो मित्रों के वार्तालाप से तो पाल कभी कोई निष्कर्ष न निकाल सका लेकिन हाँ वह सदैव एरिफी की ही हिमायत करता था। वाचाल मिखाइलो का उसने कभी विश्वास न किया। रफ्ता-रफ़्ता पाल ने स्त्रियों के प्रति वही दृष्टिकोण अपनाया जो एरिफी ने अपना रखा था। उसने तो उसका तुलका पर इजहार भी किया। पहले तो वह अचम्भे में पड़ गई पर बाद में उसे क्रोध आ गया। और आखिरकार पाल जब घर लौटा तो उसके चेहरे पर खराशें पड़ी हुई थीं और उसके हृदय में स्त्रियों के प्रति एक गुप्त समादर का भाव निहित था।

एरिफी ने बड़ी गहरी आवाज़ में उससे आहिस्ता से पूछा:

"यह क्या हुआ ?"

"एक तख्ते पर गिर पड़ा," पाल ने शर्माते हुए जवाब दिया।

"ओह......" एरिफी ने अनिश्चित स्वर में कहा और उसे धोने के लिये कहा।

दिन गुजरते गये और पाल बड़ा होता गया।

अब वह नौ साल का हो गया था पर था छोटा, चेचकदार मुँह वाला, फूहड़ और शांत स्वभावी। उसकी आँखों में बालपन था जिनमें रुखाई और बुद्धिमत्ता झलकती थी। एरिफी और वह एक दूसरे के स्वभाव को बखूबी समझते थे। अपनी खामोशी में भी वे एक दूसरे से स्पष्टतः बातचीत कर लेते थे। अब एरिफी ने पाल को पढ़ना-लिखना भी सिखा दिया था। कोशिश तो यह भी की गई थी कि लड़का स्थानीय मदरसे में पढ़े लेकिन वह सफल न हो सकी। दस दिन में ही पाल स्कूल के वातावरण और वहाँ के लड़कों के उसके प्रति व्यवहार से तंग आ गया। ग्यारहवें दिन जब एरिफ़ी ने उसे जगा कर कहा, "उठो स्कूल का वक्त हो गया।" तो उसने तकिये में से सिर निकाला और आँखों को जिनमें रात भर जागने से जलन पैदा हो गई थी, एरिफी के चेहरे पर गड़ाते हुये अपने जन्म के बाद पहला भाषण दिया :

"अब मैं वहाँ कभी न जाऊँगा! चाहे आप मुझे डुबो दें। वहाँ मुझे लड़के कुत्ते से भी बदतर समझते है। मुझे हरामी, निबावला, कोचरा, शैतान कहकर चिढ़ाते हैं। चाहे आप कुछ ही क्यों न करें मै वहाँ नहीं जाऊँगा। मै तो घर पर ही रहूँगा। मुझे वे जरा अच्छे नहीं लगते। उनमें कोई भी मुझे नहीं भाता। मै तो उनसे हमेशा लड़ता ही रहूँगा। अभी परसों ही मैंने गुरुजी के लडके की नाक तोड़ दी। गुरुजी ने मुझे एक घण्टे तक बत्तख बनाये रखा। मैं उसे फिर ठोकूँगा, जो भी मेरे हत्थे पड़ा हरेक को पीटूँगा। आप मारिये मुझे, सजा दीजिये! जब वे मुझे मारते हैं तो किसी को पता नहीं चलता। कोई बत्तख नहीं बनाया जाता क्योंकि मै चुप हो जाता हूँ। अब मै वहाँ किसी कीमत

पर भी नही जा सकता, चाहे कुछ ही क्यों न हो जाय।"

एरिफ़ी ने उसके बचकाने चेचक भरे मुँह की ओर देखा जो असंतोष और जहर के कारण और भी विकृत हो गया था। वह चुप रहा। लेकिन जब पाल ने अपना भाषण पूरा करके उसी जिद और चुनौती के जज्बे के साथ फिर अपना सिर तकिये में रख दिया तो एरिफी भड़क उठा और उसने इस तरह गरज कर उसे डाँटा कि खिड़की के शीशे में कम्पन हो उठा! "अच्छा तो मत जाओ!" और मदरसे की ओर इस भावना से निहारा कि पाल धूजने लगा और, कम्बल के अन्दर दुबक गया।

स्कूल के बारे में फिर भी कुछ नही हुआ। घर पर ही सख्त मेहनत के साथ पढ़ाई होती रही। पाल को पढ़ने-लिखने का शौक न था और जब वह किताबें लेकर बैठता तो ऐसा महसूस करता मानो किसी दुर्लभ और दुःखप्रद काम को ले बैठा हो। हालाँकि एरिफी के उद्देश्य बड़े ऊँचे और लाभप्रद थे फिर भी वह उन मुर्दा अक्षरों व शब्दों में जिन्दगी फूँकने मे असफल रहा।

पाल हर रोज़ सवेरे की चाय के बाद मुँह चढ़ाये हुये अल्मारी से किताबें निकालता। बाँहें घुटनों मे दबाए, हाथ ठोड़ी पर रखे वह मेज पर बैठता और अस्पष्ट व कर्कश स्वर में कुछ बड़बड़ाने लगता और दायें-बायें तथा आगे-पीछे हिलता-जुलता रहता।

उसकी इस व्यस्तता का सिर्फ एक ही नतीजा निकलता और वह यह कि पिजंरे की चिड़ियाँ चुप हो जातीं। वे आपस मे परेशानी भरी और उत्सुक दृष्टि से एक-दूसरी की ओर देखतीं। और फिर बड़ी चिडिया के इशारा करते ही वे सबकी सब अलग-अलग स्वरों में चें,-चें, चह-चह शुरू कर देतीं मानो वे यह सब इस अधम ध्येय से प्रेरित हो कर रही हों कि लड़के का विद्याभ्यास की ओर से ध्यान हटाया जाय। और अपने इस उद्देश्य मे वे तुरन्त सफल होती थीं।

पाल किताब से अपनी नजरें हटा कर पहले तो आहिस्ता-आहिस्ता

बड़ी चिड़िया जो कि स्वयं एक अच्छी गायिका थी, की ओर देखकर सीटी बजाता। कुछ ही देर में वह अपनी अप्रिय सीटी से चिडिया को तंग करने लगता। फिर एक छुरी पर दूसरी छुरी घिस कर वह अन्य चिड़ियों को भी विचलित कर देता। आखिरकार जब इन हरकतों की वजह से घर में अच्छा-खासा झगड़ा खड़ा हो जाता तो बेंच पर खड़ा होकर मैना से छेड़-छाड़ शुरू कर देता।

यह कुछ इस प्रकार किया जाता था: वह एक तीरी या छोटी लकड़ी पिंजरे में दाखिल कर देता और मैना की चोंच पर मारता और इससे जाहिर है कि चिड़िया नाराज होती थी। मैना एक टाँग से ही अपने पर मारती हुई सारे पिंजरे में चक्कर लगाती और अपनी चोंच से उस खपच्ची को पकड़ने की कोशिश करती। कभी-कभी वह खपच उसकी चोंच में आ भी जाती तो दूसरे ही क्षण निकल जाती और वह फिर मौन धारण कर लेती मानो उस खपच में उसकी कतई कोई दिलचस्पी है ही नहीं। जब वह खपच पकड़ने में नाकाम रहती तो ऐसे जोर-जोर से चीत्कार करती कि कान के पर्दे फट जाते।

इन सबसे संतुष्ट हो, पाल अपनी किताबों की ओर आता लेकिन उन्हें पढ़ने की गरज से नहीं, बस यों ही। वह अपने ठीक सामने की ओर इस टिकटिकी के साथ घूरता गोया दीवार के उस पर कुछ उसे दिखाई पड़ रहा हो। जितना अधिक वह इसे देखने में लगता उतनी ही अधिक खामोश, गहरी और चिंतनशील उसकी नजरें बन जाती। वह किस चीज पर सोच रहा है यह शायद वह खुद भी न जानता हो। कुछ ऐसे भी विचार है जो रूप या आकर से रहित होते है और हमें यह विश्वास करने पर विवश करते है कि हम उन्हें महत्वहीन करार देकर उनसे बच सकते है। लेकिन यह चीज ऐसी है ही नहीं क्योंकि इस प्रकार की समझ अपने साथ कायरता व प्रारंभिक मूर्खता के तत्त्व लिये होती है।

चिड़ियों की निरन्तर चख-चख के दरम्यान पाल दो घण्टे लगातार

बैठा रहता। तब एरिफी कमरे में आता और सबक के बारे में पूछता पाल बड़े आराम के साथ चुपचाप बेंच पर बैठ जाता। दृढ़ता से अपनी उंगली किताब की किसी पंक्ति पर रखते हुए वह निम्नलिखित बुद्धिमत्ता का इजहार करता :

"तुम आरों से भी सीते हो——"

"ठहरो जरा !" एरिफी रोक देता। "यह नहीं हो सकता वहाँ" और किताब आकर वह खुद पढ़ने लगता, उसके होंठ बिला आवाज के हिलते दिखाई देते, "यह कहाँ लिखा है ? चलो पढ़ो इसे फिर से।"

"तुम आरी से सीते हो, और तुम सुई से भी सीते हो।"

"हाँ, चलो। क्या लिखा है आरी ? है न ? आरी से हम क्या करते है ?"

"आरी से ?" पाल उस की ओर देखता और कल्पना करने का प्रयत्न करता। "आप आरी से लकड़ी काटते है।"

"यह बात है ! और तुम क्या पढ रहे थे 'सीना'। यह हरफ 'आ' है 'ई' नहीं, समझे ?"

"लेकिन किताव में तो लकड़ी के बारे में कुछ भी नहीं लिखा।"

एरिफी ने तनिक सोचा कि पढ़ाई में यह जो लकडी बीच में आ खड़ी हुई है उसे कैसे हटाये। पाल टेका लेकर बैठ गया और बोला :

"मै यह सब जानता हूँ। हम सुई से सीते है, कुल्हाड़ी से हम लकड़ी फाड़ते है, कलम से हम लिखते है, लेकिन यह बकवास मै नही पढ़ सकता। अक्षर बहुत ही छोटे-छोटे है और सब अलग-अलग किस्म के है।"

एरिफ़ी खामोश हो सोच-विचार करता रहा। किताब उठा कर उसने फिर से वे सरल वाक्य पढ़े और उसकी राय ढुलमुल होने लगी बच्चे के मस्तिष्क के विकास में उनका क्या महत्व है और वे उसमें सहायक भी सिद्ध होंगे या नही इस पर उसे संदेह होने लगा फिर आगे पढते हुए वह लेखक की चतुराई पर चकित हो गया। एरिफी

को विश्वास हो आया कि लेखक को पाल के विचार से जरूर कष्ट हुआ होगा—कि तुम आरी से सींते हो और सुई से काटते हो।

इस प्रकार पढ़ाई का घण्टा समाप्त हो जाता। एरिफी उसे घर करने के लिए काम देता ताकि पहले के पढ़े हुए सबक दुहरा लिए जाएँ और "इस पंक्ति से लेकर उस पंक्ति तक" भी याद कर लेना। तब दोनों पसीने में शरोबोर खाना खाने बैठ जाते। खाने के बाद एरिफी कुछ नींद लेने के लिए लेट जाता। वह पाल को आज्ञा देता कि जब भी कुछ हो जाय मुझे उठा देना।

पाल कपड़े पहनता और बाहर सड़क पर निकल जाता। सड़क से तो उसकी हमेशा से अदावत चली आ रही थी उसके हम-उम्र लड़के उसके उदासीन स्वभाव से कभी आकृष्ट न होते थे। वह स्वयं भी हालाँकि उसे उनकी हँसी-दिल्लगी और खेलों से गुप्त रूप से ईर्ष्या होती थी पर उनसे समझौता करने के लिए कभी तैयार न हुआ था। दोस्ती कायम करने के लिए कई कोशिशें की गईं लेकिन सभी किसी न किसी वजह से या तो शानदार लड़ाइयों के कारण या आपसी तना-तनी के कारण नाकाम नहीं। पाल आसानी से उनके खेलों में शरीक न हो सका वह हर चीज को सोच-समझ कर और बड़े लड़कों की भाँति किया करता था। इसका दूसरे बालकों पर बड़ा दुःखप्रद और रूखा असर पड़ा। पाल को ऐसा लगता था कि वे उससे जान-बूझकर अलग रहते हैं।

एक बार बाल-वृंद कुकुरमुत्त देखने जंगल गया। जंगल की पुर-अमन और उदासीन आवाजे पाल को बड़ी भाती थीं। उन्हें सुनकर वह नरमी और गर्मजोशी महसूस करता था। उसके साथियों को पता भी न चला और वह उनसे अलग हो गया। वृक्षों के झुण्ड में घूमते हुए उसका सिर इस कदर झुका हुआ था मानो किसी चीज की तलाश कर रहा हो और उसी तरह घूमते-घूमते वह एक गीत गुनगुनाने लगा। कीचड़ से लथ-पथ पत्तों की गर्म वे मधुर सुगन्ध पैर के नीचे चरचर

करती हुई घास की आवाज और छोटे-छोटे कीड़ों-मकोड़ों की आवाजें और भाग दौड़ में उसे बड़ा आनन्द आ रहा था।.......दूर कहीं से कुछ आवाजें सुनाई पड़ीं :

"अरे वह लौंडा कहाँ रह गया ?" किसी ने चीख कर पूछा।

"किसे गरज है कहां गया ? कोई गुम तो जायगा नही। ऐसे नसीब कहाँ उनके !"

"वह तो हमेशा ऐसा फूला रहा है जैसे उल्लू, और जैसे एरिफी......"

"अरे कहीं वह पुलिस वाला छोकरे का असल बाप ही न हो !"

"लड़के जोर से खी-खी करके हँस पड़े।

पाल पर पाला पड़ गया। अपमान के विष का घूँट पीकर वह सावधानी से जंगल में से निकल आया। शीघ्र ही अपमान के भाव ने प्रकोप का रूप धारण कर लिया। अब वह उनसे बदला लेना चाहता था और उसे सर्वथा न्यायोचित समझता था।

जब वह जंगल के किनारे पर पहुँचा तो बड़े उत्तेजित और प्रफुल्लित स्वर में जोर से पुकारा :

"ऐ बे, लौंडों, वापस आजाओ रे ! आओ देखो मैंने क्या पाया !"

जब उसकी पुकार पर दो बच्चे दौड़े आए तो वह उन पर टूट पड़ा और उसने उन्हें खूब पीटा। वापसी में सारे रास्ते बच्चे पाल से अलग-अलग चलते रहे, उस पर हँसते रहे और उसे गालियाँ देते रहे लेकिन उसके पास आने का किसी को साहस न हुआ। वह बलशाली था। उससे खुल कर लड़ना खतरे से खाली न था। और यह बात उन्होंने अपने दो-तीन बार के तजुर्बे से समझी थी।

पाल घर पहुँच गया। उसके चेहरे पर उदासी छाई थी। एरिफी घर में नहीं था। शाम हुई, घर में अंधकार व स्तब्धता का दौरदौरा शुरू हो गया। केवल चाफिच और ग्रीनफिच* ने जो अभी-अभी लाई

* चिड़ियों की जातियां।

गई थीं और ठीक से कह नहीं पाई थी खामोशी दूर की। पाल का ध्यान उनकी ओर आकृष्ट हुआ। जब वे बड़ी देर तक पिंजरे में तार की सलाखों से कूद-फाँद करते और एक दूसरे से चोंचें लड़ाते रहे तो पाल उन्हें शौक से निहारता रहा। साहस वह फुर्ती से एक कुर्सी पर जा कूदा, खूँटी से पिंजरा उतारा और दरवाजा खोलकर पिंजरे को खुली हुई खिड़की में से फेंक दिया। चिड़ियें उड़ गईं। पाल ने उनकी आवाज पर तनिक भी ध्यान न दिया। विचलित हो वह फिर मेज पर आ कर बैठ गया, हाथ पर सिर रखे वह सोच में डूब गया।……

जब एरिफी अंदर आया तो पाल ने उसका इन शब्दों से स्वागत किया :

"मैने चिड़ियों को उड़ा दिया।" उसके स्वर में धृष्टता थी और नेत्रों में चुनौती।

एरिफी ने पहले दीवारों पर और फिर पाल की ओर देख कर धीरे से पूछा :

"क्यों?"

"यों ही जरा!" पाल ने उसी धृष्टता के साथ जवाब दिया।

"अच्छा………तुम्हारी मर्जी।"

"तो आप मुझे डांटते क्यों नहीं?" पाल ने पूछा।

एरिफी की भँवें और मूँछें चढ़ गईं। उसने बड़ी दयालुता के साथ बच्चे के चेहरे को देखा।

"कभी पहले भी डाँटा है तुम्हें मैंने?" उसके स्वर में उदासी थी। वह हथेली घुटने पर फेरने लगा।

"यही तो सारी दिक्कत है। दूसरे सब बच्चों को डाँटते है। आपको भी शायद ऐसा ही करना चाहिये। अब तो एक ही बात है।"

एरिफी अधीर हो, उलझन में पड़ गया। और बेंच पर बैठ गया। पाल के चेहरे पर तनाव व कटुता की रेखाएँ अंकित थी।

अब चारों ओर दमघोंट और भारी नीरवता का साम्राज्य था।

यहाँ तक कि चिड़ियाँ भी अब मस्त हो होनहार की प्रतीक्षा कर रही थी। पर होता क्या, पाल अपने घुटने सिकोड़ कर दीवार से टिककर बैठ गया।

पुराना, गंदा घण्टा जिसका पीला छिद्रित चेहरा था हर सेकण्ड टिक-टिक करता रहा जो अनन्य की अथाह खाई मे बड़े रुक-रुक कर गिरता रहा। ऐसा लगा मानो घण्टा इस जबरदस्ती के श्रम से थक कर चूर हो गया हो। घण्टे का पेण्डुलुम आलसी की भाँति आगे-पीछे इस प्रकार हिलता रहा और ऐसी फट-फट की ध्वनि निकालता रहा कि उसे सुन कर दीवार पर बैठा हुआ झींगर बड़े हास्यापद ढ़ंग से अपने मुच्छे हिलाने लगा। चमकते हुए सूर्य की लाल-लाल किरणें घनी झाडियों मे से होती हुई झोंपड़ी की खिड़की में दाखिल हुईं और उनके उज्जवल प्रकाश से सारा फर्श जगमगा उठा।

"हाँ तो, तुमने चिड़ियों को उड़ा दिया ऐं—तो क्या हुआ ? जो चिड़िया पिंजरे में फड़-फड़ करे उसे तो उड़ा ही देना चाहिये। और अगर वह बहुत ही पालतू हो और उड़ना ही न चाहे तो दूसरी बात है। ऐसी चिड़िया, चिड़िया नही रहती। अच्छी चिड़िया हमेशा स्वच्छन्द रहना चाहती है।"

पाल ने नजरे उठा कर एरिफी की ओर देखा।

"वह किस लिए कह रहे है आप ?"

"यों ही·······कोई खास वजह नही·······यों ही मुझे ऐसा लगा और मैंने कह डाला," एरिफी उलझन मे पड़ गया और दाड़ी खुजाते हुए एक अपराधी की भांति उसने उत्तर दिया। "हमेशा आदमी वही सब कुछ नही कहता है जो वह सोचता है। कभी-कभी हम अपने विचारों के ही चक्कर में पड़ जाते है और ऐसे उलझ जाते हैं कि आई हुई चीजें भी दिमाग से निकल जाती है, टुकड़े-टुकड़े हो जाती है।········और जब वह विचार-शृंखला टूट ही गई तो फिर क्या बाकी रहा।"

"क्या कहा ?" पाल ने फिर सवाल पूछा, उसका सिर आगे निकला हुआ था और वह गौर से एरिफी की बातें सुन रहा था।

"कुछ भी नहीं। अब तो बातें करना भी मुहाल है। आओ पाल, हम सेंट अलेक्सिस का जीवन-चरित्र पढ़ें।"

"आइये !"

पाल मायूसी में डूबा बेंच पर पड़ा रहा। उसे एरिफी के शब्दों में कुछ नवीनता मालूम हुई और शब्द भी तो अनेक थे। और यह भी आश्चर्यजनक बात थी एरिफी जैसे मौन-स्वभावी के लिये।

ऐरिफी ने कुछ फटी-पुरानी किताबें शेल्फ से निकालीं। उनमें से एक चुनी, जिसे मेज पर रख दिया। कुछ ही क्षणों में उसकी गहरी धीमी आवाज घर भर में फैल गई। ज्यों-ज्यों किताब में उसकी रुचि बढती गई उसकी आवाज भी गहरी होती गई। और अंत में वह अष्टक की नाईं काँप गई। कभी-कभी इस तरह लेट कर आँखें बँद करके मस्तिष्क में चीजों की कल्पना और उन्हें चित्रित करना पाल को बड़ा अच्छा लगता था। उसने उन तमाम ऋषियों की कल्पना की कि वे सब छोटे-छोटे कद के और दुबले-पतले होंगे, उनकी बड़ी-बड़ी, सख्त और चमकती हुई आँखें होगी, शहीद लोग हृष्ट-पुष्ट किसान होंगे जो लाल कमीजें पहने हुए होंगे, उनकी बाहें चढ़ी हुई होंगी और बूट चर्र-चूँ करते होंगे। बादशाह ईसाइयों पर जुल्म करने वाले छोटी-छोटी टाँगों वाले मोटे-मोटे जमीदार होंगे जिनका अक्सर गुस्सा उनकी नाक पर रखा रहता है और वे दुर्व्यवहारी होते हैं। उसने वास्तविक चेहरों की कल्पना की, मठ का पुजारी, पड़ोसी कसाई खाने के क्लर्क और पुलिस सार्जण्ट गोगोलेव। पाल उनके चरित्रों की बहुत ही प्रमुख विशेषताएँ निकाल लेता और उनके रूप-रंग के अत्यंत प्रमुख खदोरखाल तलाश करके उन्हें इतना ऊपर उठाकर सजाता रहता कि वे अंततः अपनी तमाम मानवीय समानताएँ खो बैठते और राक्षस बन जाते जिनकी बुलंद आवाज

से और राक्षसत्व से उनका सृष्टिकर्त्ता भी भयभीत हो जाये।

चित्रों के मिश्रण का आतंक पाल को भी परेशान कर देता और वह भयभीत हो आँखें खोल अपने आस-पास कमरे को देखने लगता। उसके ठीक सामने एरिफी का बूढ़ा, जीर्ण सिर दिखाई पड़ता जिसके विशाल और भद्दे साये दीवार पर पड़ते होते। सारा घर उसकी मंद ध्वनि से गूँज उठता था। उसकी गहरी सबल साँसों में शब्द बड़े स्पष्ट फूट पड़ते थे। कभी-कभी पाल उन्हें गौर से सुनता लेकिन वह यह न समझ पाता कि आखिर ऐसे सरल शब्द शहादत के इतने भयावने चित्र कैसे प्रस्तुत कर सकते है। उसकी समझ में यह भी न आता था कि आखिर क्यों उन शब्दों को सुन कर वह चित्रों को भली भांति देख पाता था। जो वे शब्द प्रस्तुत करते थे। वह इन्हीं विचारों में लीन कहानी का सिलसिला भूल जाता था और उन्हीं विचारों में डूबा वह सो जाता था। उसके सामने एरिफी था जिसे किसी बात का भी ध्यान था, बस उनके आस-पास घूम रहा था। एरिफी किताब हमेशा आखिर तक पढ़ता था बाद में भी बड़ी देर तक वह किताब को इस तरह घूरता मानो उसके मुख पृष्ठ के खाली पन्नों को पढ़ रहा हो। इसके बाद वह श्वाँस लेता, इधर-उधर नजरें दौड़ाता, उठता, पाल के पास तक जता, बड़ी एहतियात के साथ उसे हाथों में उठाता और स्टोव के पीछे लगे उसके छोटे बिस्तर पर ले जाकर सुला देता। फिर उस पर क्रास का निशान बनाते हुए वह झोंपड़ी के बाहर पड़ी बेंच पर जा बैठता।

बाहर बैठे-बैठे वह बड़ी देर तक गौर से नदी की कल-कल सुनता रहता, जंगल की अंधियारी दीवारें और तारों से जगमगाते हुए आकाश को निहारता रहता। कस्बे के मरणासन्न कोलाहल वह सुनता और वहाँ से गुजरती हुई स्त्रियों को सशंक नेत्रों से देखता रहता। बग्घी हाँकने वाले अगर शोर मचाते हुए गुजरते तो वह उन्हें देख कर बड़ी सख्ती से चिल्लाता, "चुप रहो बे शैतानो!" और यदि

वे चुपचाप निकल जाते तो और भी कठोरता से चीखता, "चलते जाओ बे !" इस प्रकार चीख-चिल्लाहट की कोई जरूरत तो न थी लेकिन एरिफी तो एक भी बग्घी वाले को बिना इसके गुजरने ही न देता। उसे तो वे आलसी और भयंकर किस्म के निकम्मे लोग लगते थे। वे पूरी तरह से अपने घोड़ों की शक्ति पर ही जीवित थे जिनको एरिफी उनसे कहीं अधिक बेहतर और बुद्धिमान समझता था—क्योंकि कम से कम वे गंदी भाषा का तो प्रयोग नहीं करते थे।

कभी कोई ट्राइका* अपनी घंटियाँ बजाती हुई एरिफी के पास से दौड़ी गुजर जाती। ड्रायवर गरजते हुए निकलते, औरतें चपर-चपर करतीं और मर्द बड़ी रुखाई से शराबियों की नाईं हँसते जाते थे। एरिफी क्रोध के मारे दुहरा हो जाता और चाहता कि उस सारी टोली को पकड़ कर थाने ले जाय। वह अपनी निष्ठुर दृष्टि से देर तक उन्हें गुजरते हुए देखता रहता था।

जब पाल छः साल का हुआ और बाहर गलियों में खेलने लगा तो एरिफी ने दूसरे बच्चों से सख्ती का व्यवहार शुरू कर दिया। और कुछ ही दिनों में वे उससे खार खाने लगे। वह इस बात पर राजी ही न होता कि वे उसके पाल के साथ इतनी दुष्टता और मूर्खता का बर्ताव करेंगे। शुरू-शुरू में तो वह इन बातों पर विश्वास भी नहीं करता था लेकिन बाद में एक दिन इत्तफाक से उसने गोद लिए बेटे के सम्बंध में दो-तीन विशेषण छिप कर सुन लिये। तब तो उसका ख्याल और भी पक्का हो गया। उसे महसूस हुआ कि उसके सिवाय उसके पाल को कोई प्यार नहीं करता।

यह जाने बिना कि आखिर यह हुआ क्यों और कैसे उसका और बच्चों का क्रूर शीत युद्ध प्रारंभ होगया। गली में किसी शोर-गुल या खेल-कूद की आवाज़ उसने बंद करवा दी। बच्चों पर जो इस प्रकार का ओछा जुल्म उसने किया वह हास्यजनक ही था। आखिरकार उसने

---

* रूसी बग्घी विशेष;

महसूस किया कि अब बच्चों से उसका वास्ता नही पड़ रहा जैसा कि जाहिर में लगता था बल्कि उन नौजवान लोगों से वह ऐसा व्यवहार कर रहा था जिन्होंने बालिगों की तमाम मूर्खतापूर्ण भावनाएँ और पक्षपातादि जैसी विशेषताएँ अपनाली है।

अपने इसी पुख्ता ख्याल की वजह से अक्सर एरिफ़ी की कस्बे वालों से सख्त झड़पें हो जाती थी। इसी तनातनी के दौरान मे वह कई मरतबा पाल के खिलाफ़ अनेकों दुखदाई अपराध सुनने पर विवश हुआ। बहुधा ऐसी भिड़न्तों के बाद तो वह और भी अधिक उदास हो जाता था। उसका सारा चेहरा झुर्रियों से ढक जाता और उसकी आँखें विचलित हो झपकने लगती। उसका चेहरा, दाढ़ी, मूछों और भवों के पीछे शरणागत होता हुआ दीख पड़ता।

जब वह अपने प्रिय ऋषियों की जीवन-गाथाएँ पढता तो उसकी आवाज भर्रा जाती। कभी-कभी तो वह धातु के विचित्र छल्ले की नाईं घूमने लग जाती।

पाल की एरिफ़ी से वही रिश्तेदारी जारी रही—दोनों उसी मौन को अपनाये हुए थे। एरिफ़ी की आवाज बहुत कम और महत्वपूर्ण थी। वह अपने लड़के से भी उसी तरह बोलता था जैसे दूसरों से—हाँ, बग्घीवालों और औरतों से जिस तरह बोलता था वह लहजा पाल के साथ नहीं होता था। उसकी मामूली बोलचाल का तो बड़ा ही हल्का स्वर होता था। उसी लबो-लहजे मे वह सार्जण्ट के सामने रिपोर्ट पेश करता, द्वारपालों को हुक्म देता, शराबियों को घर जाने के लिए तंग करता और उन राहगीरों के सवालों के जवाब देता जो वैसे भी बहुत कम ही उसके पास जाते, उसका लम्बा-चौड़ा डरावना चेहरा, जो घनी काली दाढ़ी में छुपा रहता था, वैसे ही पूछ-ताछ को बढ़ावा नहीं देता था।

ज्यों-ज्यों समय बीतता गया वह झोंपड़ी में बहुत कम देर रहने लगा। यहाँ तक कि रात को भी जबकि गश्त जरूरी थी वह बाहर

चला जाता और घनी झाड़ियों में पड़ी बेंच पर जा बैठता।

वृक्ष के तने की नाईं अचल, वह पौ फटने तक वही बैठा रहता। कभी-कभी तो वह वहीं सो जाता था। लेकिन आम तौर पर ऐसा होता कि वह नदी के पार के मैदानों पर टिकटिकी लगाये देखता रहता और किसी बिंदु-विशेष से अपनी नजरें ही न हटाता। कभी वह उठ पड़ता और नदी की ओर चल पड़ता, पत्थरों पर बैठ कर ऐसा ध्यान-मग्न हो जाता मानो कुछ सुन रहा हो। नदी चुपचाप, खामोशी से किनारों से सरगोशियाँ करती हुई आहिस्ता-आहिस्ता बहती रहती।......

जैसे-जैसे पाल बड़ा होता गया, वह भी अपने-आप में खोता गया और पहले से कहीं अधिक उदासीन और मौन रहने लगा। उसके हमउम्र बच्चों के लिये तो उसका ऐसा रवैया बड़ा ही नागवार होगया था। उनसे मैत्री बनाने की तो उसने कोशिश ही नहीं की क्योंकि वह जानता था कि पहले किये गये सारे प्रयास दुःखदायी ही सिद्ध हुए हैं।

ऐसी ही एक कोशिश के बाद वह बड़ा घबराया हुआ घर आया था, उसके दाँत भिंचे हुए थे, आँख के नीचे नीले-काले चिन्ह थे और होठों से खून टपक रहा था।

"फिर लड़ पड़े किसीसे ?" एरिफ़ी ने तनिक डाँटते हुए पूछा। "अरे भाई, तुम तो योद्धा हो योद्धा, जब देखो भिड़े हुए हो !"

पाल खामोश हो बेंच पर बैठ गया, उसने अपने होंठ चूसे और थूका। रोते-झींकते शिकायत के लिए एरिफ़ी के पास दौड़े जाना उसने न सीखा था। वह अपने आप, अपने ही तरीके से दुश्मनों से लड़ लेता था। न उसने कभी किसी को अपना कुछ लेजाने दिया और न ही वह कभी रोया-झींका। एरिफ़ी को यह बात पसंद थी।

"और आज किससे लड़ पड़े ? तुलका से ? क्यों ?"

कोई और वक्त होता तो एरिफ़ी आगे कुछ न कहता लेकिन आज जब उसने देखा कि पाल कुछ ज्यादा ही रंजीदा दिखाई दे रहा है तो

उसने असलियत जानने की कोशिश की। उसे अधिक पूछ-ताछ न करना पड़ी, पाल का सिर झुक गया और मंद, काँपती हुई आवाज में उसने कहा :

"मेरे मा-बाप कहाँ है ?"

एरिफ़ी स्टोव सुलगाने में लग गया और फिर इस-तरह सीधा खड़ा होगया मानो पाल कोई सार्जण्ट हो। उसकी आँखें खुली रह गईं और पाल के झुके हुए चेहरे की ओर वह आतंकित हो घूरने लगा। पाल ने एरिफ़ी का रुख और उसका चेहरा न देखा। बड़ी देर तक वह जवाब के इन्तजार में रहा लेकिन कोई जवाब उसे न मिला।

"कैसे थे वे लोग ?" पाल ने अपना मुँह उठाया और बड़ी तिरछी मुस्कान के साथ, जो बच्चों में नहीं पाई जाती, उसने थके-माँदे और भयभीत एरिफ़ी के चेहरे को देखा।

एरिफी को होश आगया।

"तेरी मा तो ढोल की खाल थी और तेरा बाप—बदमाश था !" वह बड़े जोर से गरजा और उसकी गरज से सारा मकान गूँज उठा और जिस गाली भरे और घृणापूर्ण अन्दाज मे उसने पाल के माता-पिता के बारे में अपनी राय दी थी वह उस लड़के ने न कभी उससे सुनी थी और न बाद में सुनी।

पाल झुक गया और खामोश होगया।

एरिफी बेंच पर बैठा रहा, उधर स्टोव पर रखे बर्तन का पानी उबल-उबल कर नीचे गिरता रहा और छन-छन की आवाज करता रहा पर उसने कोई ध्यान न दिया। बड़ी देर बड़ी परेशानी-भरी निस्तब्धता छाई रही।

पाल ने अन्त में सहमते हुये पूछा, "क्या आप उन्हें जानते थे ?"

"हां।•••" एरिफ़ी बड़बड़ाया। "मै क्यों न जानता उन्हें ! महज़ यही बात कि उन्होंने अपने बच्चे को एक चारदीवारी के सहारे छोड़ दिया, यह बताती है कि वे—अच्छे लोग नहीं थे !"

"और क्या वे जिंदा हैं ?"

"वह मुझे नहीं मालूम''''शायद खतम होगये हों। मा तो शायद तुम्हारे गम में घुलकर मर गई—और तेरा बाप वह शराब में तबाह होगया—या मर गया हो''''शायद उसी चारदीवारी के पास········ बहुतकर यही हुआ होगा और इस तरह कुत्ते की मौत वह मरा !"

"और आप—आपने देखा है उन्हें ?"

"ऐसे दुष्टों को मैंने जिन्दगी में कभी नहीं देखा ! आपने देखा है !"

पाल ने निष्कर्ष निकाला कि अगर एरिफी ने उसके मा-बाप को देखा होता तो उसकी मुझसे ऐसी न निभती। वह सब कुछ समझ गया और उस दिन से फिर उसने वह घृणित विषय न छेड़ा। एरिफी ने खुद इस बात पर सिर्फ एक बार जिक्र किया था और वह भी ऐसे मानो किसी रहस्यमय, रोमांटिक विचार से वह प्रेरित हो गया हो।

"यह तो साफ़ है कि तुम सीधे-सादे आम लोगों के बेटे नहीं हो। तुम्हारा दिमाग भी मामूली नहीं है—और दूसरी भी इसी किस्म की चीजें यही साबित करती हैं। तुम साधारण नहीं हो।"

यह कहना तो मुश्किल है कि एरिफी ने यह नतीजा क्योंकर निकाला कि पाल पेचीदा और दुनियादार लोगों का बेटा है। पाल ने भी कभी उसे ऐसे नतीजे की कोई बुनियाद नहीं पेश की । किसी ने अनुमान न लगाया कि उसे बच्चे से अपार स्नेह है, यह तो सिर्फ एरिफी का ही राज़ था। और इसके बाद पाल के वंश व परिवार का सवाल फिर कभी नहीं उठाया गया।

क्या कभी पाल ने भी इस पर सोचा ? हां शायद। उसने इस पर इतना कुछ सोच-विचार किया कि इस सवाल की छान-बीन किये बगैर उसे छोड़ देना उसने उचित न समझा।

इन्सान की कल्पना और उड़ानों की कोई सीमा नहीं। और बच्चे की कल्पना शक्ति की तो और भी कोई सीमा नहीं क्योंकि उसकी आत्मा तो एक वयस्क से कहीं अधिक रहस्यमयी होती है। वह उन बालिग लोगों की छोटी-छोटी धाराओं से कहीं स्वछन्द होती है जो कभी के जीवन के लोगों के सम्मुख घुटने टेक चुके होते हैं।

४

एक बार जब एरिफी अपनी ड्यूटी से लौटा तो क्या देखता है कि मैना बड़े विचित्र ढंग से व्यवहार कर रही है। वह निश्चल अपने पिंजरे में बैठी हुई थी। उसके बाद वह अचानक अपने अड्डे से उड़ी और क़लाबाजी खाने लगी। कई बार वह पानी भी कटोरी में गिरी। फिर उसने अपने आप को पूरी तरह झकझोरा, चोंच को चाटा और अपने पर फड़फड़ाये। अब के जो वह गिरी तो अड्डे पर लौटने में उसे दिक्कत महसूस हुई हालाँकि पहले उन कलाबाजियों मे वह आराम से लौट जाती थी। जब वह आखिरकार अपने अड्डे को लौटी तो वह उसके बीच मे नही बैठी जैसा कि पहले उसने एक बार किया था बल्कि इस बार वह पिंजरे के सीखचों से सटकर बैठ गई।

इस खास दिन इस अपंगु मैना ने बड़े अजीब अंदाज से अपने पर फड़फड़ाये और एक ही टाँग पर अपने डण्डे पर बैठी रही। लेकिन ज़ाहिर है उसके लिए वहाँ उस सूरत से बैठा रहना बड़ा मुश्किल था।

"यह अपाहिज चिड़िया मर जायेगी," एरिफी ने चिड़िया को गौर से देखते हुए पाल से कहा।

"नहीं, नहीं!" पाल ने कहा। उसे दूसरी सब चिड़ियों में मैना सबसे ज्यादा पसंद थी।

"मुझे तो अंदेशा है कहीं मर न जाय, बूढ़ी भी तो काफी हो चुकी है!"

"उसे छुओ मत, ऐसा ही अकेला रहने दो उसे।"

पाल ने बड़ी गमगीन नजरों से मैना की ओर देखा जो अपने डण्डे पर बैठी बड़े जोर जोर से घूम रही थी।

"ऐसा न करें उसे खुली हवा में लेजाएँ स" एरिफी ने सुझाया।

"ठीक, ऐसा ही करते हैं।"

उन्होंने पिंजरे को खूंटी से उतारा और मकान के सामने बाहर एल्डर* झाड़ियों में लेजाकर उसे रख दिया। मार्च का महीना था, धूप निकली हुई थी और सूर्य की किरणें पोखरियों पर पड़ रही थीं बर्फ लुढ़क-लुढ़क कर पिघल रहा था; क्षितिज व्यापक और विशाल लग रहा था और सर्दी की श्वेत धनराशि से पूरी तरह रहित और बिल्कुल साफ था। नदी के उस पार चौड़ी सड़क की चितकबरी पट्टी-सी दिखाई दे रही थी। उसके दोनों ओर बर्फ की जमी हुई निर्मल परतें सूरज की रोशनी में चमक रही थीं। आकाश निर्मल था और वसंतऋतु का नया-नवेला सूर्य बड़ा आनंदित हो चमक रहा था।

लेकिन इनमें से किसी से भी मैना की हालत न सुधरी। उसने बड़ी सरल और शांत नजरों से अपने इर्द-गिर्द देखा, सिर हिलाया देर तक नरमी से शी-शी किया और ज्योंही पाल ने पिंजरे का छोटा दरवाजा खोलकर, उसे बाहर निकाल घास पर रखना चाहा कि, वह अपने डण्डे पर से गिरी और उसके प्राण-पखेरू उड़ गये।

लड़का फुर्ती से पीछे हटा और जब देखा कि मैना का पाँव मौत की ऐंठन से खिचा रह गया है तो उसकी तरस-भरी आह निकल पड़ी। जब मैना अंतिम बार लरजी और शांत हो गई तो पाल के गालों पर आँसू ढलक आये। उसे पिंजरे से बाहर निकाल कर उसने उसे लौट-पलट कर देखा, उसके आँसू पक्षी के पंखों पर चूने लगे।

"हूँ, तो तुम रो भी सकते हो। यानी जब मैं मरूँगा तो तुम मुझ पर रोओगे," एरिफी ने लड़के पर झुकते हुए शांतता से कहा।

पाल ने पक्षी को जमीन पर फेंक दिया और अपनी बाहें एरिफी

---

* छोटा-सा वृक्ष जिसमें सफेद फूल लगते हैं; जिनकी तीखी सुगंध होती है और जिनमें गहरे जामनी फल होते हैं।

के गले में डालकर अपना सिर उसके सीने में गड़ा दिया और सिसकियों के साथ वह अस्पष्ट स्वर में भुनभुनाने लगा।

"ले, अब रो मत, मुन्ने। सब ठीक हो जायेगा। अभी कुछ अच्छे लोग इस दुनिया में बाकी हैं। तुम्हें अभी बरसों जिंदा रहना है। सिर्फ तुम्हारे लिये कुछ दिक्कत पेश आएगी, तुम जरूरत से ज्यादा जिद्दी हो। तुम झुकना नहीं जानते। तुमने घुटने टेकना नहीं सीखा। और यही अफसोस की बात है। लेकिन साथ ही यह भी तो है कि अगर तुम झुके तो वह और भी बदतर चीज होगी; क्योंकि तब हर एक कोई तुम्हें रौंदेगा, कसेगा और तुम पर सवार हो जायेगा। लेकिन चिंता की जरूरत नहीं है सब अच्छा ही होगा। तुम इस अथाह व अपार भव-सागर को सहज ही पार कर लोगे। तुम्हारे लिये महत्व की बात तो है—अध्ययन!"

एरिफी के कुल्हाड़ी की नाईं धारदार और कठोर शब्द सुनकर पाल चुप होगया। दोनों ने मिलकर पक्षी की अंतेष्टि क्रिया की। उन्होंने एल्डर की झाड़ियों की जड़ों में एक छोटा-सा खड्डा खोदा, छोटे-से कफन से उसे ढँका और उस पर मिट्टी छितरा दी।

पाल ने जिसका इस घटना से दिल भर आया था, एरिफी से आज्ञा माँगी कि वह कब्र पर एक क्रास रख दे। वह लकड़ी के एक छोटे से क्रास बनाने में लग गया और दूसरी ओर एरिफी अपने इन भारी विचारों में गुम, जो उसके माथे पर शिकनें डाल रहे थे, एक कोने में बेंच पर जा बैठा और अधखुली आँखों से पाल को देखता रहा।

"मै सोचता हूँ जल्द ही मर जाऊँगा। कभी-कभी तो मुझे बड़ा बुरा महसूस होता है। इसलिए तुम जरा गौर से सुनो।"

पाल ने चाकू मेज पर रख दिया और गौर से उसे सुनने लगा।

"पहली बात तो यह कि मिखाइलो पर मेरे बत्तीस रुबल और बीस कोपेक आते हैं। उसने मुझसे कर्ज लिये थे। और कोई साढ़े सतरह रुबल मेरे बक्स में पड़े हैं। वह मै तुझे नहीं दूँगा; उन्हें पोस्ट-

आफिस में ले जाकर सेविंग्स बैंक में जमा कर दूँगा। वहाँ से मुझे एक छोटी सी पीले रंग की किताब मिलेगी। तू उस किताब को सम्हाल कर रखना कुछ दिन बाद मैं तुझे एक दूकान पर रखवा दूँगा। पाल, मेरे बच्चे! वह जगह तेरे लिये बड़ी ही खराब है। बहुत ही गंदी। या खुदा! लोग क्या वैसे कुत्तों की तरह भी जिंदगी बसर कर सकते है! वे शराब पीते हैं, गालियाँ बकते हैं और सब के सब लम्पट हैं—वह जगह कोई तेरे मौज-मजे के लिए नहीं है। वे तुझे मारेंगे, तुझे गालियां देंगे⋯छः!"

एरिफी बड़ी तेजी से उठा, खूँटी से उसने अपनी टोपी उठाई, सिर पर रखी और घर से बाहर निकल गया। इधर पाल फिर उस मरहूमा मैना की कब्र पर रखने के लिये क्रास बनाने में जुट गया। एरिफी की मृत्यु की भविष्यवाणी से उसे बड़ा मलाल हो रहा था।

बड़ी रात गये जब एरिफी उस रात अपनी झोंपड़ी में पहुँचा तो पाल सो चुका था। उसके बाद एरिफी ने अपनी मृत्यु की बात पाल से फिर कभी न कही।

और दो महीने बीत गये। सहसा पाल में पढ़ने की प्रबल इच्छा जागृत हो उठी। लगातार कई दिनों तक वह किताबें लिये बैठा रहा लेकिन पढ़ना उसे बड़ी मुश्किल से आया। बार-बार उसे अपने कुंद-जहन पर चिढ़ होने लगती और वह घबरा जाता। एक-एक शब्द पर कभी उसे बड़ी देर लग जाती, वह पसीने-पसीने हो जाता और फिर एकदम उसे याद आता कि उस शब्द को तो वह बहुत पहले से जानता आया है। इससे उसे बड़ा क्रोध आता। वह अपने आप से सवाल पूछता: ऐसे शब्द यहाँ क्यों लिखे हुए हैं?

एक बार इसी प्रकार जब वह अपनी पढ़ाई पर क्रोधित था उसने एरिफी से जोर के साथ कह दिया कि ये सारी किताबें नफरत के लिये लिखी गई हैं और उनमें ऐसी कोई एक भी चीज नहीं है जिसकी मुझे जरूरत हो।

"तो फिर तुम्हें जरूरत किस चीज की है ?" एरिफी ने पूछा ।

"मुझे ?" पाल ने सोचा—"देखिये न इसमें लिखा है 'बच्चो, अब बहुत देर होगई । घड़ी थी ।' और आगे चलकर लिखा है—'किला, रस्सी, युद्ध, शब्द, दही, थे !' इन सबकी मुझे क्या जरूरत ?"

"हाँ, कुछ गड़बड जरूर हो गई है इनमें । अच्छा आगे पढ़ो तो ।"

पाल पढे गया लेकिन उसे इत्मीनान न हुआ । उसके दिमाग में जो उलझने वाले प्रश्न थे उसे उनका उत्तर न मिल सका । उस दिन उसने दो कहानियाँ पढ़लीं और हमेशा की भाँति कुछ उलझन में पड़े हुए सवाल किया : इन सबका आखिर क्या फायदा ?

दूर से लड़कों की चीख-पुकार और हँसी उसे सुनाई पड़ी । खिल-खिलाता हुआ सूरज झोंपड़ी की खिडकी में से अन्दर घुस गया । पाल का पारा और चढ गया । अब वह अपनी किताबों पर ध्यान न जमा सका । चिड़ियाँ जोर-शोर से चहचहाने लगीं और पिजरों में कूद-फाँद करने लगीं । पाल ने जो घूम कर उन्हें देखा तो उसे वह दिन याद आया जब वह उन सबको आज़ाद कर देना चाहता था । दूर कहीं से किसी गाड़ी की गड़गड़ाहट की आवाज़ उसके कानों में आई । पाल ने खिड़की में से देखा एक भटियारा गली में से गुज़र रहा था और उसे एकदम ख़याल आया कि वह भूखा है । किसी वजह से उस दिन एरिफी को घर पहुँचने में बड़ी देर लग गई थी ।

गाड़ी की खड़खड़ समीप से समीपतर आती गई और अब वह सामने चौराहे पर दिखाई देने लगी । उसमें एक सिपाही बैठा हुआ था । लेकिन वह एरिफ़ी नहीं था, मिख़ाइलो था । वह क्यों आये ? पाल ने सोचा और बाहर आकर दरवाजे पर आ खड़ा हुआ । दूर से भी मिखाइलो हाथ हिला रहा था मानो उसे बुला रहा हो । पाल ने देखा कि आज उसके बाल अजीब तरह से बिखरे हुए थे । उसकी टोपी भी लापरवाही से सिर पर पड़ी थी और कोट के बटन भी खुले हुये थे । पाल समझ गया कि हो न हो कुछ अनहोनी हुई है ।

"चल रे, जल्दी कर चल बैठ !" मिखाइलो चिल्लाया। "अस्पताल वापस ले चलो !" उसने गाड़ी वाले की पीठ पर हाथ मारते हुए कहा।

"क्या—हुआ ?" पाल चीख पड़ा, उसके मुँह पर मुर्दनी छा गई। उसने मिखाइलो की आस्तीन पकड़कर खींची।

"बड़ा बुरा हुआ। एरिफी पागल हो गया है। उसको दिमाग़ सारा उलझ गया है। वह बावला हो गया है। समझे ? वह सार्जण्ट के पास गया और बोला, 'मुझे मारो, पीटो, सज़ा दो मै ईसाई हूँ। मारो मुझे, मै तुम से बात नहीं करना चाहता। तुमसे कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहता।' गोगोलेव ने उसके दाँतों पर घूसा मारा पर उसने ध्यान ही न दिया। 'मारे जाओ, लगाओ, वह कहता रहा 'दियोसक्यूरी मैं कयामत तक ईसाई ही रहूँगा।' अरे मेरे अल्लाह, कैसी बकवास कर रहा था वह ! उसके बाद उसने अलमारियों में से चीजें निकाल-निकाल कर फेंकना शुरू करदी और उन्हें पैरों से कुचलने लगा। तुम्हारी सारी मूर्तियाँ चकना-चूर कर दूँगा', वह कहने लगा और इसी किस्म की और भी बातें करता रहा। लेकिन उन्होंने भी उसे फौरन बाँधा और अस्पताल ले गये पर वह बड़बड़ाता ही गया। अरे हाँ, यह बात थी। यह सब उन किताबों का नतीजा है ! पढ़ने-लिखने से तकलीफ़ के सिवा क्या मिलता है ? जरा सोचने बैठो और सारे बुरे-बुरे ख्याल तुम्हारे दिमाग़ में आने लगेंगे। बस यही 'क्यों' 'क्या' और 'कैसे' का नतीजा है और क्या ! लोगों का दिमाग़ ख़राब हो जाता है ! बड़े तरस की बात है, पर क्या करें वह है भी तो मेरा पुराना दोस्त।"

पाल के कलेजे पर पहाड़ गिर पड़ा था, वह दुखी और परेशान बैठा था। वह चुपचाप सुनता रहा और कल एरिफी कैसा था परसों कैसा था, उससे पहले कैसा था और इन तमाम वर्षो कैसा था यह याद करने लगा। उस सिपाही में उसे कोई नई बात न दिखाई दी। सिवाय इसके कि वह दिन-ब-दिन दुबला होता जा रहा था; उसकी आँखें गहरी घुसती जा रही थीं; उसकी आँखें जो अब तक

जिद्दी और बेनूर थीं हाल ही में कुछ कपटी हो गई थीं जो कभी तो अस्वाभाविकत: खुश नज़र आतीं और कभी ऐसी नज़र आतीं मानो डर रही हों।

एक बार जिसे बहुत दिन न हुये होंगे, उसने ताशकंद के बारे में—वहाँ की गर्मी, रेत और असभ्य लोगों और उनकी करतूतों के, जिनके कारण उन्हें चूहों की भांति मार दिया गया था, बारे में बात-चीत की थी। लेकिन उसके बारे में बात करने के बाद वह फिर खामोश हो गया और तब से लेकर आज सुबह तक वह गूँगा बना रहा।

"तो क्या वह अच्छे नहीं होंगे ?" पाल ने मिखाइलो के फलसफियाना क्तव्य को बीच में काटते हुए पूछा।

"वह ? यह तो तय है ही ! ज़रूर वह अच्छा हो जायगा। पर बेचारा डाक्टर क्या जाने क्या होने वाला है ? कभी नहीं कह सकता वह ! डाक्टर तो इलाज कर सकता है बस। उससे ज्यादा वह कुछ नहीं कर सकता। तुमने दरवाजे में ताला भी लगाया या नहीं ? ड्रायवर, रोको ! ताला लगाया था ऐं ?"

"क्या वाकई डाक्टर ने कुछ कहा है ? मुझे बताइये ना, क्या कहा उसने ? अरे आपने ड्रायवर को क्यों रोक लिया ? चलिए, चलें, जल्दी कीजिए मिखाइलो चाचा।"

"क्या मतलब है तुम्हारा, चलो ? जब झोंपड़ी खुली पड़ी है तो कैसे चल सकते हैं ? क्या अजीब छोकरा है यह ! कहता है चलो, चलें अरे सारा घर चुराकर ले जायेंगे वे। ड्रायवर लौटाओ गाड़ी। चलो वापस चलो बेबकूफ कहीं का !"

"अच्छे रे मेरे चाचा !नहीं, नहीं वापस नहीं। चलिए वहीं चलें एरिफी चाचा के पास। झोंपड़ी को मारो गोली !" पाल ने परेशान हो चीखकर कहा।

"नहीं, यह नहीं हो सकता, नादान लड़के ! मैं खुद वहाँ वापस जाऊँगा। मैं खुद······ड्रायवर चले चलो और इस बच्चे को अस्पताल

ले जाओ। अच्छा, जाओ बेटे। पागलखाने ले जाना इसे, अच्छा। और पाल, जब तू वहाँ पहुँच जाय तो पूछना······"

लेकिन गाड़ी घड़घड़ाती हुई चल दी और पाल यह सुन ही न सका कि उसे आखिर पूछना क्या है। वह गाड़ी में झूमता रहा और ड्राइवर को कोंचता रहा, "जरा जल्दी चलाओ !"

"जल्दी ही पहुंचेंगे, घबराओ नहीं", ड्राइवर ने विश्वास के साथ कहा। उसने अपने होंठ काटे, हवा में हण्टर घुमाया और चीखकर घोड़े को डाँटने लगा, "अबे तू चल किधर को रहा है अहमक के बच्चे ? क्या तू भी पागल हो गया है ?" और फिर लगाम खींचते हुए उसने पहले तो घोड़े को दाहिनी ओर मोड़ा और फिर बायीं ओर। इस पर घोड़े ने गुस्से से घरघर के शब्द मुँह से निकाले और असंतोष दर्शाते हुए अपनी छोटी दुम पीछे को मारी।

मिखाइलो की दी हुई इस बदखबरी से ऐसा लगा मानो पाल का मस्तिष्क उन घनघोर घटाओं से आजाद हो गया जो उसे उस समय तक घेरे हुए थी। आज पहली बार वह अपने इर्द-गिर्द वास्तविकता देख सकता था। स्वभावतः ही वह सतर्क था, सशंक और अविश्वासी था। उसने भरपूर ताकत से क्षण-प्रति-क्षण बढ़ती हुई उस हृदय विदारक पीड़ा का गला घोंटना चाहा जो उसके शरीर को भेदकर फूट रही थी। अब वह अकेला और निराश्रय महसूस कर रहा था।

ड्रायवर, गली-गली में चलते हुए लोग—सबके सब आज उसे कल से अधिक अपरिचित व अजनबी जान पड़ें; उन्होंने उसके अन्दर अहितकर एवं अवांछनीय परिणाम का एक भयावना सन्देह उत्पन्न कर दिया। यहाँ तक कि गर्मियों का वह चमकदार आसमान भी, जो कल गरम था और दुलार कर रहा था, आज ऐसा बेदिल और उदासीन प्रतीत हो रहा था मानो उसे पाल से कोई नाता ही न रहा हो।

"आपका क्या ख्याल है, वह अच्छे हो जायेंगे?" जब वे तारों वाले

अहाते के करीब पहुँचे तो उसने ड्रायवर से पूछा। उस अहाते के पीछे ही अस्पताल की पीली इमारत खड़ी थी जो बड़ी रूखी और निषेध करती हुई लग रही थी।

"वह ? हाँ वह चंगा हो जायगा। अबे बायीं बाजू शैतान की पिशाब, बायी बाजू ! यह तो साली बस फिजूल त्रास देती है !"

लेकिन इससे पहले कि वह शैतान की पिशाब बायी ओर मुडे पाल गाड़ी से नीचे कूद चुका था और पीली दीवार की ओर ऐसा दौड़ा मानो किसी निशाने पर तीर जाकर लगे।

जम्हाई लेते हुए दरवाजे ने पाल को निगल लिया। पर अब कहाँ जाय वह ?

"क्या चाहता है रे ?" किसी ने कहीं से मालूम किया।

पाल जल्दी-जल्दी कुछ बड़बड़ाया; उसका सिर झुका हुआ था और वह यह कोशिश कर रहा था कि उससे बोलने वाले व्यक्ति की ओर न देखे।

"एक सिपाही पागल हो गया है आज—वह यहाँ लाया गया था—बताओ मुझे—कहाँ है वह ?"

"अच्छा, हाँ तो सीधे चले जाओ, बिल्कुल नाक की सीध में। कौन है वह तुम्हारा—बाप है क्या ?"

पाल ने अपना सिर उठाया। लाल कमीज में मलबूस एक चौड़ी पीठ वाला व्यक्ति उसके सामने जा रहा था।

"क्या वह तेरा बाप है ?" इसी व्यक्ति ने पाल की ओर बिना मुड़े ऊँचे स्वर से पूछा। अचानक वह व्यक्ति ऐसे यकायक और बिना आशा के रुका कि पाल का मुँह उसकी पीठ में जा लगा।

"निकोलस निकोलाविच, यह देखो उस सिपाही का लड़का आया है।"

चश्मा लगाये हुए एक साहब पाल के पास आये और उसकी ठोढ़ी हथेली से उठाकर बड़ी नम्रता से बोले : "क्या चाहते हो

लड़के ?"

पाल ने चकित नेत्रों से उनकी ओर देखा। इन महाशय का चेहरा दुर्बल, पीला और छोटा था।

"तो क्या चाहते हो तुम, ऐं ?"

"मै उनसे मिलना चाहता हूँ·······

"नही, तुम उनसे मिल नही सकते—उ ह हूँ।"

पाल के चेहरे पर झुरियाँ पड़ गई; वह आहिस्ता-आहिस्ता रोने लगा। उसके सिर में चक्कर आने लगे।

"तो फिर में किस तरह··········" उसने रोते हुए पूछा।

लेकिन वह महाशय वहाँ से जा चुके थे। केवल वह लाल कमीज और सफेद एप्रन (ऊपरी वस्त्र) धारी व्यक्ति वहाँ बाकी था। कमर पर हाथ बाँधे, होंठ काटते हुए वह पाल को बड़े सोच के साथ देख रहा था। पाल दीवार से बुरी तरह चिपट गया और दहाड़ने लगा।

"अच्छा, अच्छा आओ, मेरे साथ आओ, जल्दी करो कही डाक्टर न देख ले हमें। चलो ना।" और पाल का हाथ पकड़कर वह उसे बरामडे के दूसरे किनारे पर फुर्ती से ले गया।

"वह देखो !"

पाल को पीछे से पकड़कर ऊपर उठा लिया गया और दरवाजे पर लगे गोल शीशों से उसका मुँह टिका दिया गया। उसी कमरे के अन्दर एरिफी था और उसकी जोरदार बुलन्द आवाज गूँज रही थी।

एरिफी एक लम्बा सफेद लबादा पहने कमरे के बीच में खड़ा था और उसके दोनों हाथ कमर पर बाँध दिये गये थे। लम्बी नाइटकैप उसकी पीठ पर लटक रही थी। उसका सिर और चेहरा मुँडा हुआ था जिससे उसके बड़े-बड़े कान और भी भयावने लग रहे थे। उसके गाल पीले पड़कर पिचक गये थे और गाल की हड्डी साफ दिखाई दे रही थी। उसकी आँखें खुली हुई थीं और अन्दर इस कदर धँस गई थीं कि काले गढ़े मालूम पड़ते थे। एक आँख के नीचे कुछ चोट

का लाल निशान था। उसके बाँये गाल पर जो लाल तारा-सा दिखाई दे रहा था उस पर से खून की बूँदें रस रही थीं जो एक फीते की नाईं उसके गालों पर चक्र बनाकर, गर्दन तक आती और उसके लबादे के कालर में पहुँच कर लुप्त हो जातीं। एरिफी की ऊँचाई और दुर्बलता उसे भयभीत किये दे रही थी।

"तुमने मुझे जबरदस्ती इस कैदखाने में ठूँस दिया है।" वह चिल्लाया, उसकी आँखें भयंकर रूप से चमकने लगीं। "मै भी अपने खुदा के नाम के लिये यह सब कष्ट भुगतूँगा और कयामत तक भुगतता रहूँगा। मैंने तुम्हारी मूर्तियाँ नष्ट की हैं, तुम्हारी वेदियाँ धूल मे मिला दी हैं। तुम्हारी वेदियाँ मैंने मिट्टी कर दी है। तुमने अब तक मेरी जबान नहीं खीची है इसीलिए मै तुम्हें अपराधी ठहराता हूँ, ओ पापियो ! तुम सच्चाई के खुदा को भूल गये हो और अंधेरे में भटक रहे हो, तुममें गतिहीनता आ गई है। श्राप, श्राप, श्राप। तुम छोटों की आत्माएँ कलुषित करते हो। तुम्हारी कभी मोक्ष नहीं होगी। तुम तो ठीकरे हो, टुकड़े ! तुमने मुझे सताया है, त्रास दिया है। क्यों मारा है तुमने मुझे ? क्यों पीटा है ? इसलिए कि मेरे दिल में सत्य है—ईश्वर है।........"

उसकी गहरी आवाज कभी गरजन करती और कभी सरगोशी बन जातीब—ड़ी उदास, नरम-सी सरगोशी जिसे सुनकर पाल ऐसा काँपने लगता मानो उसे बुखार चढ़ आया हो और डर के मारे खिड़की से पीछे हट जाता।

"मैं अपनी मौत की राह देख रहा हूँ, मूर्तिपूजको। मै अपने यश की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। वे जल्लाद और दण्ड देने वाले कहाँ है ?

"शाप, शाप, शाप !"

असभ्य और भयंकर चिल्लाहट से दरवाजा हिल गया और जिस शीशे में से पाल वह सब देख रहा था वह भी काँपने लगा।

"अच्छा, बस काफी हो गया अब। जल्दी से घर पहुँच

जाओ वरना डाक्टर तुम्हें देख लेगा।"

एरिफी की चीख-पुकार के मध्य पाल बरामदे से निकल आया और मूर्छा की भाव भंगिमा लिये बाहर आ गया। एरिफी के शाप और उसकी भयंकर फुसफुसासट उसके कानों में गूँज रही थीं। एरिफी का कोण वाला मुँडा हुआ पीला चेहरा उसे भयंकर आकार धारण करता हुआ दिखाई पड़ा, और बड़े जोर से चमकने लगा पर हाय वह चमक काली और अँधियारी थी! फिर सहसा उसके अनेकों छोटे-छोटे चेहरे बन गये जो शनैः-शनैः पाल की आँखों के आगे छिटक जाते और उसके दिल को हजार नजरों से छेद देते, जिससे उसका हृदय बढ़ती हुई और भारी पीड़ा व ग़म से भर जाता।

पाल ने एरिफी के साथ अपनी जिन्दगी के जो दिन गुजारे थे उनके विविध चित्र—जब वह स्वस्थ था, दाढ़ी रखता था और खामोश रहता था—उसकी नजरों में नाचने लगे। ये तस्वीरें उसे दीखतीं और अदृश्य हो जातीं, दूसरी तस्वीरें सामने आती और वे भी अदृश्य हो जातीं। लड़के का दिमाग चक्कर में पड़ गया। अब उसका सारा अतीत उसके सामने आने लगा और फिर यकायक वह एक विचित्र अन्धकार में झोंक दिया गया—जिसमें न कोई विचार था न कोई कल्पना। एक बार फिर उसके सामने बीती हुई घटनाओं की एक जंजीर आई जिसमें क्रम नहीं था। जब उसने उन्हें याद किया तो उसे बड़ा कष्ट हुआ। एरिफी पर उसका तरस, अपने आपका भय और विचारों की अव्यवस्था एक दूसरे से बदलीं, उनमें मिलीं, और उसका सिर कंधे और सीना फाड़ने वाला पत्थर बन गईं।

सामने नदी बह रही थी। उसमें से सर्द हवा के झोंके आ रहे थे अन्धकारमय और कलकल करती हुई वह नदी जो पूरी तरह रात से ढँकी हुई थी दूर तक बहती गई और गुम हो गई। उसके ऊपर आकाश था, जिस पर छितरे जीर्ण-शीर्ण बादल छाये हुए थे। इन टूटे-फूटे बादलों के टुकड़ों में से कभी दो-तीन तारे चमक उठते थे। सारा

आकाश त्रस्त था, बूढा हो चुका था। ऐसा लगता था मानो अभी नीचे आकर शांत, स्वप्निल नदी में विलीन हो जायगा जिसकी अन्धकारमय लहरों में दयनीय, बेसहारा आसमान के छोटे-छोटे नीले टुकड़े और एकाकी तारों का प्रतिबिंब दीख रहा था। नदी के उस पार क्षितिज अन्धकार पूर्ण और भयंकर रूप से स्तब्ध हो चुका था।

पाल दौड़ता हुआ झोंपड़ी को लौटा लेकिन वहाँ ताला लगा हुआ था। कुछ क्षण वहाँ वह स्थिर खड़ा रहा, फिर एल्डर झाड़ियों के करीब लेट गया और मुँह ऊपर को किये आकाश में तैरते हुए बादलों को देखने लगा—कुछ देर बाद उसकी आँख लग गई—रात भर नींद में वह भयावने स्पप्न देखता रहा।

पीठ में ज़ोर-जोर के थप्पड़ों की मार से पाल जाग पड़ा। एक क्षण के लिए उसने आँखें खोलीं। लेकिन फौरन बन्द करली क्योंकि धूप सीधे उसके मुँह पर पड रही थी और वह उससे बचना चाहता था। उसी क्षण उसने एक जानी-पहचानी सूरत देखी जो उसके ऊपर झुकी हुई थी।

उसी वक्त उसे सब कुछ याद आगया।

"अब उठ बैठ !" किसी स्त्री की आवाज़ उसके कानों में पडी।

वह हड़बड़ा कर उठ बैठा। सामने खड़ी मारिया दयालु जिज्ञासा-भरे नेत्रों से उसे देख रही थी।

"चल मेरे घर, नामुराद ! देख तो कहाँ सोया पड़ा है तू ! रात हमारे घर क्यों नहीं आगया ?"

पाल ने कोई जवाब न दिया। उसे मारिया फूँटी आँख नहीं भाती थी। वह इसीलिये उसे नापसन्द थी कि वह बहुत लम्बी-चौड़ी और बलशालिनी थी, बहुत ज्यादा गाली-गलौच करती थी, क्योंकि उसकी आंखें भूरी थीं, आवाज कर्कश और खरेंदार थी। असल में मारिया के शक्तिशाली, सदैव सतर्क और झगड़ालू व्यक्तित्व की कोई भी तो बात उसे पसन्द न थी।

वे साथ-साथ वहाँ से घर गये।

"हाँ तो, अब मरने को मत फिर, समझा ? सब ठीक हो जायगा। खुदा और उसके नेक बन्दे तेरी मदद करेंगे। तू जिन्दा रहेगा। हां, जरा होशियार रहना। चीजों को देख, अपने को हमेशा पैना बनाये रख और भला-बुरा पहचान। जिन्दा रहना सीख, गो वह है बड़ी

मुश्किल चीज। तुझे हमेशा देख-भाल कर चलना होगा, वरना बेवकूफ़ ही रहेगा। शायद इसी में—एरिफ़ी के पागल होने मे कुछ बेहतरी होगी। एरिफी ने क्या दिया था तुझे ? न ठीक से खैर-खबर ली, न ठीक से पढ़ाया-लिखाया। बस लाड़-प्यार करता रहा। वह तुझे ऐसा ही समझता रहा कि तू अब बड़ा होगया है। क्या यही तरीका है बच्चों की परवरिश का ? तू बच्चा है और तेरे साथ बच्चों जैसा ही व्यवहार होना चाहिये और बुरा न माने तो साफ कहदूँ, वह तो मूर्खों का भी शिरोमणि था।

"इन्सान को जिंदा रहना चाहिये और अपनी जिंदगी बेहतर बनानी चाहिये और वह उसके बजाए किताबें पढ़ता रहता था। किताबें पढ़ना कहाँ की अक्लमंदी है ? तुझे यहाँ जिंदा रहना है और दूसरे लोगों से अच्छी तरह पेश आना है ! जरा ताकत बटोर, लोगों से सम्मान हासिल कर, तेरी सारी किताबों से कहीं ज्यादा महत्त्वपूर्ण काम यह है। ग्यारह साल तक वह सिपाहीगिरी करता रहा और कहीं भी उसे कोई फायदा नही हुआ।"

पाल गुस्से में सब कुछ सुनता रहा और मारिया की इस लड़ाकू फिलासफी के विरुद्ध सिर्फ कुछ बड़बड़ाया और चुप रहा। पर जब उसने एरिफी को गालियाँ दी और उसे मूर्ख कहा तो उसने बड़े साहस से मारिया की पोशाक जोर से पकड़ कर खींची मानो अपने अभिभावक के बारे में आगे हवाले देने के लिए उसे मना कर रहा हो। लेकिन वह अपने धाराप्रवाह वक्तव्य में इतनी बह गई थी कि उसका मन्तव्य समझ न पाई और उसी उत्तेजना के साथ जारी रखती हुई बोली :

"दूसरों पर विश्वास न कर। अगर वे तुझसे प्यार-मुहब्बत करें तो समझ ले उसमें कोई झूठ या फरेब छिपा हुआ है। अगर वे तेरी बड़ाई करें तब भी उसे झूठ ही समझना; लेकिन अगर वे तुझे डाँटें-फटकारें, उलाहना दें तो समझना वे तेरे खैरख्वाह हैं, सच्चे आदमी हैं। चाहे उनकी गालियाँ बहुत ज्यादा ही क्यों न हों। असल बात तो

यह है कि हरेक से चौकन्ने रहना। किसी से भी तेरा काम पड़े तो रुक और सोच—कहीं वह तुझसे नाजायज फायदा तो नहीं उठाना चाहता और जब तुझे इत्मेनान हो जाय कि नहीं वह ऐसा नहीं कर रहा तो फिर आगे बढ़। लेकिन तब भी रहना चौकन्ना। अपने निर्णय को बिल्कुल सही और आखिरी न समझना। तुझे अपने प्रति भी उतना ही सशंक रहना चाहिये जितना कि तू किसी अजनबी से रहेगा। क्योंकि इन्सान हमेशा ही अपना भला-बुरा ठीक नहीं सोचा करता, वह भी प्रायः चूक जाता है। वह समझता तो है, 'हाँ, यह ठीक है', लेकिन असल में वह भूल करता है। नतीजा यह होता है कि वह गड़बड़ में पड़ जाता है!"

अपने ही तर्क-वितर्क में मारिया इतनी गुँथ गई कि उसे इसका ध्यान ही न रहा कि वह किसके सामने बातें कर रही है और हर बात को विवरणसहित बयान करते-करते आखिरकार वह ऐसे नुक्ते पर पहुँची कि अचानक कह गई :

"और जब औरतों से पाला पड़े तो बड़े चौकन्ने रहना!"

अब सहसा उसकी नजर अपने श्रोता पर पड़ी। वह ठमक-ठमक कर छोटे-छोटे कदमों से उसके पीछे चल रहा था, मारिया के मर्दानावार हृष्टपुष्ट कदमों क साथ कदम मिला कर चलना उसके लिए बड़ा कठिन साबित हो रहा था। लाल कमीज पहने, नंगे पैर और बाल बिखरे यह चेचक मुँह दाग चेहरे वाला पाल, जिसकी आँखों में अब भी नींद भरी हुई थी इतना गया-बीता और दयनीय लग रहा था कि मारिया की सबल आकृति के सामने बिल्कुल हेच प्रतीत हो रहा था।

जोर के धँसके ने मारिया के वक्तव्य पर विराम का काम किया। फिर वहाँ से अपने घर तक उसने पाल से और कुछ न कहा।

जब वे थाने के बरामदे में दाखिल हुए तो मिखाइलो हाथ में कोई वर्तन लिये उनके समीप आया।

"अरे, तुम आ गये! बहुत अच्छा हुआ! खाने का वक्त भी हो

गया है, क्यों मारिया है ना ? तुम कहाँ चली गई थीं ?" और फिर पाल की ओर घूम कर, "तू कहाँ सो गया था रे ?"

"वहाँ.......झोंपड़ी के पास।"

"अजीब लड़का है यह !" मिखाइलो ने सोचते हुए कहा और उसके पीछे-पीछे कमरे में दाखिल हो गया।

"मरिया ने पहले ही अपना कोट उतार दिया था और स्टोव जला रही थी।

"मैं कुछ ताजा पनीर लाया हूँ, कहाँ रखूँ इसे ? क्यों ?"

"कहाँ से ले आये यह पनीर ?" मारिया ने प्रफुल्लित हो पूछा। पति के हाथ में से बर्तन लेते हुए उसने उसे सूँघा, "अच्छा है, ताजा मालूम होता है !"

"एक छोटे-से किसान ने यह भेंट दी है। उसका एक काम कर दिया था—" मिखाइलो ने खुलासा बताते हुए कहा। चालकी से बीवी को ओर आँख मारते हुए उसने जीभ चाटी।

"अरे हौवे कहीं के !" मारिया ने उसकी पीठ में प्यार से तिक्का नोचते हुए कहा।

"कमाल की औरत है, यह बीवी भी मेरी ! मुझे और भी कहना है तुझसे। पर पहले खा लें ! जरा अच्छी तरह, तबियत से खिलाना, तब बताऊँगा हाँ।"

"हूँ, अब बता दो ना," मारिया ने फुसलाया, उसके चेहरे पर जिज्ञासा झलक पड़ी।

मिखाइलो ने जेब में हाथ घुसेड़ा और कुछ खनखन करती हुई रेज-गारी निकाली, उसके मुँडे हुए चमकदार चेहरे पर भी गंभीरता छा गई।

"कितने हैं ?" मारिया ने खुश हो कानाफूसी के स्वर में कहा।

"डेढ़ रुबल और पाँच कोपेक और एक बाल्टी-भर ककड़ियाँ।

"बस ?" मारिया निराशा में भुनभुनाई। "बुध को इससे कहीं ज्यादा लाये थे तुम।"

"वह बुध भी तो था। आज शुक्रवार है। मेले तो आये दिन होते ही रहते है। जानती हो आज वह नया सार्जण्ट कोपेकों है ना, साला मुझे बड़े शक की निगाहों से देख रहा था। सत्यानाश हो उसका ! शादी में उसे ईटों के दो गोदाम मिले थे और ढेरों की रकम अलग से। और अब एक दम से कमबख्त पाकबाज बन गया है। काश, मेरा भी ब्याह वैसा ही होता, ढेरों चीजें दहेज में आतीं !"

"ऐ नमकहराम ! करूँ तुम्हारा ब्याह इस सींखचे से ?"

इस बातचीत के दौरान पाल दरवाजे पर खड़ा उन्हें देखता रहा। उसे महसूस हो रहा था वह बेकार वहाँ गया, उस पर कोई ध्यान ही नहीं दे रहा मानो उसका उन लोगों से कोई सरोकार ही नहीं। उसने कल्पना करने की कोशिश की कि आखिर बाद में उस पर क्या गुजरने वाली है लेकिन सफल न हो सका।

उन दोनों में जो आमोद-प्रमोद का विनिमय हो रहा था उसमें दखल देते हुए उसने कहा, "क्या वहाँ जल्दी ही चलेंगे हम ?"

"कहाँ ? कहाँ चलेंगे ?" मिखाइलो ने उसकी ओर मुँह फेर कर पछा।

"अस्पताल को।"

"वहाँ जाने की क्या जरूरत है तुझे ? क्या पागल हो गया है तू ? यहाँ पटरी पर बैठ जा और थमा रह। अभी खाना तैयार हुआ जाता है, सब खायेंगे। हमारे बच्चे भी अब स्कूल से आते ही होंगे। फिर तू उनके साथ बाहर जाकर खेलना, अच्छा।"

पाल ग़म में डूबा, पटरी पर बैठ गया। उसके आस-पास क्या हुआ न उसने देखा और न सुना। जब उसे खाने के लिये बुलाया तो वह मेज पर जा बैठा पर उससे खाया न गया, उसने अपना चमचा नीचे रख दिया।

"यह क्या कर रहा है ?" मारिया ने कुछ सख्ती से पूछा।

"मै नही खाना चाहता," पाल ने आहिस्ता से जवाब दिया।

उन दोनों ने बारी-बारी उसे लेक्चर पिलाये। लेकिन इससे उसके खाने की रफ्तार में तनिक बाधा भी न पड़ी। बड़ी चुस्ती के साथ वे शोरवे की भरपूर बड़ी रकाबी जिसमें से चरबी और खूब भरी हुई बंदगोभी की सुगध निकल रही थी साफ किये जा रहे थे।

"शाप !" यह शब्द पाल के कानों मे ऐसा गूँजा मानो धातु के हथौड़ों का मंद प्रहार हुआ हो।

"शाप !" उसने मंद स्वर में इसी शब्द को दोहराया और एरिफी के पिचके हुए गालों वाले बेदिमाग चेहरे की कल्पना की। पाल के होंठ हिले और वह काँप उठा। उसके चेहरे पर खून उतर आया पर फिर शीघ्र ही एक गरम जहर के साथ लौट गया। उसका चेहरा एक क्षण के लिए दमकता और दूसरे ही क्षण पीला पड़जाता। उसके गालों और माथे पर के माता के दाग घने लाल दागों में परिणत हो जाते।

"क्या बड़बड़ा रहा है वहाँ तू ? कोचरे कपटी ऐं !" मिखाइलो मेज पर से उठ कर चीखा।

"मै जाता हूँ," पाल ने दृढता से कहा और बैंच पर से उठ गया।

"कहाँ ?" मारिया ने सख्ती से पूछा।

"मै अपनी झोंपड़ी में जा रहा हूं।"

"वहाँ काहे के लिये ? यहाँ अब एक सिपाही आ गया है। वह तुझे नहीं जानता। फौरन वहाँ से निकाल बाहर करेगा वह तुझे। बैठ जा यहीं चुप होकर और जरा होश की दवा कर, समझा !"

पाल बैठ गया। मिखाइलो उस सूती पर्दे के, जो बिस्तर के ऊपर सजा हुआ था, पीछे जाकर अदृश्य हो गया और जब वह उस पर लेटा तो पर्दे की ग़म से भरी आह निकल पड़ी।

"और चिड़ियों का क्या होगा ?" पाल ने क्षण भर बाद कहा— उसने प्रश्नवाचक दृष्टि मारिया पर डाली।

मिखाइलो ने पर्दे के पीछे से जवाब दिया, "मैंने वह सब उड़ा दी। और तेरा सारा सामान-वामान यहाँ ले आया।" उसने लेटे-लेटे जम्हाई

ली। "नहीं, नहीं तुझे वहां जाने का कोई काम नहीं, समझा।"

"सन्दूक कहाँ है ?" पाल ने कुछ देर बाद पूछा।

मिखाइलो अब खुर्राटे भर रहा था। मारिया खिड़की के पास बैठी सी-पिरो रही थी। किसी ने भी उसके सवाल का जबाब न दिया। पाल एक कोने में गया और पटरी पर लुढक गया।

"अब मेरा क्या होगा ?" उसने सोचा।

उसकी आँखों के सामने नदी में लहरें उठ रही थीं और छोटी-छोटी लकड़ियाँ उस पर तैर रही थीं। उनमें से कुछ तो किनारे पर धकेल दी गई थी जो वहीं पड़ी रहीं। पाल को वह जमाना याद हो आया जब वह उन्हें उठाकर फिर पानी में फेंक दिया करता था। वे उसे पसन्द न थीं क्योंकि वे अपनी राह पर आगे नहीं बढती थी। वह चाहता था वे बहती हुई उस जगह तक चली जायँ जहाँ नदी मुड़कर गायब हो जाती थी। यह नदी जाती कहाँ है ? शायद किसी और नदी में जा मिलती है और फिर दोनों एक साथ समुद्र में विलीन हो जाती हैं। एरिफी ने उसे यही बताया था। समुद्र—जिसमें अथाह पानी है, इतना कि यदि कोई चलता-चलता इतनी दूर चला जाय कि आँखों से ओझल हो जाय तब भी उसे उसका दूसरा किनारा नहीं दीख सकता। उसे कोई एक दिन में क्या दो-तीन दिन लगातार चलने पर भी नही देख सकता। कहीं यह एरिफी का अपना विचार तो नहीं था ? वह तो पागल हो गया है ! क्या हमेशा से तो पागल नहीं था वह ?

पाल अपने कोने में बैठा एरिफी, समुद्र और इसी प्रकार की बातें सोचता रहा और सोचते-सोचते हमेशा वह एक ही सवाल पर लौट आता—कल उस पर क्या गुजरने वाली है ?

एक तेज खुसर-पुसर ने उसका विचार-क्रम तोड़ दिया। वे समझे थे वह कभी का सो गया होगा। पर्दे के पीछे दम्पत्ति उसी के बारे में बातें कर रहे थे।

"वह सन्दूक के लिये पूछ रहा था," मारिया ने कहा।

'ऐं ?" मिखाइलो ने चौक कर पूछा ।

"पूछ रहा था सन्दूक कहाँ है ?"

"कैसा शैतान है यह छोकरा भी !" मिखाइलो ने हैरान होकर खुसर-पुसर की । चलो झटपट उसे उठाकर सेवलिच पहुँचा दें । जाहिर है उसे मालूम है कि सन्दूक में कुछ रुपये-पैसे हैं। अच्छा ऐसा कर मारिया उसे कल ही ले जाना ।"

"तुम्हें तो ऐसी हबड़-दबड़ लगती है कि बस ! कल ही ले जाना। ऐसी कौन आफत आ रही है ! तुम तो ऐसे घबड़ा रहे हो जैसे मुर्गी ! ऐसा डर काहे का तुम्हें ?"

"यों ही, तुम तो जानती नहीं हो अगर उसने अचानक पूछ लिया उसमें पैसे भी थे ? ऊँह ? तो क्या जवाब दोगी ?"

"बौ——ड़——म !" मारिया ने तिरस्कार-भरे स्वर में भुन-भुनाते हुए कहा । उसके बाद उनकी कानाफूसी इतनी धीमी पड़ गई कि पाल को कुछ सुनाई न दिया ।

उनके इस वार्तालाप ने उसमें उनके विरुद्ध कोई नया भाव नहीं उत्पन्न किया हालाँकि वह यह समझ गया कि वे लोग उसे लूटने की योजना बना रहे है। लेकिन वह उसके प्रति भी उदासीन था। कुछ तो इसलिए कि वह पैसे की शक्ति से अपरिचित था और कुछ इसलिए कि वह एरिफी की दर्दनाक हालत के सिवाय कुछ सोच ही न सकता था। उसका सारा ध्यान उस रहस्यमय 'कल' पर केन्द्रित था जो उसकी अब तक गुजरने वाली जिंदगी के दरवाजे बन्द कर देगा ।

मारिया और मिखाइलो उसे कभी न भाये और इस खास दिन तो उसकी उनके प्रति ग्लानि और भी बढ़ गई । उसने महसूस किया कि न वे उसे पसन्द करते है और न ही वहाँ रखना चाहते हैं। वह यह भी जानता था कि उसे अधिक दिन उनके साथ नहीं रहना है। वह तो यहाँ तक अधीर हो गया कि कल भी उनके साथ रह सकेगा या नहीं इस पर भी उसे शक होने लगा ।

अब जब नींद में वे खुर्राटे लेने लगे तो ऐसा लगा मानो एक दूसरे से होड़ लगी हुई है और उस वक्त तो वह उसे और भी बुरे लगे। कोने में बैठा हुआ वह ऊँघ रहा था और कल के विचार उसे घेरे हुए थे—कल जिसके बारे में वह कुछ भी न जानता था।

अबासियाँ और कराहें पर्दे के पीछे से सुनाई पड़ रही थीं। मिखाइलो बिखरे बाल लिए, चेहरे पर नीद की खराशें लिए कमरे में लड़खड़ाता आन पहुँचा।

पाल की ओर घूमकर उससे पूछा, "सो रहा है ?"

"नहीं !"

"हमारे बच्चे तो नही आये थे ?"

"जी नही।"

"न—हीं, नही, जो बात पूछो नहीं कह मारा। मेरा ख्याल है वे अपनी चाची के यहाँ गाँव में चले गये होंगे। समावार चढ़ा देना चाहिये। जल्दी ही काम पर भी जाना है।"

वह बरामदे में चला गया।

उसके बाद मारिया बिस्तर से उठी। उसने पाल की ओर देखा और बालों में कंघी की। उसका जूड़ा नारियल के गोले की भाँति मोटा था और उसे देखकर वह सोचने लगा कितनी जवान है, एक बाल भी तो नहीं सफेद हुआ अब तक !

"क्यों रे पाल क्या सोच रहा है ? क्या इरादा किया तूने करने का ? क्योंकर बसर करेगा जिन्दगी ?" सहसा मारिया ने उसकी ओर मुँह करते हुए पूछा और मुँह बनाने लगी क्योंकि कंघी बालों को सुलझाने के बजाय उन्हें फाड़े दे रही थी।

"मै नही जानता।" पाल ने सिर हिलाते हुए कहा।

"हूँ-हूँ !" मारिया बुदबुदाई। "तो फिर कौन जानता है ? मक्कार कहीं के !"

उसने साँस ली और चुप हो गई। पाल ने भी कुछ न कहा।

यह खामोशी तब टूटी जब मिखाइलो खौलती हुई चायभरा समावार ले आया। वे मेज पर बैठ गये और निस्तब्ध वातावरण में उन्होंने चाय पी।

"हाँ, तो क्या कहता था तू ?" मारिया ने तीसरा प्याला लेते हुए बा शुरू की। वह कभी की गरम हो चुकी थी और इतना पसीना उसे आ रहा था कि उसे अपने ब्लाउज के ऊपरी दो बटन खोलने पड़े।

"सुन कान खोलकर मैं क्या कहती हूँ, और याद रखना इसे।" उसने बड़ी आहिस्तगी से कहा और फिर कुछ इतराते हुए रुक गई। "कल तुझे मैं एक मोची के यहाँ ले चलूँगी, वह मेरा जानने वाला है। वहां तू नौसिखुआ बन जाना। जरा ठीक से रहना, इधर-उधर बद-माशी मत करते फिरना। काम करना, पढ़ना और मालिक व दूसरे कामकरों की बातें गौर से सुनना। तब कहीं जाकर तू आदमी बनेगा पहले-पहल जरा दुश्वारी होगी; पर जरा सब्र से काम लेना। कुछ दिनों में आदत पड़ जायगी तो आसानी होगी। तेरे आगे पीछे तो कोई है नही। छुट्टियों के दिन यहां चले आना, हमें ही अपना रिश्तेदार समझना अच्छा। यहाँ हमारे साथ खाना-पीना और रहना। हम यहाँ हमेशा तुझे अच्छी तरह बुलायेंगे और खुश होंगे। समझा कि नहीं ?" पाल समझ गया और यही जाहिर करते हुए उसने अपना सिर हिला दिया।

"यह मत भूल जाना कि तेरी देख-भाल किसने की ? मेरा मतलब है हमें मत भूल जाना ! हम भी तुझे नहीं भूलेंगे !" मिखाइलो ने इस अंदाज में कहा मानो कोई सबक समझा रहा हो। उसने पाल की ओर उसकी प्रतिक्रिया जानने के लिए देखा।

पाल की निगाहें ऊपर उठीं मानो वह पूछना चाहता हो, "क्यों न भूलूँ तुम्हें ?" और फिर निगाहें हटालीं।

मिखाइलो ने निराशा से आह भरी और बड़ा उत्तेजित हो अपनी

गरम चाय फूँकने लगा।

फिर निस्तब्धता छा गई। पाल ने उस जोड़े की ओर कनखियों से देखा और उसे यह जरूरत महसूस हुई बल्कि यों कहना चाहिये उस ने यह हक समझा कि कोई ऐसी बात करे जिनसे उन्हें परेशानी हो। पहले तो उसे कुछ कारगर चीज न सूझी पर बाद में याद आ गई।

"सन्दूक कहाँ हैं ?" उसने अचानक पूछ लिया।

दम्पति ने आँखें चार कीं।

"संदूक मेरे पास है। संदूक का तू ख्याल भी न कर। वह वहाँ हिफाजत से रखा रहेगा। जब तू बड़ा होजाय तब आकर कहना, 'लाओ मेरा संदूक दो।' और मैं फौरन तुझे वह थमा दूँगा। 'यह रहा तेरा संदूक पाल, इसे किसी ने छुआ तक नही है।' हां, हां बिल्कुल। और उसमें जो तेरे कपड़े-लत्ते है—कमीज, पतलून वगैरह वे बेशक तू निकाल ले उसमें से।"

भाषण समाप्त हुआ, मिखाइलो ने गहरी साँस ली। उसके मुँडे हुए चेहरे पर दुःख और भय के मिश्रित भाव झलक आये।

मारिया खामोश थी, और पाल के चेहरेपर संतोष के भाव ढूँढना चाहती थी।

"लेकिन उसमें पैसे भी तो थे। वह कहाँ रख दिये तुमने ?" पाल ने बड़े धीमे स्वर में कहा।

"पैसे ?" मिखाइलो ने चकित हो मारिया की ओर देखा उसकी आवाज और चेहरे में आश्चर्य झलका।

"मारिया ! क्या उसमें कुछ पैसे भी थे ? क्यों थे कुछ पैसे संदूक में ? एँ ? मैने तो कोई पैसे देखे नही भई, तेरे संदूक में। उहूँ हूँ, मुझे नहीं दीखे भई पैसे-वैसे। खुदा करे मैं अभी मर जाऊँ जो मैंने देखे हों पैसे !"

"खुदा से क्या कह रहे हो, अहमक कहीं के ? क्या वह यह कह रहा है कि तुम झूठ बोल रहे हो ? खूसट, कुकुरमुत्ते ! तुमने नहीं देखे

सो नहीं देखे ! खुदा की कसम खाने चले हैं बेचारे !"

"मैंने तो खुदा को अपना गवाह बनाया है, और क्या ! क्या यह भी पाप है ? बाइबिल मे लिखा है; 'फिजूल खुदा का नाम न लो,' और यह कोई फिजूल थोड़े ही है ! यह तो मेरी बात की तसदीक के लिये है।"

पाल ने उन्हें गौर से देखा। वह भाँप गया कि मिखाइलो उसके सवालों से घबड़ा गया है और अब उस विकट स्थिति में से बाहर निकलना उसे दूभर हो रहा है। लेकिन मारिया के माथे पर शिकन तक न पड़ी थी। लड़का गरम हो गया और बोला :

"उसमें सतरह रुबल रखे थे। और तैंतीस तुम पर आते हैं। समझे ! एरिफी चाचा ने मुझे बता दिया था। और बहुत पहले नहीं हाल ही मे कहा था।"

यह सुनते ही दोनों ने ऐसा ठहाका लगाया कि पाल चकित रह गया। मारिया तो हँसते-हँसते लोट गई। वह पीछे को टिक कर बैठ गई और उसकी मर्दानावार उभरी हुई छातियाँ हँसी के मारे जोर-जोर से हिलने लगीं उधर मिखाइलो का हँसी के मारे उससे भी बदतर हाल था।

पाल उनकी नीति न समझ सका। उसने उन्हें देखा और बड़ी हिचकिचाहट के साथ मुस्कराया मानो दुविधा में पड़ा हो कि उनके साथ हँसे या न हँसे।

"वह एरिफी भी भई बेशक बड़ा ही मसखरा है। पैंतीस रुबल ! क्या रकम बताई है, आहा !" मिखाइलो ने हँसते-हँसते कहा।

"अरे, मूरख ! एरिफी ने कहा और तूने उसे सच समझ लिया ! वाह वाह, क्या बात पैदा हुई है ! बावला साला ! अबे, मूढ़ वह तो पागल हो गया है !" मारिया ने उसे चिढ़ाते हुये कहा और हँसी पर कुछ कण्ट्रोल किया।

अब पाल उनकी हँसी का अर्थ समझ गया। उसने एक गहरी साँस

ली, रुआँ-सा मुँह बनाया और क्रोध से काँपते हुए उसने उन्हें फिर फटकारा :

"तुम झूठ बोलते हो ! दोनों झूठ बोल रहे हो ! यह न समझो कि तुम जो रात को बातें कर रहे थे मैंने सुनी ही नहीं। मैंने हर बात ध्यान देकर सुनी हैं चोट्टों ! तुम दोनों चोर हो ! हाँ और नहीं तो क्या !" शब्दों पर जोर देने की गरज से पाल ने मेज पर लात मारी।

मिखाइलो स्तम्भित रह गया। आतंकित हो उसने मारिया की ओर आँखें गड़ाकर देखा। बाहे मेज पर रखे वह निश्चल बैठा रहा। लेकिन मारिया ने फौरन जाहिर कर दिया कि वह बुद्धू नहीं है।

"लो, यह भी होगया !" वह जोर से चिल्लाई मानो डर गई हो। और जब पाल चीखता हुआ, उत्तेजित और पीला हो अपनी जगह पर बैठा तो वह अपनी कुर्सी से कूदी। पाल की आँखों में प्रकोप झलक रहा था।

"अरे खुदा! ओ मिखाइलो, अरे बेवकूफ दौड़ के डाक्टर को लाओ। दौड़ो, लपको ! लौंडा भी पागल हो गया है। देखा तुमने कैसे चमक रही है उसकी आँखें या खुदा रहम कर ! मुसीबत पर मुसीबत पड़ रही है ! न जाने कौन से गुनाहों की सजा है यह ! हाय, हाय ! बेचारा एरिफी की हालत बर्दाश्त न कर सका। दिमाग खराब हो गया इसका, पागल हो गया यह !"

जो भी पाल को काफी घबराहट हो रही थी पर वह समझ गया था कि उसे वे बेवकूफ बना रहे है। वह रो पड़ा, उसके आँसुओं में कटुता व क्रोध भरा था। सहसा उसे आभास हुआ कि वह इस जिंदगी और इस प्रकार के लोगों से निबाह नहीं कर पायेगा।

आज पहला दिन था जब वह इस दुनिया में अकेला रह गया था और आज पहली बार उसके ये आँसू बहे थे।

उन्होंने उसे तो डरा दिया लेकिन डाक्टर फिर भी न बुलाया गया। और जब तक वह सो न गया वे बड़ी दुश्वारी के साथ उसकी देख-

भाल करते रहे। उन्होंने उसे उठाकर उस कोने में लिटा दिया जहाँ वह दिन भर से बैठा हुआ था। उसकी आँख लगने ही वाली थी कि उसने मारिया की मोटी आवाज में कानाफूसी सुनी :

"लौंडा बुद्धू नहीं है। उसकी बड़ी तेज-तर्रार जबान है। अच्छी बात है वह तेज है, यानी अपना काम चला सकता है।"

नींद में पाल ने बहुत से शरारतपसंद भूतों को देखा। लम्बे-चौड़े और कुरूप, पतले-दुबले और नाटे वे सब-के-सब उसके आस-पास जमा हो गये और दाँत कटकटाकर राक्षसीय हँसी हँसने लगे। उनकी भयावह हँसी से हरेक चीज लरजने लगी। पाल भी धूजने लगा। आकाश की जगह एक विशाल, काला शून्य उसके ऊपर फैला हुआ नजर आया जिसमें से राक्षस एक-एक करके और कुछ जत्थे-के-जत्थे उतर रहे थे। बड़ा ही भयंकर दृश्य था पर साथ ही एक प्रकार से आनन्द दायक भी।............

सवेरे उसे उठाकर चाय पिलाई गई और मोची के यहाँ लेजाया गया। पाल बड़े अनमने और उदासीनता से चला जा रहा था। उसे एहसास हुआ कि भविष्य में उसके लिए कोई जगह नहीं है और जाहिर है उसका यह खयाल गलत न था।

उसे एक नीची छत वाले, अँधियारे कमरे में ले जाया गया जहाँ धुएँ की बदलियों के नीचे चार मनुष्य गाने गा रहे थे और हथौड़े पीट रहे थे। पाल के कंधे पर हाथ रखकर मारिया ने एक नाटे कद के आदमी से बातचीत की जो दायें-बायें हिलता जा रहा था। उसने भुनभुनाते हुए कहा :

"अरे हमारे यहाँ तो यह फिरदौस है फिरदौस! मामूली बस्ती नहीं है बल्कि स्वर्ग है! और खाना—वह तो बस है ही स्वर्ग वालों का-सा! हर चीज यहाँ की परिपूर्ण है। अच्छा, नमस्ते।"

मारिया चली गई। पाल फर्श पर बैठ गया और अपने जूते उतारने लगा। उसमें कुछ आ पड़ा था और वह पाव में चुभ रहा था। कुछ

आकर उसकी पीठ पर पड़ा । उसने ग्रास-पास देखा तो उसे एक पुरानी नाल फर्श पर पड़ी दिखाई दी । दरवाजे पर उसी का एक हम उम्र, भद्दी शक्ल का लड़का खड़ा था उसने अपनी जबान निकाली और पुकारते हुए बोला :

"कोचरा मुँह और नाक में छेद
शैतान का हवाला इसे यही है भेद"

पाल ने मुँह फेरा, साँस ली और अपने बूट खींचने लगा ।

"इधर आजा, दोस्त !' उनमें एक जो नीची पटरी पर बैठा था चिल्लाया ।

पाल बड़े साहस के साथ उसके पास गया ।

"यह सँभाल जरा !" और उस शख्स ने चमड़े का राल लगा मोम का टुकड़ा उसे थमा दिया । "इसे यों मरोड़, लड़के, जरा और जोर से मरोड़ ।"

पाल ने चमड़ा मोड़ा और कनखियों से सारी दुकान की ओर देखा ।

इस प्रकार पाल कामगारों की श्रेणी में दाखिल हुआ । जिस दूकान पर वह काम करता था वह मिरोन तोपोर्कोव की थी । तोपोर्कोव एक मोटा, गोल मटोल आदमी था, सूअर की-सी छोटी-छोटी उसकी आँखें थीं और गंजा बड़ा सिर था ।

वह बुरा आदमी नहीं था । वह बहुत नरमदिल इन्सान था । और जिंदगी में विनोदप्रियता का कायल था । दुश्चरित्र इन्सानों की कमजोरियाँ वह क्षमा कर देता था हालाँकि हँसी-मजाक भी उसे पसंद था । जाहिर है, किसी जमाने में उसने अनेकों धार्मिक ग्रंथ पढ़े थे । और उनकी झलक उसकी बातों में हमेशा आती थी । लेकिन अब शराब की बोतलों पर चिपके लेबलों के सिवाय वह कुछ न पढ़ता था । जब वह पिये हुए होता तब तो कुछ हमदर्दाना व्यवहार करता पर जब वह बे पिये काम करता तो कुछ सख्ती बरतता था । परन्तु उन्हें शिकायत करने का मौका उसने शायद ही कभी दिया हो । पियक्कड़ ज्यादा

होने के कारण दूकान की ओर उसका कुछ कम ध्यान रहता था।

दूकान की सारी जिम्मेदारी दादा उतकिन पर थी जो पुराना सैनिक था और एक टाँग उसकी लकड़ी की थी। बात-चीत और व्यवहार दोनों में सादगी और मुँहफट था और आज्ञाकारिता व आज्ञा की तामील में बड़ा हठी था।

दादा उतकिन के अलावा दो सहायक भी थे, निकन्दर मिलोव और कोल्का शिश्किन। पहले के बड़े लाल बाल थे, बड़ा हौसलेवर आदमी था, गानों का उसे शौक था और उससे भी बढ़कर शौक था शराब का। वह खूब अच्छी तरह जानता था कि जब वह अपनी प्रमुदित हरी आँखे तिरछी करता और भँवें सँवारता तो उसका चेहरा असाधारण रूप से सुन्दर लगने लगता।

दूसरा सहायक तो बिल्कुल फीका, दबा-कुचला और बीमार दीख पड़ता था। वह था भी बडा दुश्चरित्र। जब लल्लो-चप्पो करता तो कमबख्त सबको अपनी तरफ कर लेता। और शीघ्र ही बाद में कुछ ऐसी आकस्मिक और बेहूदा बात कर देता कि श्रोता उससे अलग हट जाता। वहाँ काम करने के दूसरे ही दिन से पाल को कोल्का से नफरत हो गई।

एक आर्तियुश्का नामक लड़का भी वहाँ काम करता था। छेड़-छाड़ की उसे बुरी लत थी। वह जरा-सी देर में पाल से हाथापाई पर आ जाता और उन दोनों में डट कर लड़ाई होती। आर्तियुश्का को अचंभा हुआ जब पाल ने उसे पीट दिया। हफ्ते-भर वह पाल पर गुसैली नजरें डालता रहा और हर वक्त अपनी हार का बदला लेने की सोचता रहा। पर जब उसने देखा कि पाल उसकी छेड़-छाड़ के प्रति बिल्कुल उदासीन है तो उसने सुलह करने की ठानी।

"देख तुझसे एक बात कहूँ कोचरे, हमारी तुम्हारी आज से सुलह!" उसने कहा। "झगड़े की ऐसी तैसी! तूने मुझे पीट लिया तो क्या हुआ। तू है भी तो मुझसे तगड़ा। पर जरा देखता रह। तेरा

सारा तगड़ापन झड़ जायगा। तब देखना कैसा ठोंकता हूँ मैं तुझे। मंजूर ?"

उसने पाल की ओर हाथ बढ़ाया और पाल ने बिना कुछ कहे अपना हाथ उसके हाथ मे दे दिया।

"पर एक बात याद रखना, तू यहाँ पर अभी-अभी आया है। हम सबसे पीछे है तू यह न भूलजाना। चूँकि तू हम सबसे बाद में यहाँ आया है इसलिए सारा गंदा काम तुझे करना पड़ेगा समझा ? मंजूर है वह काम ?"

पाल ने उसके भद्दे, कुरूप चेहरे की ओर देखकर कहा हाँ उसे मंजूर है।

"अच्छा !" अर्तियुश्का ने चकित स्वर में कहा। "अच्छी बात है। यही मुझे पसंद भी है। यही सबको करना भी चाहिये। तू दूकान साफ किया करना, समावार, चूल्हे पर चढ़ाना, लकड़ियां फाड़ना, स्टोव सुलगाना, आँगन में झाड़ू लगाना और बाकी जो काम हों वह सब कर दिया करना।"

"और तू ?"

"और मैं ? कमाल करता है तू भी ! मेरे लिये तो सैंकड़ों काम और हैं ! मुझे तो और भी ज्यादा काम हैं।"

इस प्रकार श्रम-विभाजन कर देने के बाद आर्तियुश्का के लिये कोई काम बाकी न रहा। पांच दिन तक तो वह मौजें मारता रहा और देखता रहा कि कैसा धोखा दिया उसने इस छोकरे को जो उसके सारे काम कर-करके पसीने में नहाए जा रहा है।

लेकिन दादा उतकिन ने यह चालबाजी भाँपली और आर्तियुश्का को अपने पास बुलाया। जूते का फर्मा उसके सिर पर मारते हुए उन्होंने कहा, तू बड़ा बदमाश है बे, लेकिन मै तेरी सब बदमाशी निकाल दूँगा। फिर आर्तियुश्का को काम बता देने के बाद उन्होंने पाल को बुलाया और कहा—तू भी बेवकूफ ही है। और उसका काम

उसे बता दिया।

उस दिन के बाद से पाल और आर्तियुश्का के स्पष्ट और अलग-अलग काम नियत थे। पाल को तो तमाम गंदा काम दिया गया था—वह सारा गंदा काम जिसका मोची के काम से कोई ताल्लुक न था। आर्तियुश्का को एक पीपे पर बिठा दिया गया और धीरे-धीरे व्यापार के सब रहस्य उसे बता दिये गये। अब क्या कहना था, यह ओहदा मिलने पर तो वह पाल पर और भी रौब गाँठने लगा। कभी-कभी वह अफसर को भाँति पाल पर चीख भी उठता था।

उसके बाद कई दिनों तक पाल सोचता रहा कि आखिर स्थिति बदलने के लिये दादा उतकिन ने यह क्या और क्यों किया है। हर बात वैसी ही हुई जैसा कि आर्तियुश्का ने मंसूबा बांधा था। फिर भी उतकिन दादा कहते थे कि वह सारा किया-कराया उन्हीं का है।

एरिफी की झोंपड़ी में जो शांत और ध्यान-तत्पर जीवन उसने बिताया था उसके बिपरीत जब वह इस जिन्दगी में दाखिल हुआ यह जिंदगी—जो गालियों और गानों से भरपूर थी और जिसमें तम्बाकू का धुआँ और चमड़े की गंध मिली हुई थी—पाल के लिए गला घोंटने वाली साबित हुई। निरन्तर कई दिनों तक अकेला रहने की या सिर्फ एरिफी के साथ रहने की उसे आदत हो गई थी और इसीलिए अब चार कमकरों से छोटे से समुदाय में लगातार रहने की उसे बड़ी कठिनाई के बाद आदत पड़ी। सुबह से लेकर रात तक ये चारों व्यक्ति खूब गाते थे, खूब बातें करते थे, जिन्हें पाल न समझ पाता था। एक दूसरे पर जी भर के हँसते थे और बिना किसी कारण के ऐसे-ऐसे भयंकर और घोर अपशब्दों का खुल कर इस्तेमाल करते थे कि यदि एरिफी बाहर होता तो उनके एक-एक शब्द के लिए उन्हें जेलखाने में ठूँस देता। पाल अपने से ऊँचे रुतबे वालों को बड़ी खिन्नता और अहित की दृष्टि से देखा करता था। वह उनके स्वभाव को न समझ सका और इसीलिए उनसे हमेशा कुछ डरता रहता था। उसका इस

प्रकार का रवैया देखकर वे उसकी ओर हँसी उड़ाते थे और कभी-कभी तो उसे इतना तंग करते और उकसाते थे कि गुस्से के मारे उसकी हरी आंखें लाल-सुर्ख हो जाती थीं और वह हाथा-पाई के लिये तैयार हो जाता था। इससे वे और भी अधिक मजा लेते और अपनी छेड़-छाड़ भी बढ़ा देते थे। इससे पाल उनसे और भी ज्यादा दूर होता गया।

वे अक्सर उसके जन्म का किस्सा सुनाने लगते और दूसरी बातों के बाद घूम फिर कर फिर वहीं आ जाते। किस्सा कुछ यों शुरू होता : सुना तुमने बरस गुजरे एक बार एक चारदीवारी के पास एक चेचक मुंह दाग बच्चा पड़ा हुआ मिला। पाल के जन्म की वह दुख-दायी कहानी उन लोगों ने अपने मालिक से सुन रखी थी। कभी-कभी वे कहानी में ऐसी नमक-मिर्च लगाते और इस दिलचस्प व मजेदार अंदाज से उसे पेश करते कि पाल को यह महसूस होने लगता मानो वह किसी तमतमाते हुए गर्म तवे पर बैठ गया हो। इन्सानी जिंदगी के निंदाशील ब्यौरे में जब वे व्यक्ति जाते और बड़ा मजा ले-लेकर उसे सुनाते तो पाल को बड़ा गहरा धक्का महसूस होता। तब तक उन चीजों के बारे में न तो पाल ने कुछ सुना था और न ही उसे उनका पता था। जब वे उससे माता-पिता का जिक्र करते और हास्यपूर्ण ढंग से उनका हुलिया और पेशा बयान करते तो पाल का दिल भर आता, उसे महसूस होता उसके सीने में कोई खंजर चला रहा है, उसका दम घुटने लगता।

जब-जब इस किस्से की पुनरावृत्ति होती तब-तब ये ही विचार और भी भयानक रूप से उसके हृदय में आग बनते जाते। उसका चेचक-भरा चेहरा ऐसा तमतमाता कि उसे देखने से डर लगता। जब वे दुष्ट लोग पेट भर के उसे चिढ़ा लेते, उसका कलेजा छलनी कर देते तो अन्ततः उसे अकेला छोड़ देते और भूल जाते। लेकिन वह जो सारी खिल्ली व उपहास के दौरान में खामोश रहता था, अब अपना तमाम क्रोध व तिरस्कार एकत्रित कर लेता था।

वह दिन-ब-दिन और अधिक चुप रहने लगा। वह इतना क्रोध करता और गुर्राता था कि फलस्वरूप उसकी नाक के ऊपर एक गहरी, कत्थई रंग की झुर्री पड़ गई थी। उस झुर्री, उसकी चुप्पी, झुके हुये सिर और क्रोधपूर्ण दृष्टि के कारण उसका नाम नन्हा बूढ़ा बाबा रख दिया गया था। इस नामकरण का शायद उसे बुरा नही लगा और इसीलिए जब कभी कोई कुछ कहता वह खुशी से उसका जवाब दे देता था हालाँकि दिल में वह यही समझता था कि वह अभी बच्चा है। सभी कोई उसे जी का जंजाल और स्वार्थी समझते थे। आखिरकार वह दिन भी आगया जब वे उसे शक की नज़रों से देखने लगे मानो वह कोई अनहोनी कर दिखाने वाला हो।

एक बार निकन्दर को दूर की सूझी, कहने लगा इस नन्हें बूढ़े बाबा ने जरूर किसी न किसी आदमी का कत्ल किया है और अब किसी और की घात में है, या शायद यह बात हो कि इसकी उस असील सिमिनोवना से इश्क़बाजी चल रही हो जोरों से। पर कोल्का शिशकिन इस अनुमान से सहमत नहीं था। उसका ख्याल था कि नन्हे बूढ़े बाबा मे घमण्ड बहुत आगया है और अगर नियमित रूप से उसे मार लगाई जाय तो बहुत जल्दी वह चंगा हो जायगा। आर्तियुश्का ने भी एक नुस्खा सुझाने का साहस किया। उसने सुझाव दिया कि नन्हे बूढ़े बाबा की एड़ियाँ फाड़ कर जख्मों में सूअर के छोटे-छोटे कड़े बाल भर दिये जायें। फिर वह ऐसा खुश होगा कि दिन-रात नाचता फिरेगा।

उतकिन दादा ने यह सब सुनकर कहा:

"कुत्ते के बच्चो! छोकरा मेहनती है। मग़रूर है तो होने दे तुम सबकी तरह इधर-उधर भटकता नहीं फिरता है इसीलिये ना? वह काम चौकस करता है तो क्या बुराई है उसमें? वह गंभीर लड़का है और उसी प्रकार का उसका स्वभाव है।"

इसके बाद उन्होंने किसी रेजीमेण्टल कमाण्डर का किस्सा सुनाया

जो पाल की तरह शांत स्वभावी था और मछली की हड्डी चूसता हुआ मर गया था।

पहले हफ्ते के आखिर तक तो सभी कमकरों ने पाल के बारे में एक खास निंदनीय दृष्टिकोण अपना लिया था। उसे इसका अफसोस जरूर हुआ पर वह जानता था कि उसका इसमें क्या बस है। दरअसल उसने तो सोचा कि इस बारे में वह कुछ कर ही नहीं सकता। जो कोई काम भी उसे दिया गया उसने बड़ी खामोशी के साथ, दिल लगाकर और संतोषजनक ढंग से पूरा किया। फिर भी, कभी छटे-छमासे जब दूकान के कमकर योंही जिज्ञासा के लिये उसके साथ सहानुभूति भरी बातें करते तो वह दो-तीन शब्दों में उन्हें जवाब दे देता था। इस रूखेपन से उन्हें बड़ा असंतोष होता और वे उसे छेड़ना और उसकी खिल्ली उड़ाना फिर जारी कर देते। उनकी इस हरकत से पाल उलझन में पड़ गया आखिरकार, जो भी नेक लफ्ज़ वे उसके लिये मुँह से निकालते वह उसे एक तरह का जाल समझता जिसमें वे उसे फँसाना चाहते थे, उसे ऐसा घेर लेना चाहते थे ताकि उस पर खूब हँस सकें। तब वह मजबूर होगया और उनकी हर बात और भी अधिक गुस्से और शक से देखने लगा।

यही ढर्रा कोई महीने-भर तक चलता रहा। पाल को धीरे-धीरे इस बात की आदत होगई कि वह अपने आपको उन सबसे अलग समझने लगा क्योंकि उसके साथ एक बाहर वाले की हैसियत से ही व्यवहार किया जाता था। अन्त में उसके संदेह फीके पड़ गये। दुकान भी उसके शांत स्वभाव की आदी होगई। सारी कटुता अब फीकी पड़ गई थी पर उससे स्थिति में कोई अन्तर नहीं आया।

पाल उसी खामोशी के साथ काम करता रहा। उसके चाँटे लगाये गये, पीटा गया, मार-मार के शरीर पर बद्धियाँ डाल दी गईं और सिर में खराशें डाल दी गईं। लेकिन इन तमाम बातों को वह खुशी-खुशी बर्दाश्त भी करता था। वह इसकी कल्पना ही नहीं कर

सकता था कि इस धुँआदार, नारकीय सूराख से तथा इन लबार लोगों से और भी किसी चीज की आशा की जा सकती है।

हर इतवार को कमीज़ की जेब में काली रोटी का एक टुकड़ा दुबकाये वह घूमने जाया करता था। तीन बार सारे शहर का चक्कर लगाने के बाद उसे कस्बे से कोई लगाव बाकी नहीं रहा था। इसके बाद वह बहुत जाता तो बस तोपोर्कोव के सुनसान बाग़ीचे में हो आता था। बाग़ीचे में हमाम के पीछे एक बड़ा सुन्दर गड्ढा था जिसका तला घने झाड़-झंकाड़ों से भरा हुआ था। पाल वहाँ जाकर लेट जाता और ऊपर को मुँह किये घण्टों आकाश की ओर टिकटिकी लगाये देखता रहता। हवा उसके इर्द-गिर्द छोटे-मोटे पेड़ों से अठखेलियाँ करती हुई बहती; जंगली झाड़ियों के आस-पास मक्खियाँ जमा होकर भिनभिनातीं और कुछ काले कीड़े-मकोड़े इधर-उधर घूमते हुए नजर आते। यही वह जगह थी जहाँ पाल ने धीरे-धीरे सोचना विचारना सीखा।

दुकान तो अब उसके लिए लगभग निरर्थक हो चली थी। वह उसके लिए कुछ ऐसी बेमानी पहेली बन गई थी जिसे हल करने की उसे कोई इच्छा न थी। यहाँ गड्ढे में लेटे-लेटे दुकान की सारी दिनचर्या पूरे विवरण के साथ—सोमवार की सुबह से शनिवार की शाम तक—उसके सामने जुलूस की नाईं आती और गुजर जाती। एक बार इसी तरह जब वह ये तमाम बातें सोच रहा था उसके दिमाग में एक प्रश्न उठा : यह सब आखिर जरूरी क्यों है? हम दूसरों के लिए बूट बना कर खुद नंगे पैर क्यों फिरते हैं? हम उतकिन दादा की तरह शराब क्यों पीते है? कोल्का की तरह हम क्यों जुआ खेलते है? हम 'लौंडियों का रोना क्यों रोते है' और फिर निराशा या खिन्नता से शिकायत भी करने लगते हैं—जैसा कि हर सोमवार को निकन्दर करता है? जब देखो किसी 'छोकरी' को पटाने के कारनामे की बात करेगा तो कभी-अपनी लड़ाइयों की, कभी उस 'छोकरे' से या पुलिस से दूर भागने की बात सुनाएगा। आखिर हम अपनी मजदूरी के पैसे दारू पर क्यों बर्बाद

करते हैं, क्यों हम अपने मालिक की तरह वोडका की लत पर हँसने लगते हैं ? क्यों—आखिर क्यों ?

पाल ने सोचा कि अगर ऐरिफी अच्छा होता तो वह ये सारी बातें उसे समझा देता । लेकिन एरिफी तो बेचारा अस्पताल में पड़ा हुआ था ।

पाल दो बार अस्पताल जा चुका था । पहली बार तो उन्होंने उसे अंदर आपने ही नहीं दिया। दूसरी बार जब वह पहुँचा तो उन्होंने उससे कहा कि एरिफी अब कभी अच्छा नहीं हो सकता और पाल के वहाँ आने की जरूरत तो खैर थी ही नहीं हाँ उसका वहाँ फिर जाना खतरे से खाली नहीं था। इस घोषणा को सुनकर उसे महान आश्चर्य हुआ। डाक्टर की ओर उसने घूर कर देखा तो पर वह प्रश्न उससे न पूछ सका जो पूछना चाहता था।

वह लौटा और दुःखी हो वहां से चला आया।

उसने निश्चय किया कि मिखाइलो के यहाँ जाना बेकार है, कौन बैठा है वहाँ उसके जाने पर खुश होने वाला ?

दिन उसी रोती-झींकती रफ्तार से बीतते गये। पाल को उनसे कोई बैर न था पर साथ ही उन्हें बेहतर बनाने की इच्छा भी उसमें पैदा न हुई थी । उन दिनों के मंद, रूखे विचार-मात्र उस पर बोझ बने हुये थे और कुछ समय बाद उन्होंने कुछ अवास्तविक स्वरूप धारण कर लिया था जिसका वास्तविक जीवन से दूर का भी वास्ता न था ।

जिन्दगी जैसी कटनी होती है कटती जाती है और लोग जिस तरह जीते हैं जिये जाते हैं । जाहिर है होनहार यही होनी थी । तो फिर यह तो अच्छी बात होनी चाहिए थी । कभी-कभी ऐसे उद्‌गार उसके कानों में पड़े । "लानत है इस जिंदगी पर !" या "यह तो कुत्ते से भी बदतर जिंदगी है !" लेकिन इनका उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा । अव्वल तो इसलिए कि उसने यह अक्सर सोमवार के दिनों को सुना था—और दूसरे इसलिए कि "कुत्ते की-सी जिंदगी" उसके

नजदीक कोई बुरी जिंदगी नहीं थी। कुत्तों को करना-धरना तो कुछ होता नहीं है। वे तो स्वच्छंद और सुखी होते हैं और लोग बहुधा उन्हें पालते है, उनसे दोस्ती करते है और उन्हें चूमते भी है।

शुरू-शुरू में उसने कमकरों और मालिक के बर्ताव और उनके उद्देश्यों को समझने की कोशिश की। लेकिन उन लोगों ने जो रवैया इख्तियार किया उससे उसकी सारी दिलचस्पी पर पानी फिर गया। वह रसमी, निरुत्साह और मशीन की तरह जड़ बन गया। उसने अपने लिए कुछ विशेष तौर-तरीके निकाले और कुछ खास किस्म की जिंदगी बसर करने का ढंग अपना लिया जिससे कि अपना काम वाला दिन बिता लेता था। वह कुछ-कुछ छोटी मशीन जैसा लगने लगा जिसमें हमेशा के लिए चाबी भर दी गई है और जो तब तक चलती रहती है जब तक उस पर ज़ंग न लग जाय या टूट न जाय।

दूसरे उसे मूर्ख समझते थे और वे सही भी थे। वास्तव में उसके धीमे, आलस्यपूर्ण चलने-फिरने में, उसके एक शब्द के जवाबों में, उन चीजों में जो उसके इर्द-गिर्द होती थी और जिनमें सब हिस्सा लेते थे उसको उनमें दिलचस्पी न लेने व उनसे आनन्दित न होने में मूर्खता ही तो थी वरना क्या वजह थी कि वह चुप रहता और सिर्फ काम से काम रखता।

हर इतवार को बागीचे में उस गढ़हे में लेटे-लेटे वह कल्पना-गगन में विचरण करने लगता और पूछता: सूर्य नीले आकाश पर घूमते-घूमते थक क्यों नहीं जाता जैसा कि एक सिपाही जो हमेशा एक ही स्थान के इर्द-गिर्द घूमता-घूमता उससे भटक जाता है? पाल प्रायः सोचता कि यदि उसे मनमानी करने दी जाय तो वह सूर्य का रंग कुछ और कर दे या उसे उसी समय आकाश में निकाल दे जबकि चन्द्रमा निकला हुआ हो—कितनी मजेदार बात होगी?

दो वर्ष बीत गये, समय के साथ-साथ वह भी दुर्बल होता गया और उसकी चंचलता व फुर्ती भी ढीली पड़ती गई। उसके चेहरे के चेचक

के दाग पहले की निस्बत अब कुछ फैल गये।

इस दौरान में आर्तियुश्का ने सहायकों का ओहदा छोड़ दिया और सनद हासिल करके नौसिखुआ बन गया। उसने लाल-सिर वाले निकन्दर की जगह ले ली जो किसी छोटे-से अपराध में तीन महीने के लिए जेल में ठूँस दिया गया था। कोल्का शादी करके अपनी खुद की दूकान खोलने का इरादा कर रहा था। उतकिन दादा अब बहुत पीने लगे थे और उनकी दमे की शिकायत जोर पकड़ गई थी जिससे उनके हाथ लरजने लगे थे और काम में बाधा होती थी। यह सब देखते हुए मालिक अब घर पर बैठकर पीने लगे थे, शराबखाने पर उनका जाना अब कम हो गया था। पर वह समझ गये थे कि अब बुड्ढे के लिए दूकान सम्हालना मुश्किल हो गया है।

धीरे-धीरे पाल को मोची की कला के रहस्य बता दिये गये थे। आर्तियुश्का की बेदर्द निगरानी मे उसने बूटों में सोल लगाना और एड़ियाँ लगाना सीख लिया था। वह इस काम में बड़ा चतुर और उपयोगी साबित हुआ। जिससे मालिक और दूकान पर काम करने वाले सभी लोग बड़े चकित हुए और इससे उसके सम्मान में वृद्धि हुई।

कुछ दिन बाद शिशकिन दूकान छोड़कर चला गया। आर्तियुश्का की पगार बढ़ा दी गई, पाल की तरक्की हुई और उसने आर्तियुश्का की जगह लेली। पाल की जगह एक नया लड़का रख लिया गया।

पाल अब तीन रुबल माहवार कमा रहा था। आर्तियुश्का खुशी में झूमकर गाता था और उतकिन दादा अपने बुढ़ापे से मजबूर बड़बड़ाते रहते थे और पाल जूते गाँठने में तल्लीन, सर्वथा शाँत रहता था। चूँकि ज्यादा काम नहीं रहा था इसलिये मालिक ने और आदमी नहीं रखा। जब काम ज्यादा होता तो वह खुद उसमें लग जाता था। इससे उन्हें बड़ी खुशी होती और वह ज्यादा पीते थे।

"क्या जिंदगी है!" वह अक्सर मोम लगा डोरा चमड़े में घुसेड़ते हुए कहा करते। "काम कर लिया और शराब पी ली, क्या बस यही जीना

है ? यह तो जिंदगी की मजाक उड़ाना है बेटो ! बोलो क्या खाने का वक्त नहीं हुआ ? मिश्का ! जा सिमिनोवना से कह कि मेज पर खाना परोसे और तू लपक कर कलाली पहुँच। ले—ये लेजा ! अद्धा लइयो, हाँ काफी है न दादा ?"

दादा संतुष्ट हो अपनी मूँछे हिलाते, मालिक हँस पड़ता। मिश्का दस साल का बदमाश छोकरा जिसके काले घुँघराले बाल थे, तेज, चमकीली आंखें थीं, अद्धे के वास्ते दौड़ता और उछलता-कूदता, मुंह बनाता और जो भी मिलता उसे चिढ़ाता हुआ कलाली पर पहुँचता था।

दस वर्ष इस जिंदगी में गुजारने के बाद पाल खूब लम्बा-चौड़ा हो गया और भारी भरकम लगने लगा। कद में वह ऊँचा था कुछ झुका हुआ था पर था सुडौल शरीर वाला। बाँहें चढ़ाने के बाद उसका खुला हुआ भाग कत्थई रंग का दीखता था जिसमें नीली नसें उभरी हुई दीख पड़ती थीं। जब वह झुका हुआ जूते गाँठने बैठता तो उसके नारियल जैसे बालों के नीचे एक मजबूत, लचकदार गर्दन दृष्टिगोचर होती थी। कुछ घनी दाढ़ी उसके चेचकदार चेहरे पर फूटने ही वाली थी और उसके ऊपरी होंठ पर तो पहले से ही एक छितरी छोटी मूँछ उग आई थी। इस जमाने में भी उसने किसी से मेल-जोल नहीं रखा, न ही वह खुशी में घूमता फिरा। अब भी पहले की अपेक्षा कहीं अधिक खिन्न और सशंक वह दिखाई देता था।

दूकान में तो लोग उसे नन्हा बूढ़ा बाबा कहा करते थे और ऐसे बुद्धू बगलोल की उसे उपाधि मिली हुई थी जो न कभी शराब पीने में रुचि लेता था और न ही उन आमोद-प्रमोद का साधन जुटाने वाली जगहों पर जाता था। कमकर उसकी इस आदत और घुन्नेपन के आदी हो चुके थे और अब उसे चिढ़ाना उन्होंने बंद कर दिया था। कुछ इस कारण से कि वे उसके हृष्ट-पुष्ट शरीर से डरते थे और कुछ इसलिये कि वे जानते थे "इस काली कमरी पर कोई रंग नहीं

चढ़ सकता।"

कोई यह भी यह न जानता था कि वह किस लिये जी रहा है क्योंकि वह वे चीजें करता ही न था जो दूसरे करते थे। शायद वह खुद भी न जानता था वह क्यों जिंदा है। वह इतना शुष्क, गंभीर और चुप रहता था कि न आँसू बहाने की उसमें क्षमता थी और न ही ठहाके मारने की सामर्थ्य।

मालिक अब पूरी तरह बूढ़ा और क्षीण हो चुका था। उसके सारे बाल सफेद हो गये थे। एक बार उसने पाल से कहा: मैं कभी का मर चुका हूं और तभी जिंदा हो जाऊँगा जब फरिश्ते आकर कयामत का ऐलान करेंगे। और उस समय पता नहीं मैं चाहूं या न चाहूँ मुझे भी अपनी हड्डियां हिलानी पडेंगी। पर उस दिन तक मैं इसी तरह निश्चल इस दूकान में बैठा रहूँगा। यदि किसी ने इस दूकान को तहस-नहस करके मुझे बाहर न निकाल दिया।

जाहिर है पाल चाहता था कि वह उन बातों का जवाब दे सके। लेकिन उसने मालिक की ओर देखकर एक फीकी मुस्कराहट से ही अपना संतोष कर लिया।

"इसके लिये मैं तुम्हारा बहुत आभारी हूँ!" मिरोन ने झुककर कहा और किसी बात का इन्तजार करने लगा। मिरोन पाल के काम से बहुत संतुष्ट था। मुमकिन है वह उससे प्यार भी करता हो। विशेषत: जब वह नशे में न होता था तो ऐसा ही जाहिर किया करता था। जब नशे में होता था तब भी वह दूसरों के बजाय पाल ही का अधिक खयाल रखता था।

दो और भी थे, एक तो मिश्का आवारागर्द और चोर उन्नीस साल का लौंडा था और दूसरा था गूज जो चालीस साल का काना आदमी था, जिसकी गर्दन असाधारणतया लम्बी थी। गूज कहा करता था कि उसकी गर्दन इसलिये लम्बी हो गई है क्योंकि बचपन में उसकी बड़ी सुरीली आवाज थी और वह सांज के साथ गाया करता था। अब तो

उसकी आवाज खतम हो चुकी थी। हाँ, अगर उसकी भारी, कर्कश और चिरचिरी आवाज जिसमें वह अपने विचार ही प्रकट करता था, आवाज समझ लिया जाय तो बात दूसरी है।

अर्सा हुआ आर्तियुश्का ने मोची का काम छोड़ दिया था। पहले तो उसने छोटी-मोटी चीजों व्यापार किया। फिर वह एक शराबखाने में जाकर बैरा हो गया, बाद में वह मिरोन के घर आया, नये-नये बने हुए जूतों का एक जोड़ा चुराया और गायब हो गया। इस बार वह शहर छोड़ कर ही चल दिया।

बूढ़ा उतकिन भी पहले से ही बेमियाद छुट्टी पर जा चुका था। एक दिन वह जूते सी रहा था और उसने एक भारी सांस ली। उससे पहले दिन-ब-दिन उसकी साँस तेज चलने लगी थी। लेकिन किसी ने इसलिए उस पर ध्यान न दिया कि शायद वह खुमार में है। लेकिन आज उसकी सांस बड़ी तेज रफतार के साथ चल रही थी और अंत में उसने हथौड़ा जिससे वह चमड़ा कूट रहा था, नीचे रख दिया और छत की ओर देखकर हवा से बातें करते हुए पूछा :

"पादरी को बुलाऊँ या नही ?"

फिर भी किसी ने उस पर कान न दिये क्योंकि यह भी उसकी पुरानी आदत थी। एक बार पहले भी उतकिन ने यह सोचते हुए कि एक पादरी से काम नहीं चलेगा इस बात पर जिद की थी कि उसे एक बंद गाड़ी में रखकर बूढ़े पादरी के पास ले जाया जाय। इस बार खाने के बाद वह बिस्तर पर इतनी देर तक लेटा रहा कि वे उसे जगाने के लिये गये। लेकिन उसके प्राण पखेरू उड़ चुके थे।

इसका पाल पर बहुत गहरा असर पड़ा। बड़ी देर तक वह हर एक आदमी को प्रश्नसूचक नजरों से घूरता रहा लेकिन जाहिर में वह शब्दों में प्रकट न कर सका कि आखिर उसे क्या चीज विचलित किये दे रही है इसलिये वह खामोश रहा।

जब उतकिन को दफना दिया गया तो पाल बहुत दिन तक कब्रि-

स्तान के उस अँधियारे कोने में स्थित उसकी कब्र पर जाता रहा। कब्र जंगली झाड़ियों और एल्डर वृक्षों से ढँकी हुई थी जहाँ सूर्य का पहुँचना भी कठिन था। जमीन पर बैठे-बैठे, पाल पत्थर की दीवार में के एक सूराख में से दूर फासले में देखता रहता था। वहाँ से उसे अपनी पुरानी झोंपड़ी, नदी, मैदान और जंगल साफ दिखाई देता था। वहाँ उसे अपना वह बचपन और वह शांत स्वभावी मित्र एरिफी याद हो आया जो दो वर्ष अस्पताल में सड़ने के बाद मर गया था।

एरिफी की मृत्यु पर पाल को कोई विशेष रंज न हुआ, हुआ भी हो तो कम-से-कम उसके चेहरे से तो वह कभी जाहिर न हुआ।

रविवार को वह घूमता हुआ अब बड़ी दूर-दूर तक निकल जाता था। बागीचे के उस गढ़हे में जाना उसने अब छोड़ दिया था। कब्रि-स्तान के अलावा अब वह शहर के उस पार पहाड़ों पर चला जाता था। वहाँ खड़े होकर सारा शहर उसे इतना साफ दिखाई देता था मानो उसकी हथेली पर रखा हुआ हो। वह बड़ी देर तक उसे निहारता रहता था। नीचे सड़कों पर चलते-फिरते लोगों के बड़े-बड़े झुण्डों में से आता हुआ फीका कोलाहल उसे सुनाई पड़ता था। उसे लोगों की जो सड़कों व गलियों में इधर से उधर छोटी-छोटी काली आकृतियाँ वहाँ से दिखाई देतीं।

वह बहुधा जंगल में भी जाता था। वह कोई एकांत जगह ढूँढकर वहाँ पड़ा-पड़ा वृक्षों की कोमल खड़-खड़ाहट सुनता रहता था। कभी-कभी वह आस-पड़ौस के देहातों में भी चला जाता था जहाँ जाकर वह गली-कूचों में घूमकर हर चीज को बड़ी आरजू व जिज्ञासा के साथ देखा करता। कभी वह किसी शराबखाने मे जाकर 'बियर' या शराब की बोतल लिये घण्टों बैठा लोगों की बातचीत सुनता रहता था। अक्सर शराबी अपना ध्यान उसी ओर लगाने लगते थे लेकिन उसके शांत व उदासीन चेहरे का उन लोगों पर जो थोड़ी पिये हुए थे कुछ ऐसा प्रभाव पड़ता था कि वे दूसरों को उपदेश देते :

"श श श! उसे मत छेड़ो ! वह शहरी है ! भागो बे।" वे शराब में मस्त लोगों की ओर चीखते और फिर पाल की ओर सशंक व आक्रामक दृष्टि से घूरते।

वह अपना बिल अदा करता और चुपचाप वहाँ से चला आता। एक बार जब वह किसी शराबखाने से निकल रहा था कि एक धीमी, चेतावनी की शक्ल में कुछ खुसर-पुसर उसके कानों पर पड़ी : "पुलिस का आदमी है !" उसके बाद उसने उस गाँव में जाना छोड़ दिया।

उसने एक रूसी कोट, ढीला पतलून, रेशमी पट्टे से बँधी हुई कमीज, टोपी और ऊँचे बूट पहन रखे थे जिससे वह काफी ऊँचा और बलवान लगता था। उसका गम्भीर चेहरा देखकर कोई नहीं कह सकता था कि वह मजदूर है। यह पता लगाना भी कठिन था कि वह समाज के किस वर्ग से सम्बन्ध रखता है।

वह कुछ इसी प्रकार का व्यक्ति था कि एक बार, जैसा कि उसके मालिक ने बताया, कुछ हुआ जिसने "उसे ऊपर उठाया और नीचे फेंक दिया।"

"ऐ बे, ओ कैदी !" मिरोन ने एक दिन सवेरे सेनका से कहा जो हाल ही में दूकान पर काम करने लगा था। "आज जरा समावार माँज ले। वह तेरे मग से भी ज्यादा मैला हो गया है ! और तू पाल आज उस लेफ्टिनेण्ट के बूट तैयार करदे, सुना ?"

"अच्छा," पाल ने एड़ी ठोकते हुए कहा और अपने पास ही बैठे हुए मालिक की ओर भी नहीं देखा।

गूज जो अब चश्मा लगाने लगा था मशीन पर बैठा बूटों के टाप सी रहा था। मशीन की घड़घड़ से सारा कमरा गूँज रहा था।

मई का महीना था, सूरज खिड़की में से होकर सारी दुकान में फैल जाता था। दुकान काजल, धुएँ के बादलों और चमड़े की गंध से भरपूर थी; बाहर गली में से कदमों की चापें और गाड़ियों की गड़गड़ाहट अन्दर सुनाई दे रही थीं।

मिरोन ने खिड़की में से देखा अनेकों इन्सानों के पैर चलते हुए दीख पड़े। उसने चमड़े का एक टुकड़ा उठाया, उसे जाँचा, आँख झपकाई और अपनी भारी वृद्ध आवाज में कहा :

"बड़े दिलचस्प किरायेदार आकर रहने लगे हैं हमारे पड़ौस में। दो हैं वे। दोनों है बड़ी हँसमुख लड़कियाँ। जरा सम्हल के रहना रे लौंडों !"

इस ऐलान पर किसी ने रायजनी नहीं की। कुछ अवकाश के बाद बिना किसी बाधा के उसने फिर कहा।

"अरे हाँ, पाल तू तो उनसे जान-पहचान करले। कम-से-कम तुझे बोलना तो आ ही जायगा उनकी सोहबत से। क्योंकि तू तो भिक्षु बना फिरता है ना ! या कहीं भगवान् के यहाँ जाने का तो इरादा नहीं कर रहा तू ? इतना ज्यादा काम न किया कर, बेटे ! भगवान के यहाँ मोचियों की पहुंच नहीं है, हाँ। उनको मोची की जरूरत भी नहीं हैं, सब कोई नंगे पैर जाते हैं वहाँ। वहाँ का मौसम भी बस अजीब ही है। समझा हाँ !"

"मजेऽदार आ ऽ इसक्रीम !" गली में से किसी फेरी वाले की आवाज आई।

"तो फिर जा लगा अपना सिप्पा उनसे, क्या पाल ऐं ? वे तुझे गरम करेंगी पिघलायेंगी और गढ़ कर नया इन्सान बना देंगी। सुलेमान ने कहा था : 'अपनी शक्ति को स्त्रियों के सुपुर्द न करो, और न ही अपने को विद्रोहियों के साथ मिलाओ" पर यह हम पर लागू नहीं होता। औरत है न, बड़े मजे की चीज होती है वह ! जी हाँ ! औरतों को जरा छूट दे दो और वे दुनिया को उलट फेर के रख दें। आय-हाय, क्या नाच नाचेंगी वे ! सबसे पहले तो जितनी शादी-शुदा औरतें हैं वे अपने पतियों को छोड़ देंगी। और जो लड़कियाँ होंगी—वे सारे मर्दों को एक-दो-तीन करके फाँसी पर चढा देंगी ! कैसा जोरदार गड़बड़-घोटाला होगा फिर !"

उस दिन मिरोन बड़े रोब में था। एक क्षण भी रुके बगैर उसने यह बड़ा 'क़िस्सा गढ़ डाला'। पाकबाज गूज उसकी कल्पना जन्य कथा के लिए 'गढ़ना' शब्द ही प्रयुक्त करता था। उसने अपना सीने का काम खत्म किया और बूट के टाप को बड़ी गौर से देखने लगा और "परम पिता परमेश्वर" नामक गीत को जोरदार आवाज में गाने का प्रयत्न करने लगा। गीत के बजाय सांप की-सी फुंकार सुनाई पड़ी और गूज ने अपनी लम्बी गर्दन मसलते हुए जोर से खँखारा और इधर-उधर जोर से थूका।

"इतना लाल क्यों हैं तू, पाल ?" सहसा अपने कमकर को देखकर मिरोन ने पूछा। "तेरी तो सारी पेशानी पसीने में तर-बतर है !"

"मुझे नहीं मालूम !" पाल ने रूखाई से जवाब दिया और हाथ से पसीना पोंछकर पेशानी को और भी गंदा करने लगा।

"अब यह भभूति मत मल अपने माथे पर ! इससे कोई फायदा नहीं होगा तुझे ?" मालिक ने तीव्र स्वर में कहा। "तेरी आँखें कुछ उदास लग रही है, तबियत तो ठीक है ना तेरी ?"

"जी हाँ। ठीक नहीं है।······मै यहाँ अब नहीं·······"

"अरे, पर तूं वहां क्यों बैठा हुआ है ?" मालिक ने पूछा। "छोड़ दे काम। कोई और सी देगा बूट। जा और जरा लेट जा। आराम करले !"

पाल उठा और शराबी की नाईं झूमता हुआ दरवाजे तक गया।

"मै नीचे तहखाने में लेटने जा रहा हूँ ताकि अगर कुछ हो जाय तो······" और वाक्य पूरा किये बिना ही वह चला गया।

आंगन मे से गुजरते हुए उसके पैर काँप रहे थे। उसका सिर भारी हो गया था और उसे चक्कर आने लगे थे। उसकी आँखों के सामने लाल और हरे चक्कर घूम रहे थे।

तहखाने का वायुमण्डल नम और भारी था। मालूम होता था सख्त भाप से वह पूरी तरह भर गया था ! पाल ने अपनी कमीज के

बटन खोले और भारी एप्रन उतार फेंका जो आटे के पुराने टाट के बोरों का बनाया हुआ था। फिर वह घास के ढेर पर जहाँ कुछ नम तख्ते पड़े हुए थे अपनी बाहों पर गर्दन रखे लेट गया।

तहखाने में अँधेरा था। दरवाजे की दरारों में से छन-छनकर सूर्य का प्रकाश अंदर दाखिल होता, अंधकार को चीरकर जगमगाहट भरे कुछ फीते बनाता जो दिखाई देते और फिर गायब हो जाते थे। ऊपरी मंजिल पर किसी के चलने की आहट उसने सुनी। उसका सिर अजीब अंदाज से भन्नाने लगा। उसकी कनपटी में जो पीड़ा हुई उससे उसके होश बाख्ता होने लगे और उसकी धमनियों में खून तेज रफ्तारी और ज्यादा शक्ति के साथ खौलने लगा। साँस लेने में दुश्वारी होने लगी। उसके शरीर से नम, गरम खून की गंध आने लगी।

लाल और हरे धब्बे उसकी नजरों के सामने नाचने लगे। वे कभी तो बिल्ली की आंखों की भाँति छोटे और चमकदार नजर आते और कभी बड़े-बड़े और अंधकारपूर्ण जैसे मोरक्को चमड़े के टुकड़े कहीं ऊपर से हल्के-हल्के हवा में घूमते हुए गिरते हों जैसा कि पतझड़ में पेड़ों से सूखे पत्ते गिरते हैं।

पाल अपनी आंखें खोले लेटा रहा, उसने करवट लेने की भी कोई कोशिश नहीं की। उसे अन्देशा यह था कि अगर वह हिला-डुला तो एकदम गहरी खोह में गिर पड़ेगा और वहाँ गरम दमघोट भाप में तैरता रहेगा। उसके आस-पास और उसे सब कुछ हिलता और घूमता हुआ दिखाई दिया। उसके कानों में देर तक वही ऊबा देने वाले चक्कर गूँजते रहे।

इसी प्रकार आहिस्ता-अहिस्ता कई मिनट गुजर गये। फिर यकायक दरवाजे के खुलते ही सूर्य का प्रकाश भी घुस आया। सेनका की परिचित आवाज बड़ी स्पष्ट गूँजने लगी :

"खाना खाने आ रहे हो, पाल ?"

"मुझे कोई खाना-वाना नहीं चाहिये," पाल ने उत्तर दिया। उसे

यह अजीब बात लगी कि अभी दोपहर के खाने का ही वक्त हुआ है। उसकी अपनी आवाज में भी कुछ अजनबियत थी। आखिर वह इतनी मंद, रुखी, नीरस और बोझिल क्यों लग रही थी ? उसे तो दूकान छोड़े भी काफी देर हो चुकी थी।

तहखाने में फिर अंधेरा छा गया था। रोशनी उससे कहीं दूर भाग गई थी। एक बार फिर एक-एक क्षण पहाड़ की मानिन्द भारी कटने लगा। उसने कानों में बोझिल और ऊब लाने वाली आवाज से थकान होने लगी थी। पाल को लगा मानो कोई तर व गरम चीज उसे निगल रही है। वह मूर्छित हो गया, उसका मुँह प्यास के मारे सूख गया और उसे सांस लेने में कठिनाई महसूस होने लगी........

"कोई मूर्ख लेटा जान पड़ता है यहां।"

"शायद तहखाने वाला मोची होगा। शराबी।"

"पड़ा रहने दो फिर उसे।"

पाल ने आखें खोलीं और बडी निर्बलता के साथ दरवाजे की ओर अपना मुँह किया।

अब तहखाने में रोशनी हो गई थी। दो स्त्रियां दरवाजे पर खड़ी थी। एक तो तहखाने वाला दरवाजा खोल रही थी और दूसरी उसके पास खड़ी थी। उसके एक हाथ में दूध का जग और दूसरे में एक पुड़ा था। उसकी बड़ी-बडी नीली आँखें उस कोने पर जमी थी जहाँ पाल लेटा था और वह अपने मित्र से बड़ी स्पष्ट, मृदुल और कण्ठीली आवाज से बातें कर रही थी :

"जरा फुर्ती करो, कातिरिना !"

"मुझे गड़बड़ाओ मत ! तुम भी जरा इसे उठाओ ना !" कातिरिना ने नम, भारी दरवाजा धकेलते हुए उसे फटकारा। उसकी आवाज मन्द और कर्कश थी।

"देखो तो जरा, यह मोची मेरी तरफ कसे घूर रहा है ! ओह !" पहली लड़की ने कहा। "जैसे मुझे खा ही तो जायगा।"

"दूध पिलाओ कमबख्त को।"

"फालतू नहीं इतना दूध मेरे पास !"

पाल अपनी चमकीली, जिज्ञासाभरी नजरों से उन्हें देखता रहा। वे दोनों कोहरे से भरे वातावरण में अदृश्य होते हुए दीख पड़े और इतने दूर निकल गये कि उसने कर्कश स्वर में उनसे दीनतापूर्वक कहा, "मुझे कुछ पीने को दो", उसने सोचा उन्होंने सुना नहीं।

लेकिन उन्होंने सुन लिया था। जिसकी नीली आँखें थीं और हाथ में दूध का जग था उसने अपना पुड़ा जमीन पर फेंका और दूसरे हाथ से अपनी घघरी उठाये हुए कोने तक आई। और दूसरी तहखाने के जीने पर खड़ी दिलचस्पी के साथ उसे देखने लगी।

"शराब पीना भी कोई हँसी-मजाक नहीं है, कात्या। थोड़ा बर्फ फेंकना तो इधर। मैं उस पर दूध नष्ट नहीं करना चाहती।"

पाल ने यह सुन लिया और फिर उसी कर्कश स्वर में कहा:

"जल्दी करो, कुछ पीने को दो......"

उसने अपने ऊपर झुकी स्त्री की नीली आँखें देखीं जो उसे घूर रही थीं। "कात्या, इसके तो चेहरे पर ढेरों चेचक के दाग हैं! उफफऽ! अरे यह शराबी नहीं है! शराब की कोई बू ही नहीं आती इसमें से। कात्या, यह आदमी तो बेचारा बीमार है, खुदा की कसम हाँ, हाँ बीमार है! इसका सारा शरीर तप रहा है, साँस ऐसी निकल रही है मानो एंजिन भाप छोड़ रहा हो! ओह, खुदा समझे इन शैतानों को! कमबख्तों ने इस रोगी को लाकर यहाँ फेंक दिया है, तहखाने में। सूअर कहीं के। लो पियो, पियो जी भरके! कब से पड़े हो यहाँ? एं? क्या तुम्हारा कोई घर-बार नहीं है? तुम्हारे कुनबे वालों ने तुम्हें किसी अस्पताल में क्यों दाखिल नहीं करवा दिया?"

पाल के पास उँकड़ूँ बैठते हुए उसने दूध का जग उसके मुँह से लगा दिया। उसने लरजते हाथों से जग थामा और बड़ी जल्दी-जल्दी दूध डकारने लगा। लड़की ने उस पर प्रश्नों की झड़ी लगा दी और

यह भूल ही गई कि वह बेचारा दूध पीते-पीते बातें कैसे कर सकता है।

"शुक्रिया !" उसने अन्त में जग हटाकर देते हुए कहा । उसका सिर फिर उस बोरे पर लुढ़क गया ।

"इस ठण्डी जगह पर तुम्हें कौन लाया ? मालिक ? वह तो मुआँ वैसे ही कुत्ता लगता है !" उसने क्रोध से कहा और हाथ से उसकी पेशानी छुई ।

"मै खुद ही..........." पाल ने कहना शुरू किया, उसकी नजरें लड़की के चेहरे पर गड़ी हुई थीं ।

"अच्छा, बड़े तेज हो तुम ऐं," बड़े चालाक हो ! क्या बहुत दिनों से पड़े हो यहां ?"

"नहीं आज ही आया हूँ ।......"

"हुऽम ! शायद एक हफ्ते-भर से इससे लड़ रहे थे पर आज इसने धर दबाया तुम्हें । हाँ, हाँ ! क्या करें अब हम ? कातिरिना ! क्या करें इसका अब ?"

"तुम्हारा क्या ख्याल है ? बर्फ पर लिटा दें इसे ? या तुम उसे अपने घर ले जाना चाहती हो ? और अग र वहाँ वह टर्र-टर्र करने लगा तो ? बेवकूफ कहीं की ! चल, चल उठ !"

पाल ने बड़ी कठिनाई से अपना सिर घुमाया और दूसरी स्त्री की ओर देखा जो अभी तक तलघर के जीने पर खड़ी थी । उसकी नजरें उदासीनता और जिज्ञासा का सुन्दर मिश्रण प्रस्तुत कर रही थीं । उसने जो मजाक उड़ाते हुए शब्द कहे थे उन्हें सुन कर और भी दुःख हुआ । साँस लेते हुए वह फिर उसी लड़की की ओर आकृष्ट हुआ जो उसके समीप खड़ी थी ।

लड़की ने अपनी सहेली की बात का जवाब न दिया। पहले तो उसकी त्योरियाँ चढ़ गईं पर अगले ही क्षण वह शान्त हो गई ।

"तुम यहीं लेटे रहो !" उसने पाल की ओर झुक कर निर्णय करते

हुए कहा। "यहीं लेटे रहो। अभी जरा देर में मैं सिरका, वोडका* और मिर्च लेकर आती हूँ। सुना तुमने ?"

वह फौरन उठी और अदृश्य हो गई।

दोनों स्त्रियाँ दरवाजा खुला छोड़ कर चल दीं। उन दोनों में जो धमाकेदार बहस हुई उसकी आवाज पाल के कानों तक पहुँची।

उसने सोचा होगा कि जो कुछ हुआ वह मूर्छा-मात्र थी। लेकिन दूध का नरम स्वाद अभी उसके मुँह में बाकी था। और कमीज पर जो दूध गिर पड़ा था उसका भी उसे एहसास हुआ। और उसे अब भी वह नर्म व नाजुक हाथ महसूस हो रहा था जिसने उसके गालों और पेशानी को स्पर्श किया था। वह उसकी वापसी की प्रतीक्षा करता रहा। वह एक ऐसी विचित्र जिज्ञासा में घिर गया था जिसने उसकी बीमारी के सारे एहसास को ढँक लिया था। वह बड़ी बेचैनी के साथ यह जानना चाहता था कि अब क्या होने वाला है। इससे पहले कभी उसे होनहार के बारे में इतनी प्रबल इच्छा नही हुई थी। करवट बदलते हुए, दरवाजे की ओर पीठ करके उसने अपनी प्रज्ज्वलित, रोग ग्रस्त आँखें आँगन में बिछा दीं।

वह जल्दी ही लौट आई। उसके एक हाथ में कप से ढँकी हुई एक बोतल थी और दूसरे में एक गीला चिथड़ा था।

"लो, पियो इसे," उसने कहा लेकिन जब पाल ने हाथ बढ़ाया तो उसे न देकर उसने स्वयं ही दवा उसके मुँह में उँढ़ेल दी। ज्योंही वह तरल पदार्थ उसके हलक में पहुंचा उसका सारा मुँह और गला जल गया और धसका लगा।

"हूँ, यह तो अच्छी दवा है," लड़की ने विजयोल्लास से कहा और फौरन सिरके में डूबा हुआ वह ठण्डा चिथड़ा उसके माथे पर लगा दिया। बड़ी आज्ञाकारिता और खामोशी से पाल ने उसे ऐसा करने दिया, हाँ

---

* रूसी शराब का नाम

उसकी आँखें निरंतर लड़की पर जमी रहीं।

"हां, तो अब हम बातें कर सकते है। तुम्हारा मालिक तो बड़ा ही लीचड़ और कंजूस है! वह तो मुआँ क्या करेगा, जहन्नुम रसीद हो उसे; हाँ, मै ही कल तुम्हें अस्पताल ले चलूँगी। तुम्हारा जी मचला रहा होगा ना, एं? जरा ठहरो—अभी ठीक हो जाओगे। तुम्हें तो बात करने में भी पीड़ा होती होगी, है ना?"

"नही, नही। ठीक है। मै कर सकता हूँ बातें।"

"नही, नही। तुम चुपके पड़े रहो। डाक्टर हमेशा रोगियों को बातचीत न करने की हिदायत देते है—तुम चुपचाप लेटे रहो और आराम करो।"

अब जाहिरा रूप में बातें करने को जब कुछ न रहा तो उसने अपने इर्द-गिर्द इस तरह टटोला मानो वह यकायक दिल में कुछ तकलीफ महसूस कर रही हो।

पाल उसे घूरता रहा और सोचता रहा कि आखिर यह सब क्यों मेरे लिये किये जा रही है? मै तो उसके लिये बिल्कुल अजनबी हूँ। ओहो, हो-न-हो यह वही किरायेदार होगी जिसका मालिक जिक्र कर रहा था। क्या नाम लिया था उसने? नहीं, नही नाम का तो उसे पता ही न था।

"क्या—नाम—है—तुम्हारा?" उसने नम्रता से पूछा।

"मेरा? नतालिया क्रिब्तसोवा। क्यों?"

"यों ही।"

"ओह!" उसने भी यों ही कह दिया और पाल को सिर से पैर तक देखने के बाद वह अपने आप से गुनगुनाने लगी।

"और तुम्हारा?" उसने सहसा अपना गाना रोक कर पूछा।

"पाल।"

"क्या उम्र है तुम्हारी?"

"बीस साल।"

"इसका मतलब है तुम तो जल्दी ही फौज में चले जाओगे !" उसने निष्कर्ष निकाला और फिर चुप हो गई। कुछ देर बाद फिर बोली, "तुम्हारा कोई रिश्तेदार नहीं है क्या ?"

"नहीं मैं तो बिना माँ-बाप का बेटा हूं।" पाल ने धीरे से कहा। उसके सिर में फिर जोर का दर्द होने लगा। प्यास फिर जाग उठी।

"अरे बाऽप रे !" वह और समीप आ गई। उसने अपनी नीली आंखों से, चकित हो, उसे जाँचा मानो वह यह न समझ पाई हो कि इतना बड़ा हट्टा-कट्टा आदमी बिना माँ-बाप का कैसे हो सकता है।

"और पिलाओ !"

"यह लो, यह लो !" उसने जल्दी से आगे बढ़ाते हुए कहा। कप को फुर्ती के साथ दूध से भरते हुए उसने अपना हाथ उसके सिर के नीचे रखा और उसे ऊपर को उठाकर आहिस्ता से कहा :

"अल्हा हो शाफी अल्लाह हो काफी !"

वह दूध पी गया। घूटों के दौरान में उसने उसके चेहरे को देखा जो पहले निश्चिन्त था पर अब चिंतित और उदास था। इस चिंता और उदासी के भाव से पाल परिचित था और उसे समझता भी था। उसे देखकर उसमें लड़की से बात करने की प्रेरणा जागृत हुई।

ज्यों ही उसने दूध खतम किया जोर से और एकदम बोल पड़ा : "कहो, तुम यह सब क्यों कर रही हो ?"

"क्या कर रही हूँ, मैं ? वह असमंजस में पड़ गई और प्रश्नसूचक नेत्रों से पाल को देखने लगी।

"मेरे लिये यह सब········क्यों। तुम क्या—कुछ मुझे दे चुकी हो········मेरी सुश्रुषा कर रही हो ··और बाकी सब कुछ, सब तुम ही कर रही हो। पर क्यों ?" पाल कह तो गया पर बाद में डर गया जब उसने देखा कि लड़की रंजिदा हो वहाँ से हट गई। उसकी भावनाओं को इन प्रश्नों से ठेस पहुँची थी।

मैं नहीं जानती क्यों बस यों ही ! तुम इन्सान हो, हो ना ? या

नहीं हो ? तुम भी बड़े मसखरे हो वाकई !" और यह कहकर उसने अपने कंधे सिकोड़े।

पाल ने कुछ अनिश्चय से अपना सिर हिलाया। दीवार की ओर मुँह करके वह चुप हो गया। उसके मस्तिष्क में विचित्र विचार घूमने लगे। जिन्दगी का यह पहला मौका था जब किसी ने उस पर दया दिखाई थी। और वह भी किसने ? उन्हीं स्त्रियों में से एक ने जिनसे उसे घृणा थी, जिनसे वह डरता था और उसे एरिफी का दृष्टिकोण याद हो आया। उनमें से एक के बारे में वे दूकान पर बातचीत कर चुके थे। कुछ दिन से वह चोरी-छिपे स्त्रियों के बारे में बहुत कुछ सोच रहा था पर यह सब वह अपने आपसे भी छिपाता था, और इस प्रकार के विचारों के लिए उसे अपने आप पर क्रोध भी आता था।

स्त्री—वह अनन्त शत्रु है पुरुष की जो किसी खास और उचित क्षण की प्रतीक्षा करती रहती है कि उसे गुलाम बनाए और उसका सारा खून चूस ले। यही राय थी जो वह बार-बार सुन चुका था। कभी किसी सुन्दर युवती को देखकर कायरता से और फुर्ती से गली में चलने के बाद पाल उसकी ओर देखता और सोचता यह स्त्री हमारी दुश्मन कैसे हो सकती है जब इतनी छोटी-सी बच्ची तो है। उसकी इस भयपूर्ण जिज्ञासा का, जिसे वह विवश हो उस वक्त जाहिर कर देता था जब स्त्रियों की बातें होती हों, परिणाम यह हुआ कि मालिक और दूसरे कमकरों ने उसकी खिल्ली उड़ानी शुरू कर दी। प्रायः वे ऐसा करते कि अपनी कामुकता पर स्वयं ही पश्चाताप प्रकट करते हुए वे झूठमूठ अपने को गालियाँ लेते और पाल की शुद्धि और पवित्रता पर उसकी प्रशंसा करने लगते। आम तौर पर तो वह समझ गया कि स्त्री जीवन में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है लेकिन पता नहीं कैसे वह उन दो विरोधी निर्णयों को जोड़ नहीं पाता था—एक तो यह कि औरत अहम रोल अदा करती है और जिसका उसे व्यक्तिगत अनुभव भी था और दूसरा यह कि स्त्री पुरुष की शत्रु

होती है।

एक बार मालिक ने उसे लेक्चर पिलाया। "औरतों से जरा सम्हल के रहना, पाल। औरत के फन्दे में न आ जाना। तव तो तेरा काम ठीक चलेगा। किसी से भी पूछ ले तू, यही कहेगा कि दुनिया में सब से बड़ी बेड़ी या हथकड़ी है तो वह औरत। वे बड़ी लालची होती हैं। चाहती है रहें ठाठ से, काम कुछ भी न करना पड़े। मेरी बात मानो, मुझे बावन बरस हो गये, इस दुनिया में आये हुए और दो बार शादी भी की है मैंने।"

फिर यहां भी वही भयंकर, रहस्यमयी स्त्री थी। वह पहली स्त्री थी जिसने पाल में यह चेतनता पैदा की कि वह जो इतना मनहूस और दूसरों से अलग दीखने वाला लड़का है, पाल को उसकी सेवा-सुश्रुषा का पात्र है। वह उसके क़रीब आई और उसकी बगल में बैठ गई—उस व्यक्ति की बगल में जो इस असार संसार में अकेला था, जिसका यहां कोई ऐसा व्यक्ति न था जिसे वह मित्र कह सकता।

"क्या कर रही है वह अब ?" पाल ने सोचा और बड़ी आहिस्तगी से सिर घुमाया ताकि उसे देख सके।

वह फर्श पर बैठी बडी विचारशील हो अधखुले दरवाजे में से आँगन की ओर देख रही थी। उसका चेहरा बड़ा दयालु और सुन्दर था, नर्म-नाजुक था; उसकी नीली, विनीत आँखें गुलाबी और भरे-पूरे होंठ यह सब स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा था।

"तुम्हारी इस मेहरबानी का शुक्रिया,"—पालने अपना हाथ अनजाने उसकी ओर बढ़ाते हुए धीरे से कहा।

वह कांपने लगी और कनखियों से उस ओर देखने लगी पर उसने उसका हाथ अपने हाथ में न लिया।

"मैं तो समझी तुम सो गये होंगे। देखो तो, तुम्हें यहां से जाना पड़ेगा। फौरन यहां से निकलना पड़ेगा। उठो, चलो चलें अब।"

पाल ने अपना हाथ नहीं लौटाया और जोर देते हुए दोहराया :

"इतनी मेहरबानी का शुक्रिया !"

"अरे बाप रे ! तुमने फिर वही शुरू कर दिया। अरे तो उससे क्या होता है ? कौनसी मेहरबानी ? बाहर गर्मी ज्यादा है इसलिये मै जरा अन्दर आँन बैठी हूँ इसमें मेहरबानी काहे की। चलो उठो, खड़े होओ !"

लड़की को क्रोध-सा आ गया। उसे सहारा देकर उठाते हुए उसने अपना मुँह फेर लिया मानो उससे आँखें न मिलाना चाहती हो।

पाल उठा, खून दौड़कर उसके सिर में जमा हो गया। वही मंद शोरगुल उसे फिर सुनाई दिया।

"मुश्किल है, मुझसे चला······" उसने खुसरपुसर की, उसके पैर अब कांप रहे थे। उसे ऐसा महसूस हुआ मानो वह दर्द उसकी हड्डियां चीरे दे रहा हो।

"ठीक है जी। किसी-न-किसी तरह तुम्हें खड़ा तो होना ही पड़ेगा। यहाँ तो तुम रह नहीं सकते।" उसके सहारे वह आंगन के कुहरे भरे वातावरण में विलीन होता हुआ दिखाई दिया ! कुहरे में से उसे दूकान की दहलीज पर खड़े हुए मालिक और गूज की धूर्तता-पूर्ण हँसी दीख पड़ी।

"मैं और आगे नहीं जा सकता·······!" उसने कर्कश स्वर में कहा और उसे लगा मानो वह किसी बिना धरातल के गढ़हे में धकेला जा रहा है।

जिन्दगी में पहली बार पाल को यह ज्ञात हुआ कि अस्पताल मात्र-इमारत नहीं, कुछ और भी है। जी मचलाने वाली पीली दीवारें, दवाओं व माजूनों की बदबू, थके हुए और तुनक-मिजाज कर्मचारी, डाक्टरों व उनके सहायकों के उदासीन चेहरे, रोगियों की कराहें, बेहोशी और सनकें, सफेद लबादे, रात की टोपियाँ, पत्थर के फर्श पर घिसती हुई स्लीपरों की सरसराहट—ये सब चीजें एक अत्यंत निराशा-जनक वातावरण प्रस्तुत कर रही थी जिसमें यदि कुछ था तो निर्जीवता और पीड़ा की भारी, निरंतर कराहें व रोने-पीटने की आवाजें……।

पाल ग्यारह दिन तक बेहोश रहा। अभी पाँच ही रोज हुये कि वह संकट दूर हुआ है। अब उसकी हालत सुधरने लगी थी। अर्दली ने उसे बताया कि तुम्हारा मालिक एक बार तुम्हें देखने आय था, गूज दो बार आया था, "तुम्हारी बहन" दो बार आई—एक बार किसी दोस्त के साथ और एक बार अकेले ही। वह थोड़ी शकर, चाय, मुरब्बा और दूसरी छोटी-मोटी चीजें एक थैले में रख गई हैं।

जब अर्दली ने बहन का जिक्र किया तो पाल का ताज्जुब से मुँह बंद हो गया। पर उसे एकदम खयाल हुआ कि अर्दली का मतलब नालिया से है। कुछ भी हो इस खयाल के आते ही पाल की बाछें खिल गईं।

"क्या लड़की है वह भी!" उसने बुदबुदाते हुए कहा। उससे मिल-लें तो कितना आनन्द आये।

लेकिन काले बुखार के मरीजों को तीमारदार बुलाने की इजाजत

नहीं थी। जब तक उसे वार्ड नं० ५ में न भेज दिया जाय तब तक तो खैर इजाजत मिल ही नहीं सकती।

"सिवाय डाक्टरों व नौकरों के और यहाँ कोई नहीं आ सकता," अर्दली ने समझाते हुए कहा। हालांकि यह सब कुछ रौब के साथ कहा गया था लेकिन पाल के पास तो एक ही सवाल था पूछने के लिए : कितने दिन मे मुंतकिल करोगे वार्ड नं० ५ में ?

जवाब मिला यह आपकी नाक की हालत पर मुनहसिर है। "अभी तो आपकी नाक पीली और सूखी है पर कुछ ही दिन मे यह सूज कर लाल हो जायगी। जब ऐसा होजायगा तो आपको वार्ड नं० ५ में भेज दिया जायगा। काले बुखार के मरीजों को उनकी नाक देख कर ही मुंतक़िल किया जाता है और ऐसा ही कोई सात बरस से करते भी आये है हम लोग। बस हमारा तो यही कार्यक्रम बन गया है।"

अर्दली भी था बड़ा बातूनी। चूंकि नौ मरीजों में सिर्फ पाल ही उसकी बातें सुन और समझ सकता था दूसरे किसी की हालत ही ऐसी न थी इसलिए पाल को ही बेचारे को यह सारा बोझ संभालना पड़ता था। अर्दली एक नाटा-सा, पतला-दुबला, सुर्ख सिर वाला आदमी था जिसकी आँखें सफेद और उदास थीं। जब भी उसे फुर्सत होती वह पाल के पलंग पर आन बैठता और बक-बक शुरू कर देता :

"क्या हाल है, बेहतर है न पहले से ? अच्छा, तो यानी सब ठीक चल रहा है। बस तो फिर गये आप नं० ५ में। अच्छी बात है आप बीमार होगये। काला बुखार बड़ी जोरदार बीमारी है—जिस्म का सारा मैल और गंदगी दूर कर देता है। इन्सान पाप करते-करते बड़ा घोर बदमाश बन जाता है और उसके सारे शरीर में पाप का कूड़ा जमा होता जाता है। लेकिन एक बार उसे काला बुखार आया—कि बस सारा कूड़ा बह गया। यह क्योंकर होता है, जानते हैं ? यह होता है बेहोशी की वजह से। आपने देखा होगा कि बेहोशी की हालत में आपकी

रूह जिस्म को छोड़ देती है और घूमती-फिरती है, कष्ट भोगती है और अपने पापों का प्रायश्चित करती है। जी हाँ, यही तो है! अब आप शायद कह बैठें कि काले बुखार के मरीज़ मर भी जाते हैं, ठीक है हाँ, ऐसा भी होता है। यह तो इन्सान की तक़दीर है। बायबिल में भी यही आया है। जानते है आप, लोग सिर्फ काले बुखार से ही नहीं मरते। वह तो यों ही होता है कि जिस्म का जो साज-सामान होता है वह इस्तेमाल होते-होते कमजोर हो जाता है, घिस जाता है और रूह के लिए नई पोशाक दरकार होती है। यानी वह किसी और खोल में जाना चाहती है और इन्सान के लिए एक ही खोल होती है—धरती! बस यही एक खोल है। क्या आपका कोई रिश्तेदार मर चुका है? नही? आह! मेरे कुनबे के नौ आदमी मर चुके हैं। एक तो धरती ने जिंदा निगल लिया। वह नलों की मरम्मत किया करता था। एक बार वह नल जमा रहा था और ज़मीन फटी—धड़ाम से वह उसके अन्दर! बस निकोलाई खतम! ज़मीन उसे निगल गई। उन्होंने उसे खोद निकाला पर वह खतम हो चुका था! ज़मीन आपको हमेशा घसीट लेती है, उससे आप बच नहीं सकते, भाग नहीं सकते। भाग कर अगर आप नदी में भी कूद पड़ें तो भी जाकर धरातल से ही टकराएँगे। आग में कूद पड़िये आप जल कर खाक हो जाएँगे। धरती तो अपने आप लोगों को ढूँढ लेती है। बहुत जल्दी ही वह मुझे भी पुकार लेगी। अनासिम, दोस्त आजाओ क़ब्र के अन्दर! और ज़ाहिर है मुझे वहाँ जाकर लेटना पड़ेगा। चाहे आप कुछ ही क्यों न करें लेकिन बहरहाल आपको वहाँ जाना ज़रूर पड़ेगा, बस! और ऐसा ही होता आया है, मेरे बेटे। तुम लाख बहाने बनाओ—मैं नही जाना चाहता पर वह एक न सुनेगी। वह तुम्हारे दिल की धड़कन में छिपी हुई है, तुम ज़रा उल्टे-सीधे हुए, और उसने धर दबाया। तुम्हारी जिंदगी ख़तम, बस! यह दुनिया तभी तक जिंदा है जब तक तुम इसमें घूमते-फिरते रहो और सक्रिय रहो वरना बस हिचकी आई

और खतम।"

कभी तो वह लगातार दो-दो घण्टे बोलता चला जाता था। कोई उसकी बातें सुन भी रहा है या नहीं इसकी उसे रत्ती भर परवाह न थी। अपने वे शोकांत वक्तव्य वह तब तक देता रहता था जब तक कि उसकी बड़ी-बड़ी आँखें चमकने न लगतीं और उनमें एक विचित्र धुँधला-सा रंग न उतर आता जो ऐसा प्रतीत होता मानो उसकी पुतलियाँ बादलों की परछाईं ने ढँक ली है। तब उसकी आवाज में धीमापन आ जाता, उसके वाक्य और भी टूट-फूट जाते और वह छोटे-छोटे वाक्य इस्तेमाल करने लगता। आखिरकार, वह एक गहरी साँस लेता और शब्द के उच्चारण के बीच ही रुक जाता। उसकी आँखो मे श्वेत आतंक झलकने लगता।

अर्दली की बातों का पाल पर शायद ही कोई असर पड़ा हो क्योंकि वह उसकी बातें कुछ अनमने से ही सुनता था, कभी सुनता ही न था। वह अपने ही विचारों मे निमग्न रहता था, और अब उसके अँधियारे जीवन में आशा की एक धुंधली-सी किरण चमकी थी। उसे आभास हुआ की भविष्य में उसके ढाढ़स के लिए कुछ सामग्री अवश्य है। वह क्या सामग्री थी इसकी तो वह कल्पना भी नहीं कर सकता था। हवाई किले बनाने के लिए भी उसके पास साज्-सामान नाकाफी था। वह जिंदगी के बारे में भी कितना जानता था—यही न कि दूसरों के सुने हुए शब्द उसे याद हो गए थे। अब तक तो वह उन विचारों व गुत्थियों में सक्रिय भाग लेने से बचा रहा था लेकिन अब उसे महसूस होने लगा था कि कुछ नई, बड़ी, अनजानी घड़ी समीप है जो उसको एक नई जिंदगी अता करेगी। सच पूछिए तो अब तक वह कभी निश्चय के साथ कुछ सोच ही न सका था उन सब बातों के बारे में। न ही उन्हें अदा करने के लिए उसके पास काफ़ी लफ़्ज थे। उसके विचार बड़े कलील थे। लेकिन फिर भी अस्पताल में जब से उसे होश आया था और उसे नतालिया की नीली आँखों में वह झलक याद

आई थी तबसे उसमें कुछ नया शऊर व बेदारी आ गई थी, उसकी अँधियारी आत्मा में कई नई उत्तेजनाएँ पैदा हो गई थी। और नौकर की इस खबर से कि वह दो बार उसे देखने अस्पताल में आई थी उसके विचार और भी पुख्ता और बुलन्द हो चले थे।

बीस वर्ष तक किसी ने उसकी सुध न ली थी। पर वह इंसान था बगैर किसी की तवज्जो व हमदर्दी के कैसे जिन्दा रहता। और इंसानों की निस्बत उसमें कुछ विशेषता भी थी और वह यह कि वह अकेला था और इसलिए लोगों की तवज्जो की उसे कही ज्यादा लालसा थी। उसकी यह कामना सर्वथा स्वाभाविक और अनजानी थी। पाल बेचारे को खबर हो न थी कि वह जिस ध्यान या तवज्जो की ख्वाहिश कर रहा है वह आखिर है किस प्रकार की चीज, कहाँ से आयेगी वह या किस रूप में आयेगी। पर अब वह आ चुकी थी और वह बडी ईमानदारी व खुलूस से यह आशा लगा रहा था कि यह सिर्फ शुरुवात है और भविष्य मे उसके लिए नए-नए विचारों का भण्डार खुला हुआ है। ज्यों-ज्यों दिन बीतता और उसे अपनी खोई हुई शारीरिक शक्ति की बहाली का तीव्र अनुभव होता जाता त्यों-त्यों उसमें यह उत्कण्ठा और भी तीव्रता से जागृत होती जाती कि कब मेरे ख्वाब की ताबीर बर आये और कब मै नई जिंदगी में प्रवेश करूँ।

जब पाल वार्ड नं० ५ में मुंतकिल कर दिया गया तो अर्दली अनासिम को बड़ा सदमा पहुँचा। उसका एक-मात्र श्रोता हाथ से निकल गया था। उसने अपने तईं अस्पताल के अधिकारियों पर जोर दिया और कहा कि पाल को समय से पहले ही हटाया जा रहा है; अब भी उसकी जान को खतरा है, कही वह मर न जाय क्योंकि उसकी नाक अभी तक पूरी तरह नहीं सूजी है।

एक दिन पाल जब अपने उलझे हुए अर्ध-विचारों और अर्ध-चेतनाओं में डूबा पलंग पर लेटा हुआ उन मक्खियों को निहार रहा था जो छत पर घूम-फिर रही थी तो किसी ने बड़े मृदुल व धीमे स्वर में

ठीक उसके सिर पर खड़े होकर कहा:

"पाल !"

सुनते ही वह काँप गया और भयभीत हो गया। कितनी अप्रत्याशित बात थी वह उसके लिए ! और वह भी कुछ घबड़ा गई।

"कहो पाल, तो आखिर तुम्हें मुंतकिल कर दिया, शुक्र है खुदा का ! मैं तुम्हारे लिए यह लाई थी........" और उसने एक छोटी-सी पुड़िया उसके हाथ में देदी।

लज्जित और भयभीत हो उसने एहतियात के साथ वार्ड के इर्द-गिर्द देखा।

पाल का सारा भय इस असीम आनन्द और उल्लास से धुल गया और उसके गालों पर धुँधली लालिमा उभर आई।

"शुक्रिया ! बहुत-बहुत शुक्रिया आपका। मैं बहुत एहसानमन्द हूँ आपका, बहुत ! बैठिये ना यहाँ—या यहाँ बैठ जाइये।······नहीं, नहीं आप यहाँ बैठिये यह जरा ठीक रहेगा। शुक्रिया। कितनी अच्छी है आप। यकीन कीजिये, बड़ी अच्छी है आप····" उसने हकलाते हुए कहा, उसकी आँखें चमकने लगीं। उसकी तो मानो काया ही पलट गई। इस अनाशातीत स्वागत पर वह और भी व्याकुल हो गई। वह बारी-बारी से एक-एक मरीज को देखती रही मानो डर रही हो कि कहीं इन्हीं में से कोई ऐसा न हो जो मुझसे दुर्व्यवहार कर बैठे।

"अच्छा, अच्छा मै बैठ जाती हूँ। आप अपने को कष्ट न दें। आपके लिए यह ठीक नहीं—" उसने धीमे स्वर में कहा और अपनी तलाश जारी रखी।

पाल और उत्साहित हो गया और उसने फिर उसे विश्वास दिलाया।

"आप परेशान न हों। ये सब मरीज बड़े अच्छे, भले मानस है···· हम एक दूसरे से बातचीत करते हैं····ये सब बड़े बढ़िया लोग है। किसी को दुख पहुँचाना इन्हें अभीष्ट नहीं····ये तो बड़े हँसमुख लोग

है। ओह, मुझे कितना आनन्द आता है कि आप यहाँ आईं !" उसने तकरीबन एक चीख के साथ अपनी बात पूरी की।

उसने वार्ड की जाँच पूरी करली थी और एक गहरी साँस लेते हुए अब वह बड़ी जोर से मुस्करादी।

"बड़ी खुशी की बात है अब आप अच्छे हो रहे है। मै यहाँ पहले भी आ चुकी हूँ, मालूम है ना आपको? आप उस वक्त बेहोश थे। अपने दिमाग पर जोर न दीजिये। मै आपके लिए·······हाँ, डाक्टर ने मुझे उसकी इजाजत देदी थी·······खा लाजिए इसे !" और वह पुड़िया खोलने लगी।

लेकिन पाल के हर्ष की सीमा न थी, उसने काँपते हाथों से वह पुड़िया छीन ली और कहा :

"सच जानिये, आप तो मेरे लिए स्वर्ग से भेजी गई देवी हैं, हाँ हाँ भगवान साक्षी हैं मेरी इस बात का !·······

"ये क्या कर रहे है आप ?" और वह फिर घबरा गई।

"नहीं, ठीक ही कर रहा हूँ। मुझे कहना नहीं आता। कैसे कहूँ आपसे। मै हमेशा खामोश रहता हूँ। लेकिन समझता नहीं क्यों, जानती हैं न आप तो। मुझे कहने दीजिये यह। आखिर आप मेरी होती ही क्या हैं ? अजनबी ही ना। और मै भी तो एक अजनबी ही हूँ। लेकिन आप नहीं जानतीं आप ही वह पहली महिला है जो मुझे देखने आई हैं·······और फिर वहाँ तहखाने में जो कुछ आपने किया··· भला क्या वजह थी जो आपने वह एहसान मुझ पर किया ? मैं इस दुनिया में बिलकुल अकेला हूँ और आज तक इस जिन्दगी में किसी की रहमदिली मैने नहीं देखी····बस यही वजह है कि मैं आपका इतना आभारी हूँ। समझ रही हैं आप ? आपका आना, मुझसे हमदर्दी दिखाना कितनी अच्छी बात हैं यह ! कितनी खूबसूरत !" और उसने उत्तेजित हो उसके हाथ झंझोड़ दिये।

"बस, खामोश रहिये। इस तरह बोले जाना आपके लिये अच्छा

नहीं है। वरना वे मुझे आगे से यहां आने नही देंगे....." उसने पाल को चुप करने की कोशिश की लेकिन अब भी पाल की भावुकतापूर्ण और टूटी-फूटी तकरीर पर वह घबराहट उसके मुख पर विराजमान थी। वह बखूबी समझ गई थी कि वह ही पाल के उल्लास व आनन्द का कारण थी।

"क्या कहा वे आपको आने नहीं देंगे ?" उसने नतालिया के चेहरे पर नेत्र गड़ाते हुए भयभीत हो पूछा। और विरोध करते हुए कहा: "यह हरगिज नही हो सकता ! आप तो मेरी बहन के समान है ! वे ऐसा नही कर सकते ! यह कह किसने दिया आपसे ? यह सब बकवास है। मुझे आपसे मिलने का हक है.......मै इसकी शिकायत करूँगा...."

अजी, आप भी कमाल करते है। काहे की शिकायत करेगे आप ? मेरे कहने का यह मतलब थोड़े ही था। क्या करेगे आप, कोई इन्कलाब बरपा कर देंगे ? आप भी बड़े मजेदार आदमी हैं।"

असल मे पाल का वह हर्षोन्माद उसे कुछ हास्यजनक लग रहा था। वह ठीक से समझ ही न पाई कि आखिर उसे इस कदर फूले न समाने की क्या जरूरत थी। लेकिन यह जानकर कि वही उसका कारण थी उसे बडी खुशी हुई। अब उसके हौसले बढ़ गये और वह कुछ रौब भी पाल पर गाँठने लगी जिसको पाल ने सहर्ष स्वीकार किया। जितनी खुशी नतालिया को उसे दबाने में हो रही थी उतनी ही खुशी उसे दबने मे। उसने जोर जबरदस्ती से उसे एक रोल खिलाया, उसका तकिया ठीक से रखा, मिजाजपुर्सी की और अन्त मे कुछ कठोरता से उससे बोली। उसकी शुश्रूषा और देख-भाल से तो वह पानी-पानी हो गया और नतालिया इस पर खूब प्रफुल्लित हुई।

अब वह खामोश था और इसी पर सतुष्ट था कि नतालिया का हँसमुख चेहरा बड़े आनन्द और अचरजपूर्ण निगाहों से देखने को उसे मिल रहा था। उसने पाल को बताया था कि तुम जल्द ही अच्छे होकर

बाहर आ जाओगे, मेरे घर आकर मेरे साथ चाय पियोगे, मैं और तुम जंगल में घूमने चलेंगे, नाव में सैर करेंगे—और इसी प्रकार के अनेक सब्ज बाग उसने उसे दिखाये।

पूर्व इसके कि वह उन स्वाभाविक दृश्यों का पूर्ण चित्र देख सके, मरीजों से मिलने का समय पूरा हो गया और उसे जाना पड़ा।

विदा होते समय पाल ने बड़ी दयनीय दृष्टि से नतालिया की ओर देखा और बड़े कोमल स्वर में याचना की, "फिर आइयेगा ना ?"

अब वह अकेला रह गया था और उसने ज्योंही आंखें बंद कीं उस के सामने नतालिया आ खड़ी हुई—ठिगनी, भरे जिस्म की, साफ रंग की, गुलाबी गालों वाली, तीखी कटार-सी नाक वाली और बड़ी-बड़ी फांकों-सी आंखों वाली नतालिया, कितनी सुन्दर, कितनी युवा थी वह! उसकी गहरी रंग की ब्लाउज और घघरी, उसके सुव्यवस्थित और बने-बनाये केश—इन सबसे कितनी सादा, प्यार-भरी और दयालु लगती थी वह ! जब बोलती थी उसके छोटे- छोटे चमकीले दाँत होंठों के बीच चमक उठते थे। उसके रोम-रोम से दयालुता टपकती थी।

पाल अपनी इस प्रतिमा के बारे में सोचता रहा और उसे अपने में कुछ परिवर्तन महसूस हुआ। उसे आश्चर्य हो रहा था कि वह इतनी जल्दी-जल्दी और आसानी से उससे कैसे बोल रहा था। और वह उस से इतनी अच्छी तरह, प्यार से कैसे व्यवहार कर रही थी। कोमल भावनाओं में डूबा हुआ आखिर वह सो गया।

अगले दिन चारों ओर कुहरा छाया हुआ था जो बड़ा आनंदप्रद लग रहा था। वह अब तक बीते हुए कल की घटनाएँ याद कर रहा था। वह हँसता रहा और सैकड़ों बार उसने धीमे स्वर में कहा : "बहुत-बहुत शुक्रिया आपका !" इसी वाक्य के द्वारा, जिसे वह बार-बार दोहराता रहा उसने हजारों भाव प्रकट किये।

कल फिर मुलाकातियों के आने का दिन है, शायद वह भी आए। वह कल्पना करता रहा कि क्या कहेगा उससे, और किस प्रकार कहेगा।

वह अभी से उसकी प्रशंसा में वाक्य बनाने लगा......उसने यह भी कल्पना की कि वह अच्छा हो गया है, नतालिया के साथ नावमें सैर कर रहा है और उसे एरिफी के किस्से सुन रहा है।

कल हुई। उसका सारा शरीर बुखार से काँप रहा था और वह कातर दृष्टि से सुबह से शाम तक दरवाजे की ओर टिकटिकी लगाये देखता रहा। वह उसका इन्तेजार करता रहा और उम्मीद लगाये सोचता रहा कि वह अब आई, तब आई और आते ही वह मरीजों को देखकर पाल को खोजने लगेगी जैसा उसने पहले दिन किया था। फिर वह आकर उसके पलग के पास बैठ जायगी और वे बातें करने लगेंगे... लेकिन सारा दिन बीत गया और वह न आई।

उस रात पाल को बड़ी देर तक नींद न आई। उसने अनुमान लगाने की कोशिश की कि आखिर क्या वजह हुई होगी जो वह न आ सकी। और जब दिन निकला तो दर्द के मारे उसका सिर फटा आ रहा था। उसके हाथ-पाँव ढीले पड़े थे, अब उसे कोई सुध न रही थी।

दूसरे दिन वह चुपचाप लेटा रहा—न हिला-डुला, न उसने कुछ सोचा, न कोई कल्पना की और न किसी चीज की आशा। और भी बहुत से दिन आये और चले गये पर वह तब भी न आई।

पाल अब लेटे-लेटे उन तमाम बुरी बातों को याद करने लगा जो उसने औरतों के बारे में सुन रखी थीं। उसे मजबूर होकर उन सबको अपनी इस नवपरिचिता पर लागू किया पर न जाने क्यों कोई बुरा रंग उस पर चढ़ ही न सका। उसने उसे गंदी शराब पिये हुए, चोर, गालियों देने वाली, चिढ़ाने वाली स्त्री बनाकर भी सोचा। लेकिन फिर भी, वह तो वही सादा, खूबसूरत और दयालु दीख पड़ी।

दिन गुजरते गये। अब वह बरामदे में टहलने लगा था जहाँ की खिड़कियों से सड़क साफ दिखाई देती थी। किसी भी खिड़की पर जाकर वह रुक जाता और सोचता—मैं कब यहाँ से छूटूँगा—उसे वह प्रबल इच्छा बेक़रार किये दे रही थी कि कब वह वहाँ से निकले और

सूर्य से प्रकाशित सड़कों पर स्वस्थ, जोशीले और व्यस्त लागों में जा मिले और उनके साथ सड़कों पर घूमे।

हरेक स्त्री जो अस्पताल की ओर आती हुई दिखाई देती उसके अन्दर आशा की एक किरण पैदा कर देती। आधा घन्टे तक वह बरामदे मे खड़ा देखता रहता कि वह आयेगी—आयेगी। लेकिन वह फिर कभी न आई; पाल को महसूस हुआ कि उसे धोखा दिया गया है, वह अब और भी गमगीन हो गया।

एक दिन उसने अर्दली की आवाज सुनी :

"पाल गिबली को दफ्तर में बुलाया है।"

वह लपका हुआ दफ्तर पहुँचा।

"यह लो ! कोई तुम्हारे लिये दे गया है," डॉक्टर के पतले-दुबले ऊँचे सहायक ने मूँछों पर ताव देते हुए कहा। उसने पाल को पुड़िया देदी जो कागज में लिपटी हुई थी।

"अरे, पर इसे—लाया कौन ?" पाल ने पूछा और काँपते हाथों से उसे ले लिया।

"एक बूढ़ा आदमी था कह रहा था······"

पाल ने उदास हो सिर हिला दिया। उसने पुड़िया उस सहायक के सामने रख दी।

"······वह तुम्हारा मालिक है ? उसके साथ एक औरत भी थी जिसके मुँह पर पट्टी बंधी हुई थी। वह तो नौजवान थी।"

पाल स्पंदित हो उठा और उसने पुड़िया फिर उठाली।

"क्या बहुत ज्यादा पट्टी बंधी हुई थी उसके ?" उसने पूछा। सहा-यक की भँवें और मूँछें ऊपर को उठ गईं।

"क्या मतलब है तुम्हारा, बहुत ज्यादा पट्टी तो नहीं बँधी थी ?"

"नही, मै—कुछ नहीं। शुक्रिया आपका बहुत-बहुत। उसके दांतों में तकलीफ होती ही होगी शायद।"

"हुँ ऽऽम ?" सहायक ने सिर हिलाया। "हो सकता है उसके दाँतों

में तकलीफ हो। हाँ ?"

"उसने मेरे बारे में तो कुछ नही कहा ?" पाल ने नरमी से जिज्ञासा भरे स्वर में पूछा।

"हाँ, कुछ कहा था उसने। कह रही थी, 'वह कुछ बेवकूफ सा है, उसका ख्याल न करना और माफ कर दिया करना।' अच्छा, अब तुम जा सकते हो। जाओ तुम्हे माफ कर दिया।"

पाल मुडा और वहा से चला आया। वह समझ गया उसकी खिल्ली उड़ाई जा रही है। उसने अब सोचा कि आखिर यह वजह थी जो वह अब तक नही आई थी।

बेचारी के दाँतों में दर्द हो रहा होगा और अब जब वह कुछ कम हुआ तो वह चली आई। कैसी औरत है वह ?

हफ्ते भर बाद वह एक बार फिर डॉक्टर के सहायक के दफ्तर में खड़ा था। सहायक बैठा किसी किताब में गड़ा हुआ था और गोली-यंत्र से खेल रहा था।

"सब चीजें मिल गईं तुम्हें ?" उसने पूछा, और पाल के उत्तर की प्रतीक्षा किये बगैर ही उसने कहा, "बहुत अच्छा, तो जाओ फिर, गुडडे !"

पाल ने सिर झुकाया और अस्पताल से निकल कर बाहर सडक पर आ गया। आधा घण्टे बाद धूप और थकावट से शादाब उसकी आँखें चकाचौध हो गईं, सिर चकराने लगा और वह दूकान में दाखिल हुआ। सबसे पहले उससे मालिक मिला।

"अरे, तुम आ गये ! वडा अच्छा हुआ ! कहो क्या हाल है ! तुम तो बडे दुबले हो गये। चलो, कोई बात नहीं तुमने हँसना तो सीख लिया।"

पाल ने जब दूकान को सब तरफ से देखा तो उसे हँसी आ गई। जब उसने दूकान का दरवाजा खोला और देहलीज़ पर खड़ा हो गया तो सुन्दर व कोमल विचारों से उसका मस्तिष्क भर गया। यहाँ की

हरेक चीज कितनी अच्छी थी, कितनी घनिष्ट थी और कितनी जानी-पहचानी थी उसके लिये। यहाँ तक कि काजल-सी काली ये दीवारें जिन पर कहीं-कहीं सफेद धब्बे रह गये थे—खुदा जाने क्यों काजल की परतें उन तक नहीं पहुंच पाई थी—वे भी उसे देखकर स्वागतार्थ मुस्कराते हुए दिखाई दिये। फिर कोने में लगा उसका बिस्तर था जिसके ऊपर दो चित्र टंगे हुए थे—एक तो 'हश्र के दिन' का था और दूसरा 'जिन्दगी की राह' का।

मिश्का मुँह खोले खड़ा था, उसकी चमकीली, काली आँखें पाल की ओर लगी हुई थी और वह पाल की वापसी पर बहुत खुश दिखाई देता था। मालिक भी उसके अच्छा हो लौट आने पर खुश था।

मिरोन टोपोरकोव ने कहना जारी किया :

"अरे, आ ना यहाँ, यहाँ आकर बैठ जा और जरा आराम करले। तू तो काफी थक गया होगा। मिश्का और मैं हरेक चीज की देख-भाल करते रहे हैं। गूज ने दारू पीना शुरू कर दी है। मैं किसी और को रखना नहीं चाहता था, यही सोच रहा था कि तू आज आये, कल आये। अच्छा हुआ तू आ गया। अब हम दोनों सिलाई पर जुट जायेंगे। चीजें बनायेंगे, धड़ल्ले से काम करेंगे और कैसे, हाँ! मैंने फिर काम शुरू कर दिया है। अर्सा हुआ मैंने पी भी नहीं है—वैसे पीता तो हूँ लेकिन ऐसा नहीं कि होश ही न रहे।"

पाल बड़ी गौर से यह सब कुछ सुन रहा था और मन-ही-मन खुश हो रहा था—एक तो इसलिये कि आज मालिक इतनी हँसी-खुशी बातें कर रहा है और दूसरे इसलिये कि उसका लहजा भी कुछ अपनापन और अच्छाई लिये हुये था। पाल का दिल उस वातावरण को देखकर गद्गद् हो रहा था और वह गर्मजोशी महसूस कर रहा था।

"मिरोन अब हम जमकर काम करेंगे!" पाल ने आनन्द व आश्वासन के स्वर में कहा। मालिक अपनी कह चुका था और अब चमड़े के टुकड़े को फर्मे पर चढ़ाकर नापने में लग गया था। "मैं आपका

बहुत शुक्रगुजार हूँ कि आप मुझे देखने अस्पताल गये। मेरे लिए तो वह बड़ी बात थी, क्योंकि इस दुनियाँ में मेरा कोई नहीं है.......” पाल ने गर्मजोशी से कहा।

“आँ रुखाँ !” मालिक ने बात काटते हुये कहा। “अच्छा, तो अब बातें बनाना आ गईं तुझे, ऐं ! क्यों रे लौंडे ! कोई इंसान कितना ही बुरा हो अच्छाई भी उसमें होती ही है। तू जब बीमार नहीं पड़ा था तब यह बात कहता ना तो तेरी छाती फट जाती। अच्छी बात है, अब तुझमें समझ आ गई है ! वक्त की बात है, अब तेरे और अच्छे दिन आने वाले है, मालूम होता है। और हाँ, एक बात और कह दूँ तुझसे। वह जो नतालिया है ना, उसके घर तू जरूर जाना। जो भी वह आदत ही से बड़ी भोली है पर तुझे उसका एहसानमन्द होना चाहिये। तुझे पता भी न होगा उसे तेरी कितनी फिकर थी ! उसे बेचारी को बड़ा दुख होता था तेरी बीमारी का। हर रोज ही वह यहाँ आ जाती और पूछने लगती, ‘गये थे क्या आप उन्हें देखने ? गये थे ना ? क्या हाल है उनका, मिले थे आप उनसे ?’ ······हाँ, हाँ भैया, उसमें अभी भलमनसाहत का माद्दा बाकी है। बड़ी भली औरत है वह, इसमें कोई शक नहीं। तो तू उसके यहाँ चला जाया कर ! जानता है, हाँ, उस जैसी लड़की—और इतने जल्दी तुझसे हिल गई ! पिछली बार जब हम तेरे अच्छे होने की दुआ कर रहे थे तो आहा, क्या बातें की थीं उसने ! मैं तो कहता हूँ ऐसी अच्छी बातें मैंने उमर भर सुनी ही नही ! ‘देखा आपने वे हम-जैसों को कैसी गिरी निगाह से देखते है ?’ वह मुझसे कहती ! ‘हम उनकी नजरों मे सूअर है, कुत्तों से भी बदतर है, है ना ?’ और मै जवाब देता, ‘सच कहा तुमने !’ और फिर वह कहती, ‘वह’—यानी तुम, ‘मुझसे ऐसा मिलते है जैसे मै उनकी अपनी नातिन हूँ ! ठीक कहती हूँ ना मै मिरोन दादा ?’ और मैं कहता, हाँ, मै जानता हूँ।’ फिर वह बोलती, ‘तो फिर मै भी क्यों न वैसा ही बर्ताव उनसे करूँ ?’ बड़ी सीधी-साधी बात है ना ? लेकिन साथ ही

है बड़ी अजीब यह ! हमारी रोज मर्रा की जिन्दगी में तो ऐसा होता नहीं, कभी न हमने यह देखा न सुना। कुछ हमारी जानी-पहचानी बातों से तो यह बिल्कुल मेल खाती ही नहीं......"

इससे आगे मिरोन कुछ न कह सका। देखते-देखते वह किसी ऐसे रोड़े से टकाराया जिसे पाल न देख सका। पाल तो बड़ी गौर से और उल्लास-भरी भावभंगिमा लिये जो उसके चेचक-रूह चेहरे पर स्पष्ट झलकती थी मिरोन की बाते सुन रहा था। वह तो उस वक्त तक अपने मालिक की ओर देखता रहा जब कि मालिक अपने विचारों को अदा करने में असफल हो, योंही हाथ हिलाकर चुप न हो गया।

पाल भी अब मौन था। मिरोन की बातों ने उसके दिल व दिमाग पर इतना असर डाला और उसे इतनी खुशी हुई कि वह अपने दिल की बात जाहिर करने को अधीर हो उठा। लेकिन अबके वह अपनी बात कहने मे नाकाम रहा और उसने फिर अपने मालिक को धन्यवाद देना शुरू कर दिया।

"आपने जो कुछ फर्माया, मै उसके लिए आपका दिल से शुक्रगुजार हूँ। बहुत-बहुत शुक्रिया आपका !" और अपने आभार-प्रदर्शन में असमर्थ उसने आभार की मात्रा प्रकट करने के लिए हाथ खींच दिया। "यह बीमारी तो मेरे लिए वरदान साबित हुई। आपने भी ठीक ही कहा है। बीमारी के पहले मै जानवर जैसा ही था। लेकिन अब मुझे महसूस हो रहा है कि मैं इन्सान हूँ। अब लोग मुझे पूछते है। आपका बहुत-बहुत शुक्रिया ! ...." अपना दिल खोलकर वह अपने मालिक के सामने रख देना चाहता था और उसी प्रवल इच्छा के कारण वह बोलते-बोलते हाँपने लगा।

"यह सब बकवास है ! अगर तू बीमारी के पहले इतना जीदार नहीं भी था तो क्या हुआ ? यह बात जरूर सच है कि तू था बड़ा फूहड़। लेकिन बाबा, मै तो खुद नहीं जानता कि कौन-सी चीज बेहतर है—लोगों से दूर रहना या उन्हें दोस्त बना लेना। अच्छे, ईमानदार

लोग बहुत कम मिलते हैं······और उनकी संगति से अपना नुकसान ही होता है······ऐसा भी हो सकता है कि तुम उनसे फायदा उठा लो लेकिन तुम्हें जबान बन्द रखनी पड़ेगी और मुट्ठियाँ बाँध कर तैयार रहना होगा। और अगर कभी वे तुम्हें धोखा भी देदें तो उन पर गुस्सा करना बेकार है क्योंकि हरेक कोई धोखा देना चाहता है। जिन्दगी में आज इतनी भीड़-भड़क्का है कि किसी को धक्का देना नामुमकिन है। हाँ, तुम यह कर सकते हो कि इस झमेले मे पडो ही नहीं। पहले मार दे वह मीर, वाली मसल काम दे सकती है, इसलिए तुम्हें छले उसके पहले तुम उसे दे मारो। लेकिन देखो, एक बात का ख्याल रखना—औरतों से बचना! वे तो इतनी चालाक होती है कि तुम्हे पता भी न चले·कब डंक मार दिया उन्होंने। पहले तो औरत तुम्हें देखकर मुस्करा देगी, दूसरी बारी में तुम्हारा चुम्बन लेगी। तीसरी में तुम्हारी बड़ाई करेगी और चौथी बार ही मे तुम उस पर लट्टू हो गये। पाँचवी बार मे तुम उससे ऊब गये। तुम कहोगे मुझे छोड़ दो, लेकिन नही भैया क्यों छोड़ने लगी वह तुझे! इन बिल्लियों के ऐसे पंजे होते है कि तू उनसे छूट नही सकता। मै कहता हूं तू अपनी मौत के पाँच मिनट पहले ही मर जायगा, समझा दोस्त·······"

अब तो मिरोन को आ गया था जोश, चुनांचे बगैर किसी रोक के वह शाम तक इसी प्रकार की फिलासफी बघारता रहा।

पाल उसके ठीक सामने बैठा टेकुए से किसी चीज को भेदता हुआ मिरोन की बातें बड़ी गौर से सुनता रहा। लेकिन इसके बावजूद कि वह अपने मालिक के स्वगत भाषण को ध्यान पूर्वक सुन रहा था उसके उन निरंतर एकत्र होने वाले विचारों मे कोई बाधा न पड़ी।

"बस काफी हो गया!" मिरोन ने कहा और अपना भाषण तथा काम एक साथ खतम कर दिया। "लेट जा और जरा आराम कर ले। या—ऐसा क्यों न कर कि जरा बाहर सड़क पर निकल जा और थोड़ी ताजी हवा खाले?"

"नहीं, मैं उससे मिलने चला जाता हूँ........" पाल ने बड़े विनीत स्वर में, शर्माते हुए कहा ।

"तेरा मतलब है नतालिया से ? हुँऽऽम........अच्छा तो जा फिर," मालिक ने विचार-मग्न होकर कहा ।

लेकिन जब पाल ने दूकान के बाहर कदम रखा तो वह चिल्लाया:

"देखना, जरा सम्भल के रहना, कहीं वह तेरे गले न पड़ जाय ! ही, ही ही ! तुझे तो पता भी न चलेगा कैसे और क्योंकर सब कुछ हो गया.........वह बड़ी चलती-पुरजी है.........."

इस बात से पाल नाराज हो गया । उसने महसूस किया कि वह जानता है कि नतालिया औरों जैसी नहीं है । उसने खुद उसके बारे में बड़ी बुरी-बुरी बातें सोची थी, लेकिन उस पर एक भी न जम सकी थी । वह रहमदिल थी और इसी रहमदिली में उसका सब कुछ छिपा हुआ था ।

इन्हीं विरोधी विचारों में डूबा हुआ, पाल अटारी पर पहुँचा और उसने अपने को उस छोटे दरवाजे के सामने खड़ा पाया जो भिड़ा हुआ था । विचार-निमग्नता ने उसे यह भान ही न होने दिया कि वे सीढ़ियाँ उसने कैसे चढ़ीं । वहाँ पहुंचते ही वह विचलित हो उठा । अंदर जाने ही को था कि कुछ हिचकिचाया; सोचा अन्दर जाने के पहले खाँस-खाँसार दे ताकि अन्दर वाले को पता चल जाय कि कोई आया है । लेकिन, हालाँकि वह काफी जोर से खँखारा पर दरवाजे के अंदर के वातावरण मे कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई ।

"शायद सो रही है," उसने सोचा लेकिन वहाँ से लौटा नही । हाथ पीठ पर रखे वह वही खड़ा रहा और दिल ही दिल मे यह तमन्ना करता रहा कि अब वह उठे, अब वह उठे ।

गली में से उठता हुआ कुछ मन्द कोलाहल उसे सुनाई दिया । दिन भर की सूरज की तपिश के कारण अटारी से भभके निकल रहे

थे। जली-तपी जमीन से उठती हुई गंध उसके नथौड़ों में घुस रही थी।

सहसा उसने आहिस्ता से दरवाजा खुलते हुए देखा। वह पीछे हटा बड़े आदर भाव से उसने अपनी टोपी उतारी, नीचे की ओर झुका और बिना सिर उठाये ही उसके अभिवादन की प्रतीक्षा करने लगा। लेकिन वह कुछ न बोली। तब उसने अपना मुँह उठाया और गहरी साँस ली। न कोई उसके सामने खडा था और न ही कोई कमरे में था। जाहिर है कि दरवाजा खिड़की से आती हुई हवा के झोंके से खुल गया था।

उसने कमरे के अंदर नजरें दौड़ाईं। उसमें चीजें सब तितर-बितर पड़ी हुई थी। लगता था कमरा कई दिन से झाड़ा-पोंछा नही गया था दीवार के सहारे बिस्तर लिपटा हुआ पड़ा था; उसके सामने एक मेज पड़ी थी जिस पर कुछ मैली-कुचैली रकाबियाँ, रोटी के टुकड़े, सिगरेट के टुकड़े, दो बियर की बोतले, एक समावार और प्याले बिखरे पड़े हुए थे। एक लाल घघरी, जूते, कागज के सूखे व कुचले हुए फूल फर्श पर बिखरे पड़े थे।

कमरे के दृश्य को देख कर पाल का दिल बैठ गया। वह वहाँ से चला जाना चाहता था लेकिन आतरिक प्रोत्साहन से अनुप्रेरित वह देहलीज़ में दाखिल हुआ। वह बड़ा ही शोचनीय बिल था जिसकी छत ऐसी थी जैसे ताबूत का ढक्कन, दीवारों पर सस्ता-सा नीला कागज़ चिपका दिया गया था। वह भी जगह-जगह फट कर लटकने लगा था। उसे और कमरे की आम व्यवस्था को देख कर तो वह कमरा कुछ अजीब नजर आता था। ऐसा महसूस होता था मानो कमरे में भारी उथल-पुथल हुई हो।

पाल ने गहरी सांस ली, खिड़की तक गया और जाकर कुर्सी पर बैठ गया।

"मै चला ही क्यों न जाऊँ?" उसे ख्याल हुआ लेकिन अन्दर से तो वह वहीं जमा रहना चाहता था। जा कैसे सकता हूँ मै? वह यहाँ है नही, कमरे मे ताला नही लगा है और सारी चीजे इस प्रकार बिखरी

पड़ी है..........ज्यादा दूर नहीं गई होगी वह...........यहीं कहीं आस-पड़ौस में होगी।

और उसने नतालिया को देखने के लिए खिड़की में से झाँका। खिड़की में से सारा शहर उसे कुछ अजनबी-सा लगा। असल में तो शहर कहाँ था, बस छतें ही छतें दृष्टिगोचर हो रहीं थी और उन्ही के दरम्यान बागीचों के हरे-हरे द्वीप दिखाई दे रहे थे। हरी, लाल और कत्थई रंग की छतें एक दूसरे से सटी हुई बड़ी बेतरतीब-सी लग रहीं थीं। उन्हीं के मध्य एक गिरजे का मीनार जिस पर क्रास चिन्ह लगा हुआ था और जो अस्त होते हुए सूर्य की अंतिम किरणों से प्रकाशित था, आकाश से बातें करता हुआ प्रतीत होता था। शहर की सीमा के परे संध्या के कुहरे का धुआँ उठता और हल्के-हल्के छतों पर फैल कर उन्हें और भी नरम व अँधियारी बना देता। हरियाली के स्थान मकानों में घुल-मिल गये थे। पाल ने संध्या को अपनी परछाईं द्वारा सारी धरती को ढँकते हुए देखा! उसे कुछ सुखदाई कसक महसूस हुई। दूर फासले पर, शहर के उस पार जहाँ आसमान भी गहरे नीले रंग का था, दो सितारे चमके जिनमें एक तो बड़ा और लाल रंग का था, आनंदित व उज्ज्वल था और दूसरा ऐसे टिमटिमा रहा था मानो डर रहा हो।

आदमी हो तो ऐसा कि दुनिया भर की बातों को समझ सके इन सब बातों को—शाम, आकाश, तारे, सोया हुआ शहर और उसके विचार; वह आदमी ऐसा हो जो ब्रह्मांड के बारे में हर 'क्यों,' 'क्या', 'किसलिए' आदि सब जानता हो, वह जानता हो कि सृष्टि के विचारों और उसके अर्थों का गूढ़ रहस्य क्या है, जो व्यक्ति दुनिया को जानता है वह यह भी जानता होगा कि वह क्यों जिंदा है और जिंदगी में उसकी कौन-सी जगह है। इस प्रकार का आदमी शायद जिंदगी को आज की-सी शाम जैसा गर्म बना सके, और लोगों को इस प्रकार एकजूट करे कि हरेक आदमी एक दूसरे में घुल-मिल जाय और

किसी बात से न डरे।

इन्हीं विचारों की रौ मे बहा हुआ पाल खिड़की के पास बैठा रहा और उसे वक्त के गुजरने का ख्याल ही न आया, हालाँकि उसकी नजरों के सामने ही रात्रि के अंधकार का साम्राज्य फैलता चला आ रहा था। जब उसने सुना कि बाहर आँगन में कोई चिल्ला रहा है और उस ने जाकर देखा तब जाकर कही उसे महसूस हुआ कि वह वहाँ बड़ी देर से बैठा हुआ है। चारों ओर घना अंधकार छाया हुआ था और सारे आसमान पर तारे झिलमिला रहे थे। उसकी आंखों में नींद भरी हुई थी, सांस लेते हुए वह उठा और दरवाजे की ओर गया, ज्यों ही वह कमरे से बाहर निकला कुछ भारी, असमान चापों की आवाजें उसके कानों पर पड़ीं और वह ठिठक गया।

एक झूमती हुई आकृति सीढ़ियों पर चढ़ रही थी। वह सिसकियाँ भर रही थी, और रो रही थी। पाल एक ओर हट गया और दरवाजे के पीछे खड़ा हो गया।

"मुएँ बदमाश कही के!" शराबी की लड़खड़ाती आवाज भी सुन पड़ी!

पाल ने सोचा शायद कोई नतालिया से मिलने आया होगा। और जब उसने देखा कि वह खुद नतालिया थी तो उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। इतनी दूर से ही उसके मुँह से वोडका की बदबू आ रही थी; जब वह समीप आई तो उसने देखा कि उसके बाल बिखरे हुए हैं, उस के चेहरे पर शिकनें व झुर्रियाँ पड़ी हुई हैं और वह इतनी निढाल है कि बोल भी नही सकती। उसके दिल में नतालिया के लिये दया उमड़ आई पर न जाने क्यों वह उसकी सहायता के लिये न उठा। वह दरवाजे के पीछे ही दुबका खड़ा रहा। उसने कँधे से दरवाजे पर धक्का मारा और पाल को दीवार में धकेलते हुए कमरे में दाखिल हुई। फौरन ही ग्लासों और बोतलों के फूटने की आवाज सुनाई दी।

"जाओ मरो··········सब के सब··········तुम पर··········खुदा की मार··········"

शराबी की आवाज और स्वर में जो जख्मी थी, और कड़वाहट-पूर्ण थी, पाल भांप गया। वह वहां से नहीं हिला। उसने सांस रोकी और हालांकि वह सब उसके लिये आनन्ददायक न था फिर भी गौर से सुनने लगा। इसके बाद सिसकियों और गिले-शिकवों की चिल्लपों कानों में पड़ी।

"उसने मुझे मारा··········कुत्ते के बच्चे ने! क्यों मारा मुझे? मुझे उससे अपने··········पैसे मांगने चाहिये थे। मै वह··········माँग सकती थी··········साला गुण्डा! तीन रुबल··········हाँ तीन रुबल ही दरकार है··········और तूने समझा··········ठीक है भोली-भाली है··········इसलिये पीट लो! नही, तू झूठ बोलता है! ······झूठ··· झूठ! मैं भी महसूस कर सकती हूँ! क्या मै इन्सान नही हूँ, क्या मेरे पास दिल नहीं है··········अच्छा, ठीक है··········तो मै इन्सान नहीं··········लेकिन क्या मेरा भोलापन··········लेकिन क्या मुझे हक नही है··········कि··········मै··········नहीं यह मेरा पूरा हक है···· ······कि उससे तीन··········रुबल मागूँ!"

"तीन रूबल" उसने ऐसे चुभते हुए और घृणापूर्ण तथा दुख भरे अंदाज में कहे कि पाल खुद भी तीव्र वेदना व ग्लानि से तिलमिला उठा; उसे उस व्यक्ति पर रोष आया और वह दनदनाता हुआ सीढ़ियाँ उतर गया। जब वह आखिरी सीढ़ी पर था तो चोजों के गिरने और रकाबियों के फूटने की आवाज उसके कानों पर पड़ी।

"ओह यह तो उसने मेज ही गिरा दी········" उसने आँगन में पहुंचकर जोर से कहा। वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो वहीं खड़ा रहा। पर उसे महसूस हुआ कि उसे कुछ करना जरूर चाहिये। वहाँ खड़ा रहकर टोपी हाथ में लिये वह अपने तेजी से धड़कते हुए दिल की धड़कनें सुनने लगा; उसे लग रहा था मानो उसका वक्ष किसी शिकन्जे में दबा दिया

गया है। ·········सब कुछ इस तरह गड़बड़ा गया था कि एक स्पष्ट विचार उसके मस्तिष्क में आता ही न था।

"हरामी कहीं के !" उसकी आवाज मद्धम पड़ गई थी। उसने हर वह गाली याद की जो कभी सुनी थी और वे सब-की-सब उसी क्रोध में कानाफूसी के अंदाज में दोहरा दीं। कुछ देर बाद जब उसका मिजाज दुरुस्त हुआ तो वह फाटक से बाहर आया और दीवार पर पीठ टिका कर एक बेंच पर बैठ गया।

वहाँ जितनी देर वह बठा रहा उसकी आँखों के सामने स्त्रियों की आकृतियों की कतार अंधियारी, निर्जन गलियों में से गुजरती हुई, उपेक्षापूर्ण भाव से बड़बड़ाती हुई दिखाई देती रहीं······ एक तीव्र कसक उसके दिल में उठी और उसके हृदय को पूरे जोर से वेधने लगी। वह वहाँ से उठा और दुकान पर वापस आ गया।

"क्यों भाई पाल, क्या हाल है ?" अगले दिन सुबह मालिक ने पूछा। पाल की ओर देखकर वह धूर्तता से मुस्कराया। "गया था फिर तू वहां ? उसका शुक्रिया अदा किया था या नहीं, ऐं ?"

"वह ······घर·······नहीं थी।" पाल ने मालिक से नजरें बचाते हुए कुछ उदास होकर कहा।

"क्या कहा ? चलो, कोई बात नहीं। हम यही सुनकर तसल्ली कर लेते हैं कि वह क्या कहते हैं, घर पर नहीं थी।" और इतना कह कर वह पाल के रूबरू काम करने बैठ गया।

"छोकरी इधर-उधर तो जरूर जाती है," मालिक ने फिर कहना शुरू किया। "बड़ी बुरी बात है यह। इतने अच्छे दिल वाली लड़की है और यह हरकत करती है, छिः ! पर हम-तुम कर ही क्या सकते हैं सिवाय तरस खाने के ? इन बातों में हमारा कोई बस नहीं।"

पाल मौन बैठा मोम में भीगे हुए धागे से चमड़ा जल्दी-जल्दी सी रहा था। मालिक अनुनासिक स्वर में गाने लगा।

"मिरोन," एक लम्बी खामोशी के बाद पाल ने मालिक की ओर

घूम कर कहा ।

"हाँ, क्या है ?" मालिक ने सिर उठाते हुए पूछा ।

"आपका क्या ख्याल है वह इस नरक-कुण्ड से निकल सकती है ?"

"वह ? हुऽऽम ! शायद । लेकिन ज्यादा संभावना उसके उसीमें फँसे रहने की है । पर हो सकता है वह निकल भी जाय । इस पर कुछ भी कहना मुश्किल है, दोस्त ! हाँ, हाँ, यही बात है ! हाँ एक शर्त है अगर कोई फौलादी इन्सान उसे अपने मजबूत हाथों में जकड़ले तो बात और है........लेकिन इस सबके बावजूद यह बात बहस-तलब है कि कौन किसे जेर कर देगा । फिर बात यह भी है कि आजकल बेवकूफ हैं कम, क्योंकि गर्मी के मौसम में दुलहनें ऐसी निकलती हैं जैसे मक्खियाँ यहाँ तक कि अच्छी लड़कियों को भी मुनासिब दाम नहीं मिल पाते । मिसाल के लिए गूज को ही ले लो । उसने शादी की तो दुलहन आई परी-चेहरा, साथ लाई दो सौ रुबल दहेज में, पढ़ी-लिखी, सुशील । अब बिला शक वह उसे झाँसा देगी, क्योंकि उसमें है ही क्या ? खुद तो होगा पचास से भी ऊपर और वह है बेचारी अभी सत्रह साल की नवेली । लेकिन उस जैसी लड़की ने भी गूज से शादी करली और उसे दो सौ रुबल भी ऊपर से देदिये, महज इसीलिए कि वह उसे ग्रहण करले । आजकल लड़कियों का क्या टोटा । बड़ी सस्ती मिल जाती है । और भला क्यों ? क्योंकि उनकी तादाद इतनी लंबी-चौड़ी है कि उनका वहाँ जीना ही मुहाल है । ढेरों लोग पैदा होते चले जाते हैं । अब अगर वह कानूनन यह शादी-ब्याह बंद करवादे यानी ४-५ साल के लिए—तो वह एक अलग बात है । वह होगी बड़ी जोर-दार चीज । सच कहता हूं, खुदा गवाह है मेरा ! क्यों ?" और अपने इसी विचार में मुग्ध बूढ़े मिरोन ने अपने सिद्धान्त का निरूपण जरा विवरण से करना शुरू कर दिया ।

पाल मौन था, लगता था मानो बड़ी गौर से सुन रहा हो । लेकिन जब मिरोन ने कृत्रिम संतति-निरोध की समस्या का सफलता

पूर्वक हल निकाल लिया तो पाल ने सहसा उसे टोका :

"मिरोन, अगर मै उसे कोई भेंट दूं तो ?

"उसे ? यानी नतालिया को ?" एक लम्बी चुप्पी के बाद मालिक ने पूछा। उसने कुछ दुखित हो छत की ओर नजरें गड़ाईं और उसे इस बात पर रंज हुआ कि पाल ने उसके कल्पना-सागर मे उठते हुए तूफान को रोक दिया। "हाँ, हाँ तुम उसे जरूर कोई भेंट दे सकते हो। क्यों नहीं ? उसने भी तो तुम पर पैसे खर्च किये है, हैं ना !"

और वह फिर चुप हो गया। कुछ क्षण बाद वह गुनगुनाने लगा।

दोपहर को खाने के बाद वे दोनों बड़े जोर-शोर से एक चमड़े पर जुट गये। दिन में गर्मी अधिक थी। दरवाजा व खिड़की खुली होने के बावजूद दुकान मे गमगमाहट थी। मालिक ने अपने माथे का पसीना पोंछा, गर्मी को दो-चार गालियां सुनाईं और उस नरक की कल्पना करने लगा जहां का तापक्रम यहाँ की अपेक्षा दस अंश तो जरूर कम होगा। अगर इन साले बूटों के लिए उसने वादा न कर लिया होता तो वह खुशी-खुशी वहाँ चला जाता।

पाल के माथे पर झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं, होंठ सख्ती से बंद कर दिये गये थे और वह झुका हुआ सिलाई कर रहा था।

"तो आप कहते हैं कि कुछ भी हो वह है अच्छी लड़की ?" उसने अचानक पूछ लिया।

"और शायद यही बात तुम्हारे दिमाग में भी है ! हाँ, अच्छी-खासी है। पर तुम्हे क्या ?" मालिक ने पाल के झुके हुए सिर की ओर निहारा मानो उसकी प्रतिक्रिया देखना चाहता हो।

"कुछ नहीं !" उसने संक्षेप में उत्तर दिया।

"यह तो कुछ भी नहीं हुआ, कोई बात ही नहीं बनी।" मालिक हँस पड़ा।

"मैं कह ही क्या सकता हूँ ?" पाल के स्वर में विषाद भरा था वह उलझन में पड़ा था, थका हुआ था और निढाल हो गया था। फ़िर दोनों मौन रहे।

"तो हां, वह बदल नहीं सकती ? मतलब है कि कुछ करना बेकार है इस सिलसिले में ?" सवाल इतने बोदे थे कि मिरोन ने उनका जवाब नहीं दिया।

पाल कुछ देर और ठहरा रहा और फिर उसने विरोध किया :

"देखिये, यह गलत बात है ! यह कुछ मुनासिब नहीं ! वह बहुत भली है पर फिर भी है अभागी। और यही शर्म की बात है !" उसने मेज पर लात मारी।

"अर र र र !" मालिक ने दाँत भींचकर कहा और फिर व्यंग्य-पूर्ण हँसी हँस पड़ा। "अबे पाल, तू भी यार अभी बच्चा ही है। ऐसा है जैसे बलि का बकरा, हा, हा, हा !"

शाम को काम खतम करके पाल दूकान के हाल में गया। आँगन में खुलने वाले दरवाजे पर खड़े होकर उसने अटारी की खिड़की की ओर नजर डाली। खिड़की में रोशनी तो थी लेकिन कोई हरकत नहीं दीख पड़ी। वह बड़ी देर तक वहा इन्तजार करता रहा कि कब उसकी आकृति दिखाई दे जाय। फिर जब वह अधिक प्रतीक्षा न कर सका तो बाहर गली में निकल गया और फिर उसी बेंच पर जा बैठा जहां पिछली रात बैठा रहा था।

मालिक ने जो कुछ नतालिया के बारे में कहा वह उसके मस्तिष्क पर ऐसा अंकित हुआ कि उसे निकालना कठिन हो गया उसके हृदय में उसके लिए दया भाव उमड़ आया। यदि वह जीवन के बारे में कुछ ज्यादा जानता होता तो नतालिया की मुक्ति के लिए अनेक योजनाएँ तैयार करता। लेकिन उसे तो कुछ आता-जाता ही न था। उसके तमाम विचार नतालिया की विविध प्रतिमाओं पर केन्द्रित थे—तलघर में उसकी सहायक नतालिया, हस्पताल में उसे देखने आई हुई नतालिया,

गंदे, फूहड़ कमरे में शराब में धुत्त नतालिया। वह उसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले गया। उसने अपनी कल्पना में उसे अटारी में शराब पिये हुए उठाया और अस्पताल में अपने पलंग पर ले गया। और तब उसके जहन में कुछ अस्पष्ट-सा चित्र उभर आया जिसने उसे विचलित कर दिया। लेकिन जब उसने उसे अपनी अटारी में पड़े हुए समय की कल्पना की जब वह उसे देखने हस्पताल में गई थी तो उसकी मनःस्थिति कुछ बदली। अब वह अपने इर्द-गिर्द मुस्कराते हुये नजरें दौड़ाने लगा, उस अंधियारी गली की ओर देखकर मुस्कराने लगा और सुबह के सितारों-भरे आकाश को देखकर दिल खुश करता रहा।

उसके हृदयसागर में दो लहरें उठीं; एक ने उसे गर्मा दिया और दूसरी ने जो ठण्डी, उदास व मलिन थी उसे निराशा के जाले में लपेट लिया। अस्पताल में पड़े-पड़े उसने नतालिया के बारे में इतना कुछ सोचा था, इतना याद किया था उसे गोया वह उसकी नातिन हो। वही तो पहली स्त्री थी जिसने उस पर दया की थी, उसकी शुश्रूषा की थी। उसका खाली व एकांकी जीवन जिसमें न कोई उसका सहारा था, न कोई मित्र, पूर्णरूपेण उसकी ओर केन्द्रित हो गया था, उसी लड़की की ओर जिसने उसके साथ भलाई की थी और जो अब धिक्कार के काबिल थी।

उसने वे भाव स्मरण किये जो उस समय उसके दिल में पैदा हुए थे जब वह उसके पलंग के करीब बैठी थी। वह उसी भाव को जो अब धुंधली-सी स्मृति मात्र बन कर रह गया था उसी तीव्रता व वेग के साथ पुनरुत्पन्न करना चाहता था।

इतने में एक जोर का शोर उसे सुनाई दिया। "अरे आप हैं! कब आये अस्पताल से आप ?" उसने फुर्ती से सिर घुमाया और उसे देखा। वह दरवाजे पर खड़ी थी। उसका सिर और चेहरा एक सफेद शाल में लिपटा हुआ था पर उसकी बड़ी-बड़ी नीली चमकदार आँखें अब भी दिखाई दे रही थीं।

"मैं कल ही वहाँ से आया हूँ। कहिये क्या हाल हैं!" उसने उत्तर दिया और आगे कुछ कहने में असमर्थ वह मौन हो उसकी ओर निहारने लगा।

"आप कितने दुबले हो गये हैं! अरे रे रे!" उसने दया-भाव दर्शाते हुए कहा और शाल से अपना चेहरा और भी ढँक लिया।

"मैंने सुना था आप भी बीमार थीं," पाल ने कहा।

"मैं? ना ऽ हीं। हां, हाँ ठीक है वह तो अब भी मेरी तबियत ठीक है। मेरे दाँतों में बुरी तरह दर्द हो गया था…………बहुत दिन से चला आ रहा है।"

पाल को याद आया कि कल रात अटारी में जब वह उसके आगे से गुजरी थी तो उसके गाल इस तरह लिपटे हुए नहीं थे।

"अब तो सब ठीक है ना? आप बिल्कुल अच्छे हैं? क्या काम पर जाना शुरू कर दिया फिर से?" नतालिया ने कुछ देर बाद पूछा।

"जी हां, काम पर जाने लगा हूँ। कल ही से शुरू कर दिया है।"

"अच्छा, फिर मिलेंगे," और उसने पाल की ओर हाथ बढ़ा दिया।

पाल ने उसका हाथ थामा जोर से उसे दबाया और यह इच्छा प्रकट करते हुए कि इतनी जल्दी वह न जाय फुर्ती से कहा:

"जरा ठहरिए! यहाँ बैठ जाइये। मैं आपका शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। आपने जो मेरे बारे में इतनी चिंता की उसके लिए मैं आप का बहुत एहसानमंद हूँ……"

"ओह, क्या कह रहे हैं आप! बकवास है यह सब……क्या ख्याल है दोपहर को किसी वक्त मेरे साथ चाय क्यों न पियें आप? शाम के वक्त तो मैं आम तौर पर घर नहीं मिलती। आयेंगे न आप?"

"मैं आऊँगा, जरूर आऊँगा! खुशी-खुशी आऊँगा! शुक्रिया!"

"अच्छा, मैं जाती हूँ जरा दूकान पर।" और वह गायब हो गई।

पाल इस धुँधली आशा में खड़ा प्रतीक्षा करता रहा कि वह अब

लौटेगी और कहेगी आओ मेरे साथ ऊपर चलो। लेकिन वह उधर से ऐसी फुर्ती से गुजरी कि पाल की ओर मुड़कर भी न देखा। उसे ऐसा लगा कि वह अपनी शाल में दबाये कुछ बोतलें लिये जा रही है।

उसने साँस ली, कुछ देर और वहाँ बैठा रहा और फिर जाकर लेट गया। वह उदास हो उसके बारे में सोचने लगा। बड़ी देर तक उसकी आंख न लगी।

दो दिन बाद वह सीढियां चढ़ता हुआ अटारी की ओर चला, उसके पास कागज में लिपटा हुआ एक रूमाल था। उसने उसे डेढ रुबल में खरीदा था। दरवाजा खुला हुआ था। जब उसने पाल को देखा तो नतालिया झपट कर कमरे के अंदर गई, अपनी शाल खींची और उसने जल्दी से अपना सिर लपेट लिया।

"अरे, आप! बड़ा अच्छा हुआ, आप बरवक्त आ गये। मैं अभी चाय पीने ही वाली थी। आइये, आइये ना!"

खामोशी मे उसने अपना उपहार उसके हाथों में दे दिया और बड़े कोमल स्वर मे भुनभुनाया :

"यह आपके ही लिए लाया हूँ······आपका शुक्रिया।

"क्या है यह ? ओह, रूमाल है! क्या खूब है यह भी! आह आप भी कितने प्यारे हैं! उसने धीरे से कहा और उसकी ओर बढते हुए अपनी बाहें फैलादीं मानो उसका आलिंगन करना चाहती हो। पर वह फिर रुक गई और उस रूमाल की प्रशंसा करने लगी।

पाल ने देखा कि उसके उपहार की प्रशसा व स्तुति हो रही है। उसने देखा कि वह रूमाल को इस तरफ से और उस तरफ से हिला-डुला कर देख रही है। सहसा अपनी विलासी प्रवृत्ति से प्रेरित हो वह दीवार पर टँगे एक छोटे से आईने की ओर मुड़ी, बड़ी कुशलता से उसने अपने हाथ हिलाये, शाल खोली और वह उपहार अपने सिर पर डाल लिया।

"अरे, बाप रे!" पाल ने आश्चर्य प्रकट किया।

उसकी दोनों आँखों के नीचे खून जैसी लाल बड़ी-बड़ी खरा
नजर आईं। उसका निचला होंठ सूजा हुआ था, जाहिर है किसी
भारी आघातों के ही कारण ऐसा हुआ होगा।

पाल के विस्मय को सुनकर उसे वे खराशें याद आईं पर अ
सोचना बेकार था। वह लपक कर कुर्सी पर जा गिरी और अपने मोटे
मोटे गोरे हाथों से उसने अपना चेहरा ढँक लिया।

"बदमाशों ने, सुसरों ने आपको कितनी बेदर्दी से पीटा!" पाल
मुँह से ये शब्द यों निकल पड़े मानो उसने एक गहरी सांस ली हो।

एक लम्बी निस्तब्धता कमरे पर छा गई। पाल घबरा गया
उसने कमरे में चारों ओर दृष्टि दौड़ाई पर न वह कुछ कह सक
और न ही कुछ सोच सका। उसके मस्तिष्क में जो उलझन औ
वेदना घर कर गई थी उसने उसके चेचकदार, चिंतनशील चेहरे क
और भी विकृत कर दिया और अब वह एक भयंकर, रोगियों का-स
पीला खोल बन गया।

मेज पर रखे समावार का पानी खौल रहा था। भाप के मही
छल्ले उसमें से निकलते और हवा में ऐसे विलीन हो जाते कि उनक
पता ही न चलता। उसमें से सी-सी की ऐसी अजीब आवाज निकर
रही थी मानो कोई छोटा, हीन पशु अपनी रूखी विजय पर सीट
बजा रहा हो और उपहास कर रहा हो।

कमरा साफ कर दिया गया था। अब अस्त-व्यस्त नहीं लग रह
था। कमरा बिल्कुल साधारण और भद्दा; इतना भद्दा कि उसे सुंद
कहा ही नहीं जा सकता था; हालांकि उसमें रहने वाली ने उसकी दीवा
पर लगे फटे हुए कागज को सस्ते और भड़कीले चित्रों से ढँक क
सड़ी खिड़की की चौखट पर तीन गुलदस्ते रखकर सजानेकी कोशिश क
थी। छत का ताबूत-नुमा आकार असह्य था। उसे देख-देख कर मतल
आती थी; ऐसा लगता था कि अब गिरी, अब ढही। और यदि छ
गिरी तो कमरा बिल्कुल अँधियारा हो जायगा ऐसा अंधियारा जैसे कि

कब्र ।

पाल ने नतालिया की ओर देखा। उसका वक्ष धड़क रहा था, कंधे जोर-जोर से हिल रहे थे। वह यह समझ ही न पाया कि ऐसा क्यों हो रहा है।

"अच्छा तो मै चलता हूँ……फिर कभी आऊँगा !" उसने आह भरी लेकिन वहां से उठा नहीं क्योंकि वह वास्तव मे उसके जज्बात को समझता था।

यकायक नतालिया ने अपने हाथ मुँह पर से हठाये, कुर्सी पर से कूदी और दौड़कर उसके गले में बांहें डाल दी।

"नहीं, नहीं, खुदा के लिये न जाओ। अब क्या हो सकता है। तुमने तो देख ही लिया है अब," उसने अपना हाथ चेहरे की ओर ले जाते हुए कहा "ओह, मै कितना चाहती थी कि तुम इसे न देख लो! कितने अच्छे हो, कितने दयालु, कितने नाजुक……तुम……तुम कभी……मुझसे कुछ माँगते भी नहीं हो। उन दूसरों की तरह तुम गलियर नहीं हो। कल जब मैंने तुम्हें देखा तो मुझे अपार खुशी हुई। आह! मैने सोचा तुम मुझसे मिलने आओ। लेकिन फिर मैने सोचा मै अपना यह भयंकर चेहरा तुमको क्योंकर दिखाऊँगी! मै समझती थी तुम मुझे देखकर मुझ पर थूकोगे और चले। जाओगे, बस यही हमारा तुम्हारा रिश्ता खतम हो जायगा। इसीलिये मैने तुमसे कहा नहीं। कोई और होता तो मुझ पर हँस देता। लेकिन तुम ऐसा नहीं कर सकते……प्यारे! तुम इतने अच्छे कैसे लगते हो!"

शर्म, दुख और सुख के इस विस्फोट से पाल का सिर भन्नाने लगा और वह फर्श की ओर देख कर बुदबुदाया :

"नहीं, नहीं तुम तो जानती हो मैं बहुत……यानी बहुत अच्छा आदमी नहीं हूँ। मैं गूँगा हूँ। मुझे तो भले-बुरे की भी पहचान नहीं। मसलन यही बात ले लो मुझे तुमसे बहुत हमदर्दी है, मुझे रंज है तुम्हारी इस तकलीफ का। लेकिन इसे अदा क्योंकर करूँ? मैं जानता हीं नहीं

कैसे कहूँ। मेरे पास शब्द भी नहीं हैं। कभी जिन्दगी भर मैंने उन्हें नहीं सुना। कभी किसी ने......कभी भी......जो शब्द मुझे चाहिये ....वे मैने कभी......सुने ही नहीं......"

"अरे, मेरे कलेजे के टुकड़े! इतनी प्यारी-प्यारी बातें तो कर रहे हो और सोचते हो बात भी नहीं कर सकते! तो आओ, लो बैठ जाओ आओ यहां मेरे पास आकर बैठ जाओ। हम चाय पीलें। ठहरो, जरा मैं किवाड़ बन्द कर दूं वरना कोई मूर्ख आन धमकेगा। खुदा इनका बेड़ा गर्क करे कमबख्तों का! इन्हें दोजख का वास्ता सबों को! काश तुम्हें खबर होती कि तुम्हारे भाइयों में कितने नीच पुरुष मिले हुए हैं! अरे, मेऽरे खुदा! तुम उनसे मिलो तो जी मचलने लगे......ऐसे नेस्ती है वे बदमाश कि बस!"

वह उत्तेजित हो गई थी। अब जो उन्हें कोसने पर आई तो न तो "तुम्हारे भाई" उसने छोड़े न "मेरी बहनों" को बख्शा। ऐसा लगा कि उसमें नुक्ताचीनी करने की बहुत शक्ति है, उसकी शैली बड़ी जोशीली बड़ी अपूर्व, बडी पैनी थी। लेकिन इससे तो सिर्फ उसकी बातों की प्रभावोत्पादकता ही बढ़ी। अपने परीक्षणों और अनुभव से प्राप्त की हुई बातों को उसने ऐसे फेंका जैसे पत्थर फेंक रही हो और उन्हें एकत्र करके ऐसे अजीबो-गरीब अंदाज में निष्कर्ष निकाल रही थी जो बड़े वजनी और सशक्त थे।

एक ऐसी जिन्दगी जिसका उसे पहले कभी संकेत भी न मिला था आज उसका बड़ा निर्मल, स्पष्ट चित्र पाल के सामने आ गया था। यह एक ऐसी अभिशप्त, घोर मूर्खतापूर्ण और गंदी जिन्दगी थी कि उसका ध्यान आते ही उसकी भवों पर एक रूखे पसीने की बूँदें उभर आईं। वह उस जिन्दगी और उसका वर्णन करने वाली दोनों से आतंकित हो गया था।

और सच पूछो तो वर्णन करने वाली भी बेतहाशा भड़क उठी थी। उसकी आँखें उनके नीचे की खराशों के कारण असाधारण रूप

से गहरी लग रही थीं और क्रोध व आनन्द से बहुत चमक रही थी। लगता था उसका सारा चेहरा आँखों ने ढंक लिया है। हाँ, सिर्फ उसका निचला होंठ, जो सूजा हुआ था और उसके छोटे-छोटे तीखे दाँत दिखा रहा था ऐसा था जो इस भ्रम को दूर कर सकता था। वह बड़े उदास स्वर में बातें कर रही थी और अपना उपहास कर रही थी। साथ ही "तुम्हारे भाई" पर तो वह प्रतीकारपूर्ण उपालंभ बरसा रही थी और उनकी सफलताओं पर भयंकर खेद प्रकट कर रही थी। कभी वह हँसती, कभी रो पड़ती और हँसी व रोना दोनों को एक ही में मिला देती। अन्त में जब वह थक गई और उसकी आवाज भी कर्कश हो गई तो वह रुक गई और अपने भाषण के प्रभाव से वह स्वयं चकित रह गई।

पाल की मानवीय आकृति अदृश्य हो चुकी थी। उसकी आँखें चौंधिया गई थीं। उसके दाँत बड़े भीषण रूप से कड़कड़ाने लगे; वे इतने जोर से कसे हुए थे कि उसकी कपोल-पलकें उभड़ आई थीं। उसका सारा चेहरा भूखे भेड़िये की नाक की नाईं दिखाई दे रहा था। वह नतालिया की ओर झुका पर रहा मौन। जब वह अपने शिकवे-शिकायतें और रहस्योद्घाटन पूरे कर चुकी और यह सोचने लगी कि पाल को उसकी मूर्छा से किस तरह दूर करे पर तब तक वह खुद उस मूर्छा से बाहर आ चुका था।

"अच्छा !" वह चिल्लाया। "तो यानी कि मै इन बातों के बारे में कुछ जान भी न सका !" यह सब उसने इस प्रकार कहा मानो अब जो स्थिति थी उससे वह भली भाँति परिचित हो चुका हो; और उसका हल उसके पास हो। "क्या इसी किस्म की जिन्दगी बसर कर रही हो तुम ! बाप रे बाप ! क्या ऐसा हो भी सकता है !" उसने अपना सिर हाथों पर रख लिया। अपनी कुहनियाँ मेज पर रखे वह फिर विचारों मे खो गया।

अब नतालिया और भी नरम और दिलजोई के अन्दाज में बोलने

लगी। अब उसे अपने आपको और गैरों को क्षमा करने और न्यायोचित ठहराने का कारण मिल गया था। सारा-का-सारा दोष उसने शराव के सिर मढने का प्रयत्न किया क्योंकि वही एक ऐसी शक्ति थी जिसने सब कुछ नष्ट किया था। पर शीघ्र ही उसे खयाल हुआ कि वोडका तो बहुत ही तरल-सी चीज है भला यही जिन्दगी की सारी कुरीतियों और बुराइयों की बुनियाद कैसे हो सकती है, तो उसने फिर लोगों पर तोहमतें लगानी शुरू करदीं। जब उन्हें खूब बुरा-भला कह चुकी तो फिर जिन्दगी की बातों पर आ गई।

"तुम तो जानते हो, जिन्दा रहना बड़ा दुश्वारी का काम है। हर जगह रास्ते में गढ़े ही गड़े हैं। एक से बचे तो दूसरे में गिर पड़े, और बस वहीं गये। इसलिए अच्छा यह है कि आँखें बन्द करलो और जहा भी वह टेढ़ा-मेढा रास्ता ले जाय चलते जाओ। भला जिन्दगी का रास्ता कहीं समतल और सीधा है भी? कौन पा सकता है उसे? हमारी जिन्दगी गन्दी और मुसीबतों से भरी हुई है। लेकिन शादीशुदा लोगों के लिए भी यह कोई ज्यादा सुविधाजनक नही है। बच्चों का होना ही, पहले तो बुरा है लेकिन उसके साथ पति, बर्तन-भाँड़े और न जाने क्या-क्या और भी है। जिन्दगी तो ऐसी गन्दी है कि क्या कहा जाय!"

पाल ने उसे गौर से सुना और उस जिन्दगी की कल्पना की जिसमें चप्पे-चप्पे पर गढ़े हैं और उन्ही के बीच से एक सकरा रास्ता गुजरता है जिस पर इन्सान आँखों पर पट्टियाँ बाँधे चला जा रहा है और वे अँधियारे, घूरने वाले गढहे उसकी मखौल उड़ा रहे हैं, तथा अपनी अपवित्र और जी मचला देने वाली दुर्गन्ध से वायु को दूषित कर रहे हैं। अकेला, निर्बल इन्सान लड़खड़ाता हुआ, चक्कर खाता है और गिर पडता है·····

अब उसके वक्ता ने कुछ छोटी-सी दार्शनिक विषय पर बहस छेड़ दी थी। अब वह कुछ अनोखी बातों के बारे में बातें कर रही थी—

कब्रों की, उन पर उगे हुए चिरायते, जमीन की नमी और उमस की........

पाल को लगा कि वह अभी रो पड़ेगा। अब उसके जाने का वक्त हो गया था।

"मैं जा रहा हूं। फिर आऊँगा," उसने आहिस्ता से कहा। नतालिया ने उसे रोकने की कोशिश न की। विदा होते समय उसने सिर्फ अपने वे दो कोमल शब्द कहे, "जल्दी आना" और पाल ने उस पर सिर हिला दिया।

वह बाहर गली में निकल गया। घण्टों वह शहर में भटकता रहा और यह महसूस करता रहा कि आज शाम को मैं बालिग हो गया हूं। उसे महसूस हुआ अब वह बड़ा हो गया है और वजन में भारी हो गया है क्योंकि वह अपने साथ अनेक नये विचार, नई कल्पनाएँ और नये जज्बे लिये हुए था। उसके आस-पास की हर चीज में, सारे शहर में कुछ नयापन दिखाई दिया, उसे सन्देह होने लगा, उसका विश्वास डिग गया और दिल में एक ग्लानिपूर्ण दया का भाव उमड़ आया। यह शायद इसलिए हुआ हो क्योंकि उस दिन पाल को शहर के बहुत से हिस्सों के रहस्य मालूम हो गये थे।

वह रात भर घूमता रहा और जब सूर्य की किरणों ने अपना प्रकाश धरती पर फैलाया तो वह घर लौट आया।

एक सप्ताह बीत गया। पाल लगातार सात दिन तक नतालिया से मिलने जाता रहा।

जीवन के सम्बन्ध में साधारणतया और अपने दोनों के जीवन के बारे में विशेषतया जो उन्होंने बातें कीं उनसे दोनों को असीम आनन्द प्राप्त हुआ। पाल ने जो ख्वाब अस्पताल में देखे थे अब वह उनकी ताबीर देख रहा था। उसने नतालिया को शांतस्वभावी एरिफी के बारे में बताया, अपनी उस जिंदगी के बारे में बताया जब वह छोटा लड़का था और स्नानगृह के समीप गढ़े में पड़ा रहता था और बाद में किस तरह कब्रिस्तान के आस-पास, शहर और गांवों में घूमा-फिरा करता था। इन तमाम विचारों में कुछ उलझन और आत्म-विश्वास की कमी की छाप लग गई थी। लेकिन इसमें भी जो खास अभिप्राय निहित था वह यह कि उसकी जिंदगी में कहीं कुछ-न-कुछ अभाव है, कहीं कुछ ऐसा अंग टूट गया है जिसकी मरम्मत बहुत जरूरी है।

नतालिया ने भी उसे अपनी रामकहानी सुनाई जो बड़ी साधारण थी। जब सोलह वर्ष की थी और एक व्यापारी के घर पर नौकरानी का काम करती थी तो किसी ने अचानक मेरे साथ पाप किया था। मेरे मा बाप ने मुझे घर से निकाल दिया। वे निम्न मध्य वर्ग के लोग थे और उनका नाम क्रिब्त्सोव था। तमाम लोगों की भाँति जिनका ऐसे अवसर पर कोई पुरसाने हाल नही होता मैं भी बाहर सड़क पर आन पड़ी। सहसा एक परोपकारिणी मुझे मिली और उसके बाद एक परोपकारी पुरुष भी। एक और परमार्थी मिला—फिर एक और और उसके बाद तो भलेमानुसों का खुदा जाने कहाँ से, रेला आगया।

और तब से लेकर आज आठ वर्ष तक उनकी संख्या बढ़ती ही गई। आह भरते हुए उसने अपने तमाम गुनाहों को स्वीकार किया। लेकिन पाल इन तमाम परोपकारियों को पहले ही जान चुका था। उस कहानी को सुनकर तो वह सिर्फ उदास हो गया, उसके प्रति कोई विशेष प्रतिक्रिया उसमें न पैदा हुई।

अब उन दोनों मे एक साधारण मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध कायम होगया था। वह उससे उसी लहजे में और उसी अपनत्व के साथ बातें करती थी जैसे किसी स्त्री से करती। और वह भी उससे इस तरह गुफ्तगू करता जैसे किसी मर्द से बातें कर रहा हो। नतालिया के चेहरे की खराशें अब धीरे-धीरे मिटती जा रही थी। उसके चेहरे का प्राकृतिक, स्वस्थ गुलाबी रंग फिर बहाल होने लगा था। वह बड़ी हृष्ट-पुष्ट थी। देवदासियों का पेशा करने वाली स्त्रियों के गालों पर जो हल्का पीलापन आजाता है वह उसके चेहरे पर अभी बहुत नुमायाँ नहीं हो पाया था। गाने से उसे प्रेम था और वह प्रायः बड़े मूर्खतापूर्ण दुखप्रद गाने गाया करती थी जो सदैव उसके असफल प्रेम की अभिव्यंजना ही करते रहते थे। लेकिन न जाने क्यों बजाहिर 'प्रेम' शब्द से उसके हृदय में कोई खास आनन्दप्रद भाव नही पैदा होते थे। प्रेम शब्द का जिस उदासीनता और रुखाई से वह उच्चारण करती थी शायद कोई ६० बर्षीया वृद्धा भी न करती। क्योंकि वृद्धा कम-से-कम इस शब्द द्वारा अपने अतीत की उन मधुर और सुखद स्मृतियों को तो याद कर लेती है।

वह पाल से बहुत मुहब्बत करती थी और यह था भी बहुत स्वाभाविक ही। वही तो पहला व्यक्ति था जो उसके पास न गया था, जा ही नही सकता था जैसा कि उससे पहले सभी लोग किया करते थे। वह समझ गई थी कि उसका व्यवहार उसके साथ बहुत ही विनम्रता का था—ऐसा जैसा कि स्त्रियों के प्रति होना चाहिये था—और उससे उसका दिल खुश होता था, वह कुछ अच्छा महसूस करती थी। उसके इस रवैये से यह जरूरी न रहा कि नतालिया उसके साथ अशिष्टता

का व्यवहार करे—या निर्लज्जता बरते। और न ही अब यह आवश्य-कता शेष रही थी कि वह अपने आप में वह नकचढ़ापन इख्तियार कर ले जो अभी तक उसकी जिंदगी में घर न पाया था। साथ ही वह उससे हरेक बात बडी सादगी और सीधेपन के साथ कह देती थी, और वह भी हालाँकि खुद बहुत कम बोलता था लेकिन नतालिया की बातें बड़े ध्यान से सुना करता था।

अब पाल की जबान भी खुल गई थी और वह पहले की अपेक्षा कहीं अधिक बोलने लगा था। यह भी बड़ा स्वाभाविक था क्योंकि वह उसे भली प्रकार समझने लगी थी—उसकी आत्मा और उसके विचारों की कद्र करती थी। वह उसके लिये प्रिय और अभिन्नहृदय बनता जा रहा था। पर इस सबसे पाल को अचरज ही होता था। वह उससे असाधारणतया भलाई, दयालुता और नम्रता का बर्ताव करती थी और फिर मजे की बात तो यह थी कि वह उन्हीं औरतों में से एक थी जिनके बारे में उसने अब तक कभी कोई अच्छी बात सुनी ही न थी।

प्राय: वह एरिफी की बातें याद किया करता था कि एरिफी और नतालिया में कौन बेहतर व्यक्ति है है। पर उसने इस प्रश्न का उत्तर स्वयं कभी न दिया, उसे अंदेशा था कि कहीं वह उत्तर स्वर्गीय की स्मृति का अपमान न करदे कहीं उसके लिये हानिकारक सिद्ध न हो जाय। शामें पाल के लिये असीम आनन्द की वस्तु थीं। क्योंकि उस समय वह अपना काम समाप्त करके आजादी के साथ और बआसानी नतालिया के घर आ सकता था। वे साथ बैठते, चाय पीते और घण्टों बेफिक्री के साथ बातें करते थे।

वह मार्मिक छोटी-छोटी कहानियाँ जो सस्ते कागज पर छपी होती थीं, और दो या पांच कोपेक की होती थी बड़े चाव से पढ़ती थी। उसका सारा ढेर उसके पलंग के नीचे रक्खे बक्स में भरा हुआ था। कभी-कभी वह कोई कहानी पाल को भी बड़े उत्साह से पढ़कर

सुनाती और उसे पढ़ने के लिये प्रेरित करती जिसके लिए वह हमेशा वायदा कर लेता था।

पाल के दिल का बोझ हल्का हो गया था, वह अब निश्चित हो गया था। अब उसने हँसना भी सीख लिया था जो इत्तेफाक से उसे शोभा नहीं देता था। मिरोन बड़ी प्यारभरी नजरों से उसकी ओर देखता और मन-ही-मन हँसता, कभी-कभी तो वह बड़ी धूर्तता से हँस पड़ता लेकिन पाल पर इसका कोई विशेष प्रभाव न पड़ता वह तो अपने मालिक को अब पहले से भी अधिक चाहने लगा था। मिरोन भी पाल की बातों में खूब दिलचस्पी लेने लगा। और पाल उसके इस उपकार का बदला गधे की तरह काम करके देता था।

एक दिन मालिक ने पूछा :

"अरे पाल, अगर तू मुझे भी किसी दिन अपने साथ वहाँ ले चले तो कैसा रहे ?"

पाल की जिज्ञासा बढ़ी और उसने मिरोन का यह सुझाव स्वीकार कर लिया और एक दिन शाम को वे दोनों नतालिया की अटारी में बैठे चाय पी रहे थे। वृद्ध बैठा, बड़ा चौकन्ना हो उन दोनों को देखता रहा और बातें सुनता रहा और बीच-बीच में कहीं दो या तीन बार चुकटियाँ लेता रहा।

उस दिन शाम उन तीनों ने बड़े हर्ष व उल्लास में बिताई। पाल के साथ घर वापस आते हुए पहले तो मिरोन कुछ मन-ही-मन बुदबुदाया। फिर पाल के कंधों पर हाथ रखते हुए उसने कहा :

"तू भी बड़ा मजेदार लड़का है, भैया! और वह भी—वह भी खूब लोंडिया है। अगर तुम दोनों की कभी खींचा-तानी न हुई तो बड़े मजे से रहोगे दोनों।"

पाल के पल्ले खाक न पड़ा लेकिन यह अनुमान लगाते हुए कि मालिक ने वह अच्छे ही मन से कहा होगा उसने उसे धन्यवाद दिया ऐसे वक्तों पर जब वह गड़बड़ा जाता था धन्यवादों का ही सहारा

ढूँढा करता था।

एक बार जब पाल और नतालिया हमेशा की भाँति बैठे हुए चाय पी रहे थे—और वे दोनों थे बड़े जबरदस्त पियक्कड़—तो उन्होंने यही बात छेड़ दी कि कौन क्या पसंद करता है। पाल ने अपनी पसंद की चीजें गिनाईं और फिर वह नतालिया की फेहरिस्त सुनने लगा।

नतालिया ने कई चीजों के नाम लिये। झूले, कागनेक शराब जिस में लेमनेड मिली हुई हो, (बल्कि सल्सर के साथ तो कागनेक उसे और भी अधिक पसंद थी) सर्कस, संगीत, गाने, किताबें हेमन्त (क्योंकि यह ऋतु बड़ी उदास होती है) छोटे-छोटे बच्चे (उनके शरारती बनने के पहले) गोश्त, पकौड़ियां आदि, आदि और अंत में सूची खतम करते हुए उसने कहा कश्तियां।

"यह तो मुझे बहुत ही पसन्द है," उसने अपने दिल की बात कह दी, उसकी आँखें चमक रही थीं। "एक में सवार होओ तो वह ऐसी भुलाती है मानो बच्चे को पालने में झुला रही हो। और इस तरह तुम बच्चे बन जाओगे, कोई बात तुम्हारी समझ में नहीं आयगी, न ही तुम कुछ सोचोगे बस घूमते रहोगे, सैर करते रहोगे।........मुझे मौका मिले तो मैं तो बस सैर ही करती रहूँ, सारा समुद्र देखलूँ और जिंदगी भर नाव में बैठी रहूं। मजा आजाय बस! आह, क्या आनन्द आया नाव की सैर में!"

और इसके फलस्वरूप उन्होंने इतवार को नाव में सैर करने की ठानी। जुलाई का महीना था, मौसम अच्छा था—साफ और गर्म। उन्होंने एक हल्की, ठोस नाव चुनी। पाल ने पतवार थामी और प्रवाह के विरुद्ध उन्हें खेते हुए चले। किनारा एक ओर से तो कत्थई रंग की चट्टान से घिरा हुआ था और दूसरी ओर हरी झाड़ियों की लम्बी कतार थी जिनमें से यत्र-तत्र ऊँचे, सफेद, भरे वृक्ष खड़े आसमान को छूते थे; रुपहले रंग के पापलर वृक्ष, और हवा में जोर से हिलाते हुए ओक के दरख्तों की शाखाएँ नीचे की ओर झुकी थीं। नाव आगे बढ़ती गई

और अपने पीछे कल-कल करते हुए पानी के लहराते हुए झाग छोड़ती गई जो निराशा और असंतोष की आवाजें निकालते रहे क्योंकि नाव से आगे न बढ़ सकने का उन्हें काफी मलाल रहा। निर्मल और गहरे आकाश का प्रतिबिंब उसी प्रकार पानी मे दिखाई दे रहा था जैसे कि उन झाड़ियों और वृक्षों की परछाईं उसमें पड़ रही थी। वृक्षों की छाया पानी की सतह के बिल्कुल नीचे पड़ रही थी। झाड़ियां इस अदा व नाज के साथ आगे-पीछे हिल रही थीं मानो मन-ही-मन अपने आप पर प्रसन्न हो रही हों।

साहसिक और चपल समुद्री पक्षी बड़ी फुर्ती से पानी में तैर रहे थे। लम्बी दुम वाले पक्षी अपनी काली दुमें बेहूदगी से हिलाते हुए तट पर ऐसे दौड़ रहे थे। जैसे वे छोटे कौवे हों। जब नदी की लहर तट से टकराती तो किनारे पर पड़े पत्ते काँपने लगते थे। हर कही कोई गीत गा रहा था जो बड़ा सबल, मधुर और सुरीला था जिसकी आवाज नदी के बहाव के साथ चली आती थी।

लाल कमीज पहने हुए, सिर खोले पाल बड़ी समाना से और जोर शोर से कश्ती खे रहा था मानो कोई अनुभवी नाविक अपनी पेशियों पर जोर देकर नाव खींच रहा हो। कभी उसके बालों का गुच्छा उसके माथे पर आ गिरता था जिसे वह सिर का एक झटका देकर पीछे को कर लेता था। उसकी आंखें हर्ष से चमक रही थीं और वह उस सूखी, सुगंधित वायु में गहरी-गहरी साँसें ले रहा था। कभी-कभी वह कह उठता : "वाह, वाह कैसा खूबसूरत समाँ है !"

नतालिया घुटनों पर हाथ रखे उसके रूँबरू बैठी हुई थी और उसके होठों पर एक अलौकिक मुस्कान नृत्य कर रही थी। जैसे ही पतवार पानी में डुबकी लगाती वह भी उसके साथ हिचकोले खाती जाती। पतवार के पानी मे डूबने से सुन्दर, चमकीली बूँदे नदी के धरातल को चूमती हुई धीरे-धीरे टपकती थीं। नतालिया ने नाव के खिवैया की ओर देखा जो विशालकाय और हृष्ट-पुष्ट था और उसकी

नर्म व नाजुक झुकी हुई आँखों से निकल कर मुस्कान उसके होंठो तक फैल गई जो भरी-पूरी और सुगंधित मुस्कान थी।

उन दोनों में से कोई भी कुछ न बोलना चाहता था। दोनों ने महसूस किया कि सब कुछ खामोशी में ही अच्छा लग रहा है। वे दोनों किसी लोकप्रिय रोमांस के नायक व नायिका प्रतीत हो रहे थे—अभी तक तो उनमें प्रेम आरंभ ही हुआ था लेकिन वे पहले से ही एक दूसरे को निकट से देखने और समझने की कोशिश में थे। और यही कोशिश थी कि हालात बेहतर बनने और उनके एक दूसरे के निकट आने में उन्हें काफी मदद मिली थी लेकिन पाल और नतालिया अभी तक नायक-नायिका जैसे लग ही रहे थे, हुए नहीं थे क्योंकि कुछ कारण ऐसे थे जो उन्हें ऐसी स्थिति में रखे हुए थे और जिनका ज्ञान केवल भाग्य ही को था।

जब नैया खेते-खेते वे दूर, किनारे के करीब एक घास के प्लाट पर पहुँचे तो पाल ने पूछा, "क्या किनारे की ओर चलें?" यह घास का प्लाट प्रकृति ने खास तौर पर छोटे-मोटे पिकनिक के लिए बना दिया था। वह सारा-का-सारा भोज वृक्षों से घिरा हुआ था। छोटी-छोटी नर्म घास जिसमें ढेरों साधारण से फूल लगे थे वहाँ उगी हुई थी।

वे नाव से निकल कर वहाँ पहुँचे; उनके पास खाने का डिब्बा, पीतल की केतली और एक बोतल थी जिसमें कुछ पीने के लिए था। आधे ही घण्टे में घास-प्लाट पर आग सुलग गई थी जिस पर चाय की केतली रखी हुई थी। थोड़ी-थोड़ी देर मे केतली के ढक्कन में से पानी की बूंदें निकलतीं और आग पर गिरती. और छन-छन की आवाज निकालते हुए भाप बन कर उड़ जाती थी। धुआँ भी सफेद फाख्ता की भाँति घूमता-इठलाता हुआ गोल-गोल मालाएँ गूँथता हुआ हवा में विलीन हो जाता था और छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े उसकी गंध और गर्मी से मदमस्त भिनभिनाते हुए बड़ी आलस के साथ जमीन पर गिरते जाते थे।

वहाँ की हर चीज शांत व स्थिर थी मानो उनकी बातें सुनने के लिए वे खामोश हो गई हों। पाल ने खड़-खड़ करते हुए पुड़िया खोली। नतालिया स्वप्नद्रष्टा का-सा मुख लिए फूल और घास के तिनके तोड़ रही थी और आहिस्ता-आहिस्ता गुनगुनाते हुए उसने उन फूलों के गुल-दस्ते बना लिये थे। वैसे यह लगता बड़ा भावुकतापूर्ण था पर था कुछ ऐसा ही। नतालिया ने फूल एकत्र करके छोटी बच्ची की नाई उनकी सुगंध सूँघी। मै उन अन्य नवयुवतियों से क्षमा याचना करता हूँ क्योंकि मैंने अपनी नायिका को उसी कोटि में रख दिया है जिसमें वे सब हैं। मुझ पर विश्वास कीजिए मेरा यह उद्देश्य नही है। यदि आप सब चुप हो जायें मैं उनकी तुलना अपनी नायिका से करने का दुस्साहस हर-गिज न करूँगा। मै कोई आदर्शवादी नहीं हूं। मैं तो इस बात का कायल हूं कि यदि सभी लोग अच्छे बनना चाहें और उस दिशा में प्रयत्न करें तो अवश्य अच्छे बन सकते है।

अब केतली में चाय का पानी उबलने लगा; उन्होंने चाय तैयार की और चाय व नाश्ता किया। वे दोनों बड़ी एहतियात के साथ जरा-जरा से टुकड़े एक-दूसरे के मुँह में दे रहे थे और कुछ-कुछ देर में हर चीज की तारीफ में एक दो वाक्य कहना न भूलते थे। जब "कुछ पीने क लिए" वाली बोतल में से निकाल कर पाल ने तीन गिलास पी डाले तो उसका सिर चकराने लगा और उसने बात-चीत करने की जरूरत महसूस की।

"जिंदगी उन्हीं के लिए अच्छी और सुखी व समृद्ध होगी जो उसकी पेचीदगियों से वाकिफ है," पाल ने सोच-समझ कर कहा।

नतालिया ने उसकी ओर देखा और कुछ क्षण बाद कहा :

"तो इसमें अच्छाई क्या है ?"

प्रश्न का उत्तर देने के पहले पाल को कुछ सोचना पड़ा। जब नतालिया ने देखा कि वह उत्तर देने में संकोच कर रहा है तो उसने उसके उत्तर की प्रतीक्षा किये बगैर ही कहा :

"मैं खुद भी नहीं जानती। लेकिन मेरे लिए तो ठीक भी यही है कि मैं इसे न समझ पाऊँ। कम-से-कम बोलने में बड़ी आसानी होती है। जिंदगी जैसी कुछ भी है उसे वैसे ही गुजार दी जानी चाहिये और दूसरे लोगों पर कतई ध्यान नही देना चाहिये।"

अब वे दोनों फलसफा बघारने लगे लेकिन शीघ्र ही उससे उक्ता गये। उन्होंने गप्पें मारना शुरू कर दी। पाल का खुमार बढ़ता गया। शाँत व गरम संध्या का आगमन हुआ। नतालिया ने देखा कि अंधेरा हो रहा है; वह उदास हो गई और घर जाने की उसने इच्छा प्रकट की। उसे पाल को यह समझाने और विश्वास दिलाने में बड़ी देर लगी कि अब घर लौटने का वक्त हो गया। हालाँकि वह उसकी बात मान भी गया लेकिन उसका शरीर टूट रहा था इसलिये वहाँ से हिला तक नही। वह एक बेहूदा हँसी हँसा जिससे जाहिर हुआ कि वह अपने शक्ति-शाली नशे और उसके काफिर असर से बड़ी मुश्किल से लड़ रहा है।

आखिरकार वह उसे नाव की तरफ खींच ले गई जहाँ पहुँच कर वह फौरन लम्बा हो गया और उसे नींद आ गई। नतालिया ने डाँड सम्हाल लिए। नाव नदी के प्रवाह के साथ धीरे-धीरे तैरती हुई किनारे की ओर चली। हवा का एक तेज झोंका आया और उनकी सुलगाई हुई आग बिखर गई। चिनगारियाँ पानी पर और किनारे पर झाड़ियों की पड़ी हुई परछाई पर जाकर गिरीं।

नतालिया नाव को नदी के बीच की ओर को ले चली। धुँधले चन्द्रमा की मृदुल चाँदनी में उसने खामोश हो पाल को निहारा लेकिन वह जरूर किसी गमगीन खयाल में घिरी हुई होगी क्योंकि उसके कपोलों पर आँसू ढुलक आये थे। किनारे के एक ओर झाड़ियों की पंक्तियाँ थीं और दूसरी ओर पैनी चट्टाने थीं। आकाश में उज्ज्वल तारागण चमक रहे थे। चारों ओर निस्तब्धता छाई हुई थी। ऐसा महसूस होता था मानो हरेक चीज तंद्रा-मग्न हो गई हो। यहां तक कि नाव के नीचे का पानी भी बिल्कुल गतिहीन और मौन था। ऐसा घना अंधकार

श्रौर नीरवता उस पर आच्छादित थी कि लगता था कि वह मक्खन की नाईं चिकना श्रौर मोटा है। शहर की रोशनियां दूर कहीं फासले पर टिमटिमा रही थीं श्रौर वहां से एक पोली-सी आवाज सुनाई दे रही थी जो पारी-पारी से पहले तो ऐसी लगी जैसे किसी सोये हुए पशु की कराह लेकिन बाद में लहर की भांति लगातार जारी रही।

जब वे तट के समीप पहुँचे तो कश्ती जोर से किनारे से टकराई श्रौर पाल जाग पड़ा। उसे शर्म आई कि वह अब तक सोता ही रहा।

जब वे तट से दूर उस निर्जन श्रौर सुनसान गली तक आ पहुँचे तब पाल ने कहा, "मुझे माफ करना नतालिया, कि मैंने इस प्रकार की हरकत......"

वह अचम्भित हो गई :

"किस लिए ?"

तब बड़ी दृढ़ता के साथ उसने नतालिया को समझाया कि इस प्रकार नाव में ही सो जाना उसके लिए मुनासिब न था।

"अरे वाह !" उसने आश्चर्य से कहा। "यह तुम्हें कहां से सूझी ? इस किस्म की बकवास—कहां सीख गये तुम ?"

"यह बकवास नही है," उसने जिद्द के साथ कहा, "यह तो तुमने खुद ही उस किताब में से पढ़ कर मुझे सुनाया था। याद नही तुम्हे ?" श्रौर उसने उसे वह वाक्य स्मरण कराया। "यही बात है ना ?" उसे अपनी बात के सही होने पर गर्व हुआ श्रौर फिर उसने कहा : "क्या किताबों में बेवकूफी की बातें हो ही नहीं सकती ?"—श्रौर इसी बात से हम अनुमान लगा सकते है कि साहित्य के बारे में उसका ज्ञान कितना सीमित था।

जब वे घर पहुँचे तो वह जीना चढ़ा पर आखिरी सीढ़ी पर जाकर रुक गया। अपना हाथ आगे बढाते हुए वह बोला, "अच्छा, विदा।" नतालिया हिचकिचाई, पर अचानक उसने उसका हाथ अपने दोनों हाथों में ले लिया श्रौर उसे जोर से दबा कर कुछ विचित्र स्वर में वह

भुनभुनाई :

"मेरे प्यारे ! तुम कितने सुन्दर हो ! कितने सुन्दर !"

और उसे यों ही अपनी प्रतीक्षा में स्तंभित छोड़ कर झटपट सीढियां चढ़ कर गायब हो गई ।

कुछ ही दिन बाद उन्होने फिर नाव की सुहानी सैर का इरादा किया......

और जिंदगी यों ही गुजरती रही ।

लेकिन जिस तरह इन्सान एक ही क़िस्म की जिंदगी से ऊब जाता है उसी तरह नियति इस प्राकृतिक दृश्य के रसास्वादन से उक्ता गई थी और इसीलिए नतालिया ने इस काल्पनिक प्रणय को वास्तविक रोमांस में परिणत कर दिया ।

और वह कुछ इस तरह शुरू हुआ :

एक दिन साँय एक मधुरदर्शी, मूँछें वाले चेहरे ने दूकान के दरवाजे में से झाँका और बड़ी विनम्रता से पाल से पूछा :

"अगर आप इजाजत दें तो क्या मै मालूम कर सकता हूँ कि क्या यहाँ नतालिया नामक एक नवयुवती रहती हैं ? नतालिया......अर—रर—"

उस खूबसूरत शक्ल इंसान के लिए बहेतर होता अगर वह यह सवाल न करता। सवाल सुनते ही पाल की आखें भड़कते हुए शोले की भांति लाल हो गईं ।

"मुझे नहीं मालूम," उसने बड़ी रुखाई और गुस्से से जवाब दिया।

"आप जानते तो है उन्हें—एक भोली-सी गोरे रंग की, नीली आंखों वाली मझोले कद की नवयुवती है वह ।"

"जी, नहीं मैं नहीं जानता," पाल ने दोहराया, अब तो उसका लहजा वास्तव में सख्त और गुस्से से भरा था ।

"नहीं, नहीं साहब......अऽहं उन्होंने तो कहा कि यहीं रहती है,"

सवाल करने वाला सकुचाया, उसे यह जान कर निराशा हुई थी कि वह यहां नहीं रहती। "माफ कीजिएगा, अच्छा, नमस्ते !"

पाल ने उसके अभिवादन का उत्तर भी न दिया। हालांकि वह आदमी जा चुका था फिर भी वह यही सोचता रहा कि बूटों का फर्मा उसके सिर पर दे मारे।

"क्या आप जानते है यहाँ नतालिया नाम की कोई लड़की रहती है?" आंगन मे से किसी व्यक्ति की विनम्र, भारी-भरकम आवाज सुनाई दी :

पाल फर्मा हाथ में लिये, उछला और दरवाजे की ओर लपका। लेकिन ज्योंही वह पहुंचा नतालिया की आवाज उसे सुनाई दी :

"इधर से, इधर से आओ, याकोव वासिलिच !"

पाल लौट पड़ा, दूकान में आकर बैठ गया। बौखलाहट के कारण उसने सूजा गलत जगह घुसेड़ दिया, जूते को फर्श पर फेंक दिया और फिर आंगन की ओर चल पड़ा। देहलीज पर खड़ा होकर उसने खिड़की की ओर दृष्टि डाली। उसे दिखाई तो कुछ भी न दिया पर नतालिया की आवाज, खिलखिलाहट और आदमी को गहरी, लुभाने वाली आवाजें उसे जरूर सुनाई दीं। फिर जीने पर किसी की पद-चापें सुनाई पड़ीं। वे दोनों बाहर आ गये। पाल ने झट दरवाजा भेड़ दिया और जरा-सी दरार में से वह आँख लगाये झाँकने लगा।

डर्बी सफेद हैट वाले ऊंचे आदमी के साथ नतालिया चली। वह अपनी मूँछों पर ताव दिये जा रहा था और उसे घूरता जा रहा था। नतालिया ने आंखें टेढ़ी करके दरवाजे की ओर देखा जिसके पीछे पाल खड़ा हुआ था। वे दोनों आगे बढ़ गये।

पाल दूकान पर लौट आया और खिड़की के करीब बैठ गया। उसने सिर पीछे की ओर कर लिया ताकि सड़क को ठीक से देख सके। लेकिन वहां से उसे सिर्फ सामने की ऊपर की मंजिल, छत और आसमान ही दिखाई दिये। आज पहली बार उसने महसूस किया मानो वह

तलघर के इस गहरे, नम और धुँएँ वाले फर्श में गड़ा जा रहा है। गम व मलाल के बोझ से उसका सिर लुढ़क गया और वह विचार-सागर में डूबने-उतरने लगा। मालिक उसके पास आया और उससे बात चीत करने लगा लेकिन उसे जवाब न मिला। बड़े हमदर्दी-भरे स्वर में उसने पूछा :

"क्या हुआ पाल ? तू तो ऐसा दुखी और निढाल लग रहा है जैसे तुझ पर कोई पहाड़ गिर पड़ा हो !"

"ओह !" पाल ने जवाब दिया। उसकी नजरों में निराशा झाँक रही थी, मानो उसे किसी की तलाश हो।

"मै यकीन के साथ कह सकता हूँ अभी-अभी जो स्त्री किसी आवारा गर्द के साथ गई है नतालिया ही थी," मालिक ने कहा।

"नहीं, वह नहीं थी।"

"नहीं ? तो जाकर खुद देख क्यों नही लेता उसे ?" मिरोन ने अपने नौकर की ओर संदेह और जिज्ञासा की नजरों से देखते हुए पूछा,

"अभी जाता हूँ मै।"

और वह अटारी पर जाकर ही माना, लेकिन नतालिया के कमरे में ताला लगा हुआ था। वह जीने की सबसे ऊपरी सीढ़ी पर बैठ गया और जीने के अंधकारमय गढ़े की ओर देखने लगा। बैठे-बैठे उसे जमाहियाँ आने लगीं और वह सिर झुकाये उस निस्तब्ध वातावरण में वहीं बैठा रहा।

नीचे कोई खड़ा बातें कर रहा था पर पाल की समझ में वे बातें न आईं। वह तो एक ही पहेली में उलझा हुआ था। किस तरह नतालिया को इन बदमाश सफेद हैट वालों के साथ घूमने-फिरने से रोके। इसके पहले जो शख्स आया था वह भी डबी फेल्ट हैट ही लगाए था लेकिन उसका रंग काला था और उसके मूँछों के बजाय खशखशी लाल दाढ़ी थी। वह भी बिल्कुल शैतान की नकल था। पाल ने सोचा आखिर ऐसे आदमी पैदा ही क्यों होते है, जीते ही क्यों है ? उन्हे देश

निकाला देकर कड़ी मेहनत क्यों नहीं करवाई जाती ? पाल उलझन मे पड़ गया, इन जैसे सवालों का जवाब देना उसके बसकी बात न थी। एक अर्से से उसकी उदासी और दुःख खतम हो गये थे, अब वे फिर पैदा हो गये। इसीलिए यह विचार बड़ी सख्ती से उसे सता रहा था और उसे महसूस हो रहा था वह घायल होगया है जिसकी वेदना उसे और भी सता रही थी।

इसी मनोव्यथा मे लीन वह बैठा प्रतीक्षा करता रहा और घण्टा, दो घण्टे तीन घण्टे बीते यहाँ तक कि सवेरा हो गया और नतालिया न आई। आखिरकार उसे किसी बग्घी के फाटक पर रुकने की कर्कश ध्वनि सुनाई दी। आँगन में कदमों की चापें सुन पड़ी।

उसके बदन में झरझरी-सी दौड़ गई। वह चलने के लिए उठा लेकिन अब समय जा चुका था। नतालिया अपना पीला सिकुड़ा हुआ चेहरा और रूखी आँखें लिए सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर आई। उसने पाल को देखा और अचानक स्तम्भित हो खड़ी रह गई।

"अरे, तुम ! क्यों ?" उसने कहा और उसकी ओर देखने के बाद चुप हो गई।

उसका खून सूख गया, वह एड़ी से चोटी तक काँप गया। उसका चेहरा रात भर जागने के कारण रूखा होगया, रात भर जो विचार उसके मस्तिष्क में आते रहे उन्होंने उसे व्याकुल कर दिया था। उसकी आँखों ने उसे भयभीत कर दिया; आज उसकी नजरें ऐसी भयभीत लग रही थीं कि नतालिया ने पहले उन्हें कभी न देखा था।

नतालिया इतनी शर्मिंदा न थी जितनी भयभीत। अरगनी पर झुकी हुई वह निश्चल खड़ी रही और वह बड़ी ढिठाई से उसकी ओर घूरता रहा, वहाँ से हिला तक नही। वातावरण में नीरवता थी और ढलुँआ छत में लगी खिड़की से आती हुई रोशनी से चकाचौंध, उसके बदन में हड़फूटन हो रही थी। वह प्रकाश सीधे पाल के चेहरे पर पड़ रहा था और सारे जीने से गुजरते हुए नतालिया को छू रहा था और उससे

उसके चेहरे की भाव-भंगिमा क्षण-प्रतिक्षण बदलती जा रही थी।

पाल यदि खुद अपने चेहरे को देख सकता तो उसे बड़ा अचरज होता। घुटनों पर बाँहें रखे और ठोढ़ी पर हथेलियाँ टिकाए वह बैठा हुआ ऐसा देख रहा था जैसे जज बैठा अपराधी की ओर देख रहा हो। स्थिति बड़ी विकट थी और हर क्षण वह अधिक दमघोट बनती जा रही थी। दोनों अचल खड़े रहे। वह खौफ के मारे पीली पड़ती गई और पाल की कठोर, निंदापूर्ण दृष्टि को देख-देखकर वह काँपने लगी। उसे महसूस हुआ कि पाल का तीखा, चेचकरूह चेहरा और भी प्रचण्ड बनता जा रहा था, घृणा और क्रूरता से वह लाल पीला होता जा रहा था। खुदा जाने यह कठिन परिस्थिति किस प्रकार खत्म होती यदि उस जोड़े की सहायता को बिल्ली न आजाती। बिल्ली थूकते हुए छत पर से कूदी, पाल के ऊपर से उछली और सररर से सीढ़ियाँ ते करती हुई नतालिया की टाँगों में से होकर अदृश्य हो गई।

मैं न तो प्रेतात्माओं को उकसाता हूँ और न ही मानव शक्ति को मैं केवल एक ही शक्ति द्वारा शासित हूँ और वह है सत्य की शक्ति। मैं तो महज एक बिल्ली पेश कर देता हूँ जोकि बजाहिर बड़ी छोटी और महत्वहीन घटना है और आये दिन होती रहती है लेकिन उससे बड़ी-बड़ी घटनाओं का जन्म होता है। ऐसी तुच्छ घटनाओं पर बहुत कम ध्यान दिया जा जाता है। मैं आपको इस सम्मानीय बिल्ली का आकार और रंग तो नहीं बता सकता लेकिन जिस सहायता से इसने पाल और नतालिया को उस विकट स्थिति से उबारा उसके लिए मैं उसका बहुत अहसानमंद हूँ।

एक चीख नतालिया के मुँह से निकली और फुर्ती से सीढ़ियाँ ते करती हुई ऊपर की ओर भागी और पाल उछल कर एक ओर को हट गया।

"मनहूसनी, मुझे कैसे डरा दिया कमबख्त ने।" नतालिया ने हाँपते

हुए धीरे-धीरे कहा और दरवाजे का ताला खड़खड़ाने लगी।

पाल भी काँप गया। दोनों की मूर्छा अब भंग हो गई थी। कमरे का द्वार खोल कर नतालिया ने उसे अदर बुला लिया।

पाल चुपचाप अंदर चला गया। उसके चेहरे से ऐसा झलक रहा था मानो उसने कोई बड़ा महत्वपूर्ण फैसला कर लिया है। खिड़की के पास पड़ी कुर्सी पर जाकर वह बैठ गया और नतालिता अपनी पुरानी वजह की शाल खोलने लगी।

"आज इतने सवेरे कैसे उठ बैठे तुम ?" नतालिया ने पूछा। उसे लगा कि खामोशी फिर वहाँ छाजायगी और फलस्वरूप एक बार और वही विकट स्थिति पैदा हो जायगी।

पाल ने बड़ी निराशा से उसकी ओर देखा। फिर मानो अन्दर से प्रोत्साहित हो उसने भारी आवाज में और लड़खड़ाती जबान से कहा।

"मै तो अभी तक सोया ही नही हूँ। कल शाम जबसे मैंने उस बदमाश को तुम्हारे साथ देखा—तबसे मुझे चैन ही न मिला, नींद भी न आई। तुम इस प्रकार की जिंदगी बसर करना छोड़ दो ! क्या तुम्हें यह अच्छी लगती है ? सभी कोई जो चाहें तुम्हारे साथ खिलवाड़ कर सकते हैं। भला, क्या तुम इसी काम के लिये इस दुनिया में जन्मी थी ? यह तो शराफत नहीं है ! हरगिज नही ! क्या तुम्हें इसी में आनन्द आता है ? क्या यह मुमकिन भी हैं ? कोई भी आदमी आया, तुम्हें ले गया और तुम्हारे साथ खिलवाड़ करके छोड़ गया। नहीं, तुम बंद करो इसे ! बंद करो मै कहता हूँ, नतालिया !"

अन्तिम शब्द उसके मु ह से बड़े शांत स्वर में निकले मानो उससे वड़ी दीनता से निवेदन कर रहा हो , उससे कुछ याचना कर रहा हो। जाहिर है नतालिया को उससे ऐसे किसी विस्फोट की अपेक्षा न थी, वह निश्चल खड़ी रही और शाल को जोर से पकड़े रही, उसका चेहरा भय से पीला पड़ गया। उसके होंठ हिले पर उनमें से आवाज न आई बल्कि उसकी बेहूदगी ही प्रकट हुई। वह कुछ कहना अवश्य चाहती

थी लेकिन उसमें या तो ऐसा करने की सामर्थ्य न थी या क्या कहे इसका वह निश्चय न कर पाई थी ।

पाल ने उसकी ओर देखा, अपना सिर नीचा किया और उत्तर की प्रतीक्षा करने के बाद फिर उसी विनम्रता से अपना प्रश्न दुहराया :

"नतालिया ?"

वह उसके करीब गई, उसके कंधों पर अपने हाथ रख दिए और बड़ी उदासी, शांतता व कटु विश्वास के साथ बोली :

"देखो, अगर तुम्हारा यही विचार है तो मै तुमसे झूठ नहीं बोलूँगी। मै हर बात सच-सच तुम्हें बता दूँगी। मै जानती हूँ कि जिस किस्म की हरकतें मै करती हूँ उनसे तुम्हे कोई खुशी नही हो सकती ! मै इसे समझती हूँ, पाल ! पर मै और करूँ क्या ? तुम जानते हो यही मेरी रोजी का जरिया है। मै और कोई काम कर ही नही सकती। काम ? मै जानती ही नहीं काम किसे कहते है और न मुझे काम पसन्द है। क्या काम करके भूखों मरना कोई अच्छी बात है ? लेकिन मुझमे शर्म का माद्दा जरूर है—यहाँ तुम्हारे सामने खड़ी हूँ और मैं शर्मिंदा हूँ। मुझे बहुत शर्म आरही है पाल, यकीन जानो ! लेकिन मै और कर भी क्या सकती हूं ? और कोई काम मुझे नहीं आता। मुझे तो ऐसी ही जिंदगी बसर करनी है—और मै करूँगी। जानते हो मै क्या करूँगी ? मै यहाँ से हटकर किसी और कमरे में चली जाऊँगी और तुम्हें पता भी न दूँगी कि कहाँ जा रही हूँ। तुम मुझे भूल जाना ! तुम्हें मेरी जरूरत ही क्या है ? बेहतर हो तुम कोई अच्छी पारसा लडकी ढूँढलो, उससे शादी करलो और खुश रहो। तुम्हारे लिए अच्छी लड़कियों की कोई कमी नही !"

अंतिम वाक्य उसका बयान नहीं था एक प्रश्न-सा था जो पाल से पूछा गया था।

पाल ने जोर से सिर हिला दिया।

हम उसी के बारे में तो बाते नहीं कर रहे है ! हरगिज नहीं ।

असल समस्या तो तुम ही हो, मै नही ! मै हूँ ही कौन ? मै यहाँ बिल्कुल ठीक हूँ ! लेकिन तुम्हें यह जिदगी शोभा नहीं देती ! यह बड़ी घिनावनी है ! जरा देखो तो ! वह यहाँ आया और बग्घी में बैठाकर ले गया, छिः ! जानती हो वे बदमाश है ! वे कोई मामूली आदमी नही है। जब तुम इसके बारे में सोचती हो तो क्या तुम्हारे रोंगटे खड़े नहीं होते ? साले गुण्डे कही के।"

"प्यारे पाल, क्या किया जाय, यह तो इसी तरह होना है," उसने पाल के कंधे थपथपाये, उसका स्वर सान्त्वनापूर्ण था। पाल के शब्दों में जो तीव्र वेदना थी और उसके चेहरे पर जो झुँझलाहट और घृणा की छाप लगी थी उसे देखकर वह सहम गई।

"न ऽ हीं, इस तरह नहीं होता है ! तुम मुझसे झूठ बोल रही हो। मै कोई दूध पीता बच्चा नहीं हूं। तुम्हें मुझे बहलाने की जरूरत नहीं है। मैंने इस पर खूब गौर कर लिया है। बस खुलासा सबका यही है कि तुम इस जिंदगी को छोड़ दो। इससे आजाद हो जाओ !"

"अरे, मेरे जिगर के टुकड़े ! मैं क्या कर सकती हूँ ?" उसने मैत्रीभाव से धीरे से कहा, वह और भयभीत हुए जा रही थी और उसके कंधों से चिपटी जा रही थी।

कुर्सी में धँसते हुए, अपने एक हाथ से खिड़की की चौखट का सहारा लिए और दूसरे से अपने घृणा से प्रज्ज्वलित चेहरे का पसीना पोंछते हुए उसने संकेत किया।

"नहीं, यह होना ही चाहिए ! हर कीमत पर होना चाहिये ! छोड़ दो इस घिनावनी जिन्दगी को ! निकाल बाहर करो उन हरामजादों को ! लानत हो इन पर खुदा की !"

"चीखो मत, वे सुन लेंगे। बंद करो अपनी चीखें ! आओ हम आहिस्ता-आहिस्ता बातें करें। जरा सोचो तो सही......"

"नहीं, मैं नहीं सोचूँगा ! मै पहले से ही गौर कर चुका हूँ।"

"नहीं, जरा एक मिनट ठहरो।"

और अपना सारा साहस बटोरते हुए उसने पाल का हाथ पकड़ लिया। बैठने के लिए वहाँ कुछ नहीं था, इसलिए वह अपने घुटनों के बल उसके सामने बैठ गई।

"मैं किसी काम के योग्य नही हूँ। कोई मुझे काम नहीं देगा क्योंकि मेरे पास उस किस्म का सर्टिफ़िकेट है........" उसने कहना शुरू किया और एक-एक शब्द पर जोर देने लगी।

वह बेचैनी से हिला। फिर सहसा उसे कुछ बात सूझी, वह जम गया, उस पर झुक गया और उसकी आँखों में आँखें डालकर बड़ी शान्ति व दृढ़ता के साथ बोला :

"देखो, क्या मुझसे शादी करोगी तुम ? करोगी मुझसे शादी ? आओ तो, आज से तुम्हारा—और सदैव तुम्हारा ही रहूँगा।" उसकी आवाज सरगोशी में तबदील हो गई मानो उसे किसी ने रोक दिया हो।

वह पीछे को झुक गई, उसकी आँखें खुली-की-खुली रह गईं। अचानक वह उछली, उसे गले से लगाया और उसके कानों में खुसर-पुसर करने लगी :

"प्रियतम ! हृदयेश्वर ! मेरे कलेजे के टुकड़े ! शादी करोगे तुम मुझसे—मुझसे ! तुम ! तुम—मुझसे—शादी ! तुम तो मजाक करते हो—तुम अभी बच्चे हो !"

नतालिया ने उसके चुम्बन लेने शुरू कर दिये, उसकी बाँहें पाल की गर्दन में पड़ी हुई थीं और वह पागलों की नाईं हँसे जा रही थी, साथ रोये भी जा रही थी।

आज उसके व्यवहार में पाल को कुछ अजनबियत दिखाई दी। उसकी आँखों के आगे अंधकार छा गया था। पहले तो उसे लगा उसका खून धमनियों में तेजी के साथ दौड़ रहा है। पर शीघ्र ही वह परास्त हो गया, उसने नतालिया को सख्ती से भींच लिया, और हाँपते हुए, बुदबुदाते हुए अपने गर्म, भूखे होठों से उसके चेहरे पर बार-बार

चुम्बन लेता रहा·······

उगते हुए सूर्य की पहली किरणें खिडकी में से होती हुई कमरे में दाखिल हुईं और उन्होंने अपने मृदुल, गुलाबी प्रकाश से कमरा जग-मगा दिया।

पाल की आँख पहले खुली। कमरे मे जगमगाहट थी और शान्ति व चकाचौंध करने वाले प्रकाश का साम्राज्य था। दूर कहीं फासले से कुछ रूखी और अस्पष्ट आवाज आई। धूप नतालिया के चेहरे पर पड़ रही थी। उसकी पलकें जोर से कसी हुई थी और उसकी भवों पर क्रोध झलक रहा था। उसका ऊपरी होंठ ऊपर को उठा मानो वह असंतुष्ट हो और उसके चेहरे से चंचलता व क्रोध झलक रहा था। उसके लाल कपोल देखकर पाल ने अनुमान लगाया कि वह सोने का सिर्फ बहाना ही कर रही है। उसके भूरे बाल नींद के कारण बिखर गये थे और हल्के, सुन्दर फुज्जीदार भाँज उसके कँधों पर पड़े हुए थे। एक स्थूल कंधा तो नंगा ही था; साँस के कारण उसके पतले, गुलाबी नथुने ऊपर-नीचे हो रहे थे। उसका सारा शरीर धूप से नहा रहा था और वह चमक रही थी।

पाल उसकी बगल में लेटा हुआ उसके बालों पर हल्के-हल्के हाथ फेर रहा था। नतालिया ने आँखें खोली, उनमें नीद भरी हुई थी। वह उसे देखकर प्यार से मुस्कराई और धूप से बचने के लिए उसने सिर फेर लिया।

पाल उठा और उसने कपड़े पहने। फिर चुपचाप बिना आवाज किये उसने एक कुर्सी उठाई और उसे नतालिया के पलग के पास रख लिया। और फिर उसकी ओर निहारने लगा—उसकी यकसाँ साँसों की आवाज सुनने लगा। आज वह उसके इतनी निकट, जानी-पहचानी, और इतनी प्यारी लग रही थी कि पहले कभी न लगी थी। वह मुस्कराया और अपने भविष्य के बारे में मन्सूबे बनाने लगा—इस प्रकार के ख्वाब देखना और मन्सूबे बनाना एक खुश व खुर्रम प्रेमी के लिए जो अभी

तक अपने प्रेम से थका नहीं है, उचित ही है।

उसने अपनी उस दूकान की कल्पना की जो वह अपने विवाह के बाद खोलने की योजना बना रहा था। एक छोटा-सा कमरा होगा; मिरोन का-सा अंधियारा और धुएँ वाला नहीं बल्कि रोशन और साफ। उसी से लगा हुआ एक और कमरा होगा जो हमारे अपने रहने के लिए होगा। वह भी होगा छोटा-सा ही, लेकिन उसकी दीवारों पर नीला कागज चिपका हुआ होगा और पहला कमरा पीले रंग का होगा जिस पर लाल फूल बने हुए होंगे। वह बड़ा खूबसूरत दिखाई देगा। कमरे की खिड़कियाँ बागीचे के सामने बनी होंगी जहाँ बैठकर हम लोग चाय पिया करेंगे। गर्मी के मौसम में हरियाली से उठती हुई रसीली खुशबू सहज ही कमरे में आ जाया करेगी। नतालिया खाना पकाया करेगी, मैं उसे जूते सीना सिखाऊँगा फिर हमारे बच्चे होंगे। और फिर इसी किस्म की अच्छी-अच्छी खूबसूरत चीजें जिन्दगी में मिला करेंगी।

पाल आनन्द-मग्न हो उठा और उसने एक गहरी साँस ली। वह मेज तक गया, समावार उठाया और उसे हाल में लेजाकर उसमें कोयले भरने लगा। वह जोर से हँस पड़ा। उसके लिए यह सब कल्पना करना कितने सौभाग्य की बात थी! वह उठेगी और देखेगी कि समावार मेज पर रखा उबाल खा रहा है। और वह उसके साथ बैठा हुआ घरवाली का काम कर रहा होगा! वह उसकी झट बड़ाई करने लगेगी······

जब आग की लपट बुझ गई तो उसने कोयले और डाल दिये, फिर बड़ी सावधानी से कदम रखता हुआ वह कमरे में वापस आ गया ताकि आकर हरेक चीज व्यवस्था से रख दे। नतालिया कभी की जाग चुकी थी और उसका स्वप्न चूर-चूर हो गया था। वह अपने हाथ सिर के पीछे रखे बिस्तर पर लेटी हुई थी और बड़े फूहड़पन से जम्हाई ले रही थी। उसके चेहरे पर कोई विशेष भाव-भंगिमा नहीं थी सिवाय इसके कि उसका चेहरा यह प्रकट कर रहा था कि वह पाल को

जानती है—बहुत अच्छी तरह जानती है। पाल दुखित हो उठा था।

"मैंने समावार चढ़ा दिया है।" उसने कुछ खेद प्रकट करते हुए कहा।

"ऐं? क्या बज गया?"

"दोपहर गुजर चुका।"

इस प्रकार की बातें करते हुए उसे डर लग रहा था। जिस प्रकार के विचार उसके मस्तिष्क में चक्कर लगा रहे थे उनके अनुसार तो उन्हें कुछ और ही बातें करना चाहिए थीं। लेकिन वे क्या बातें होंगी यह कहना उसके लिए कठिन था। वह फिर उसके पलंग के पास बैठ गया।

"भला, कैसा महसूस कर रहे हो तुम?" नतालिया ने मुस्कराते हुए पूछा।

"अरे, बड़ा मजा आ रहा है मुझे नताशा! बड़ा खुश हूँ मैं!" उसने प्रमुदित हो अपना हृदय ऊँडेल दिया।

"ओह, यह तो बड़ी अच्छी बात है," नतालिया ने किंचित हँसी के साथ कहा।

पाल उसका चुम्बन लेना चाहता था। उसने उसका सिर उठाया और ऊस पर झुक गया।

"ओह, तो तुम्हें यह काम पसन्द आया!" वह फिर हँस दी।

उसके शब्दों और हँसी ने पाल के शरीर में सिहरन पैदा करदी।

"तुम कह क्या रही हो?" उसने परेशान हो पूछा।

"मै? मै तो कुछ नहीं कर रही, बस यों ही। क्या अब भी तुम मुझसे शादी करना चाहते हो?"

नतालिया के स्वर में निहित सन्देह व उपहास पाल ताड़ गया। आखिर उसका क्या तात्पर्य हो सकता है।

पलंग पर बैठे-बैठे ही नतालिया कपड़े पहनने लगी। उसके मुख पर उदासी और कुछ क्रूरता झलक रही थी।

"तुम्हें हो क्या गया है, नताशा ?" पाल ने डरते-डरते पूछा।

"क्यों ?" उसने पाल की ओर देखे बिना ही पूछा।

पाल ठीक से कुछ समझ न पाया। उसे सिर्फ इतना महसूस हुआ कि नतालिया को उस स्थिति-विशेष में वैसी बातें नहीं करना चाहिए थीं जैसी वह कर रही थी। लेकिन वैसे व्यवहार के लिये उसके पास भी कारण थे। जब वह नींद से जागी थी तो उसमें एक प्रमुख परिवर्तन आ गया था। उन दोनों के दरम्यान जो कुछ हुआ था वह सब उसे याद हो आया। उसे याद आया और महसूस हुआ कि अपनी विलासप्रिय वृत्ति के वश में होकर अपना एक परम मित्र खो दिया था—वह वृत्ति जिसने उनके सम्बन्धों को उसी परिचित, बोझिल और गन्दी कोटि में रख दिया था। वह ऐसे अनेक अनुभव कर चुकी थी और उनसे ऊब गई थी। पाल में जो चीज उसे पसन्द थी वह था उसका सम्मानपूर्ण और दोस्ती का रवैया। वह अभी कुछ घण्टे पहले तक शेष था। लेकिन अब उसे महसूस हुआ कि वह मैत्री खतम होने वाली है। वह अच्छी तरह जानती थी कि इस प्रकार के रिश्तों का किस तरह अन्त होता है। वही उनके प्रारम्भ का ढग था और वही उनका अन्त। हालाँकि वह देख रही थी कि पाल खुश था, प्रफुल्लित था लेकिन वह यह कल्पना ही न कर सकती थी कि वह ऐसा कुछ समय और रहेगा। उसने अपना एक अच्छा दोस्त खो दिया था। उसे अपने आप पर क्रोध आ रहा था। उसका हृदय शोक और पीड़ा से भर गया था। पाल अब तक अपने सिंहासन पर से लुढ़का नहीं था लेकिन उसे कुछ ऐसा ही महसूस हो रहा था। वह खुद ऐसा महसूस कर रही थी कि अब गिरी, अब गिरी।

जब वह कपड़े पहन रही थी तो पाल ने उसे देखा और उसकी वासना जाग्रत हो गई उसका दिल बार-बार उसे चूमने और उसका आलिंगन करने को व्याकुल हो उठा। किसी प्रकार के ज़ब्त की कोई जरूरत न समझते हुए, और दर असल ज़ब्त की उसकी शक्ति भी न

थी, उसने उसे सीने से लगा लिया। नतालिया ने भी किंचित उदासीन और वक्र मुस्कान के साथ अपने आपको उसके सुपुर्द कर दिया। उसे सर्दी लग रही थी लेकिन पाल ने उसे गरमा दिया था—गर्मी उन दोनों के लिये काफी थी इसलिए अब उसने सर्दी महसूस न की।•••

दस मिनट बाद वे दोनों चाय पी रहे थे; वह पहले ही नहा-धोकर, बन-सँवर कर पलंग पर बैठी हुई थी और वह उसके रूबरू कुर्सी पर बैठा हुआ था। वह शांत उत्साह और थकान महसूस कर रहा था। वह उदास थी और चाय की पिर्च मुँह को लगाते हुए उसे निहार रही थी और गहरी साँसें ले रही थी।

सहसा पाल ने देखा कि उसके गालों पर बड़े-बड़े आँसू ढुलक आये थे जो चाय में गिरते जा रहे थे पर वह उसे तब भी पिये जा रही थी। शायद ही कभी किसी ने अश्रु-मिश्रित चाय पी हो और फिर भी इतनी शांत और उदासीन लगी हो जितनी कि यह विकट लड़की लग रही थी।

"तुम्हें हो क्या गया है, क्यों? क्या हुआ? आखिर यह सब है क्या?" पाल ने कुर्सी पर से कूद कर उसके करीब जाते हुए फुर्ती से पूछा।

नतालिया ने अपनी पिर्च मेज पर दे मारी और उसकी अश्रु-मिश्रित चाय बिखर गई। सिसकियाँ लेते हुये वह बोली:

"मैं बेवकूफ हूँ! मैंने अपने आपको लूट लिया है! जिन्दगी में एक ही बार मैंने बुलबुल की मधुर ध्वनि सुनी थी और अपने आप ही उसे डरा कर भगा दिया है। यह मैंने ही बनाया था, मैंने ही इसे बर्बाद कर दिया! नताशा, तू खतम हो गई! अब मैं अपने आपको रो-रोकर खतम कर लूँगी। ओह! ओह! ओह! मूर्ख! मूर्ख!"

पाल की समझ में कुछ न आया। उसके चुम्बन-आलिंगनों ने तो नतालिया का शक और बढा दिया। वह रोती रही। अंततः पाल ने कहा:

"बस बहुत हो गया नताशा! खतम करो इसे! चलो मुझसे शादी कर लो और हम फिर नई जिन्दगी शुरू करेंगे! मेरी अपनी दूकान होगी और तुम घर की स्वामिन बनोगी, मेरी पत्नी जैसी कि दूसरी स्त्रियाँ होती हैं! कितनी अच्छी जिन्दगी होगी हमारी!"

नतालिया ने उसकी बाँह परे को धकेल दी। कृत्रिम हँसी हँसते हुए, फिर भी इस प्रकार मानो वह मूर्छित हो, एक धुँधली आशा में उसने कहा:

"आखिर कब तक? सिर्फ हफ़्ते भर तो तुम वैसी बातें करोगे, हम तुम्हें खूब जानती हैं! हम खूब जानती हैं तुम्हें, मेरे प्यारे! मेरा वह मतलब हरगिज नहीं था। उसका तो मुझे ख्याल भी न आया था। डरो मत। मैं तुम्हारे सुझाव पर ध्यान नहीं दूँगी। न उसे कबूल करूँगी। क्या वाकई तुम्हारा ख्याल है कि मैं तुमसे शादी कर लूँगी? मैं किसी से शादी नहीं करूँगी, तुमसे भी नहीं। फिर तुम अच्छे आदमी हो, और अच्छा ज्यादा दिन नहीं रहता। मैं नहीं चाहती कि शादी के बाद तुमसे अपनी गुजरी हुई जिन्दगी के बारे में उलाहने सुनूँ। नहीं, मैं नहीं सुनना चाहती! तुम समझते हो शादी के बाद तुम मुझे अपनी आज की जिन्दगी की याद नहीं दिलाओगे? अरे भइया! और सबों की तरह तुम भी वैसा ही करोगे। मैं जानती हूँ। मुझ जैसी लड़कियों के लिये तो जिन्दगी की इस दलदल में सूखा स्थान एक भी नहीं है। लेकिन छोड़ो भी, क्यों बहस करें हम इन बातों पर। मुझे तुम्हारा सुझाव नहीं चाहिए। मुझे तो अगर किसी चीज का गम है तो इसी का की मैंने मूर्खता की और तुम जैसे दोस्त को हाथों से खो दिया। और इसमें दोष मेरा अपना है। ओह, हो, मैं कैसी मूर्खा हूँ!"

पाल ने उसे समझाने की बड़ी कोशिश की लेकिन असफल रहा। उसके आँसुओं ने उसे बहुत द्रवित किया और उसके दिल मे एक उदासी व भय पैदा कर दिया जो किसी अस्पृश्य वस्तु के प्रति था।

"सुनो, नताशा ! मुझे सताओ नही," उसने गंभीरता से कहा। इन शब्दों से मुझे न बेधो। वे मेरी समझ में नहीं आते। मै उनके गूढ़ अर्थ तक नहीं पहुँच सकता। लेकिन ये शब्द ही तो सारी तकलीफ नहीं है। मै जोर के साथ यह कह सकता हूँ, चाहो तो मै अपना दिल खोलकर तुम्हें दिखा सकता हूँ। देखो, तुम इस दुनिया में मेरे लिये सबसे ज्यादा प्यारी चीज हो! तुमसे बढ़-कर मेरा और कोई नही है। यही मै महसूस करता हूँ। मै तुम्हारे लिए सब कुछ कर सकता हूं। मुझे हुक्म दो, 'पाल सूर्य को बुझा दो !' मै रेंगता-सरकता छत पर चढ़ जाऊँगा और इतनी फूँकें मारूँगा कि या तो वह बुझ जायगा या फिर मै फटकर खतम हो जाऊँगा। मुझे आज्ञा दो, 'पाल, लोगों की गर्दन काट दो !' मै जाकर सबके सिर उतार लाऊँगा। कहो, 'पाल, खिड़की से नीचे कूद पड़ो !' और मै जा कूदूँगा ! मै वह सब करूँगा जो तुम मुझसे करवाना चाहोगी। तुम कहोगी, 'पाल, मेरे कदम चूम लो !' और मै अभी, इसी क्षण उन्हें चूम लूँगा। चूमूँ क्या ? चूमने दो ना !"

वह दौड़ कर उसके कदमों से लिपट गया।

नतालिया इस विस्फोट से अचंभित हो गई थी। वह उसके पहले शब्दों को कुछ अविश्वास-भरी मुस्कराहट के साथ सुनती रही। और जब पाल ने सूरज को बुझाने का सुझाव रखा तो वह कहकहा लगाकर हँस पड़ी। जब उसने उसके सम्मान मे लोगों को कत्ल करने की वात की तो वह काँपने लगी। वह बड़ा भयावह लग रहा था उसके सारे शरीर से ज्वाला भडक रही थी और वह लरज रहा था। और जव उसने नतालिया के चरण चूमने चाहे तो उसे अपार गर्व महसूस हुआ और उसने बिना किसी आपत्ति के उसे इसकी अनुमति देदी।

इन्सान को गुलाम बनाने में हमेशा लोग मजा लेते आए हैं। और यहाँ भी नतालिया ने एक इन्सान को ही गुलाम बना लिया था। लेकिन एक और मानवीय प्रवृत्ति भी उसमें मौजूद थी और वह थी

दया-भाव—जब वह उसके कदमों पर गिरा तो उसने उस पर तरस खाया। वह झुकी, पाल को फर्श पर से उठाया और ऊपर उठाकर उसे इस प्रकार प्यार किया कि ऐसा पहले किसी को न किया था। आखिरकार वे दोनों थक कर चूर हो गये और इन तमाम बातों से ऊब गये।

लेकिन अभी तक वे पूरी तरह शान्त नहीं हुए थे। उन्होंने शहर के बाहर मैदान मे घूमने जाने का इरादा किया। पाल सब कुछ भूल गया—दूकान, मालिक, घर-बार। और नतालिया के साथ उन निर्जन, सकरी गलियों में चलता रहा जहाँ से वह उसे जान-बूझ कर ले जा रही थी ताकि कोई जान-पहचान वाला न मिल जाय। वे दोनों घण्टों उन मैदानों में अकेले घूमते रहे। वे बड़ी स्पष्टवादिता से एक-दूसरे से बोलते रहे ताकि मूर्ख या बेहूदा न लगें। एक-दूसरे पर अपने-अपने विचार व सिद्धान्त लादना वे नहीं चाहते थे और न ही एक दूसरे पर गालिब आना चाहता था। उन रवैयों और विचारों का यहाँ सर्वथा अभाव था जो सुसंस्कृत लोगों के प्रेम में प्रवेश करते है और प्रेम को अधिक स्वादु बनाने की अपेक्षा उसे तीखा बना देते है।

आइये तो फिर जैसा कि कानूनदाँ करते है हम भी "उपर्युक्त परिस्थितियों के कारण" अपने नायक व नायिका की संस्कृति के अभाव के लिए उन्हें क्षमा कर दें।

अत मे वे नदी पर आये और किनारे पर खड़े वेद वृक्षों तले लहरों से धुली हुई रेत पर बैठ गये। एक दूसरे की बाहों मे जकड़े हुये कुछ देर बाद उन्हें नीद आ गई।

कुछ दिनों वाद पाल ने सोचा कि जो भी आदमी दूकान की खिड़की के नीचे से गुजरता है जरूर नतालिया के कमरे पर ही जाता होगा। जब कभी भी कोई वहाँ से जाता वह उछलकर आँगन की ओर दौड़ता मालिक उसे देख लेता—पर पाल ने उसे पहले ही सब कुछ बता दिया था—और खी-खी करके हँस पड़ता। जब पाल ने बडे आदर से अपने मालिक से निवेदन किया कि वह दम्पत्ति को विवाह के अवसर पर आशीर्वाद दे तो मिरोन भौचक्का रह गया। और जब उसे होश आया तो उसने एक भाषण दे डाला :

"मूर्ख कहीं के ! मेरी सुन जरा। मै दो बार शादी कर चुका हूँ। मेरी पहली बीवी इतनी नासमझ थी कि मुझ में और दुकान पर काम करने वाले दूसरे आदमियों मे फ़र्क ही नहीं कर सकती थी। दूसरी ने मुझसे इतना प्यार किया कि खुदा जाने मै जिन्दा कैसे रह गया। जब भी उसके जी में आता, जो कुछ भी उसके हाथ मे होता वही मुझ पर दे मारती। उसे मर्दों के मारने में इतना मजा आता था कि तुम सोचोगे उसके माँ-बाप पुलिस में तो नहीं थे।"

इसके बाद उसने पारिवारिक जीवन का पूरा चित्र उसके सामने खींचकर रख दिया—बर्तन-भाँडे, पलुए, कर्छे, कपड़े धोना, फर्श धोना और अन्य सुविधाएँ। उसके वर्णनानुसार—और उसने शपथ खाकर कहा था, वह सच कह रहा है—उसकी गोभी में साबुन डाल दिया जाता था, उसे हाथों के बल चलाया जाता था, गीले पलुए उसके मुँह पर मारे जाते थे और उसकी घरवाली अपने वर्तनों की मजबूती अक्सर उसके सिर पर मारकर परखती थी। अंत में मिरोन औरतों की बातों पर

आ गया और फिर उसने एक दुखप्रद निष्कर्ष निकाला।

"तू तो बावला हो गया है ! अबे, औरतों की कोई कमी है तेरे लिए ? इसी को लेकर क्या करेगा तू ? उसके साथ रह कर अपनी जिंदगी तबाह करने के सिवा क्या मिलेगा तुझे ? मेरी बात मान। माना उसने तेरे साथ कुछ भलाई की है। ठीक है, पर तू अब तो आदमी बन गया है, तू खुश रहता है, हँसता है और बातचीत कर लेता है। लेकिन भाई मेरे, तूने तो कभी का उसका अहसान चुका दिया है। और कौन उसके साथ इस तरह का बर्ताव करेगा जैसा तूने किया है ? बस जितना उसके साथ तूने किया वह काफी है उसके लिए। अगर तुझे शादी करना ही मक्सूद है तो फिर जरा सलीके से शादी कर। मैं तेरे लिये एक अच्छी सी सुन्दर, गोल-मटोल लौडिया ढूंढ दूंगा। वह तो तेरे काम की भी होगी। ढेरों समान दहेज में लायगी, उससे तू अपनी दूकान खोल लेना। लेकिन इससे ब्याह मत कर ! महीने-भर में ही तू उक्ता जायगा। फिर कैसे जिएगा ? तेरे पास कुछ भी तो नहीं है—न चमचे है न प्याले। करना-धरना उसे कुछ भी नहीं आता। लानत भेज सुसरी पर; बेकार है वह तेरे लिए !"

मिरोन का भाषण दूकान की दीवारों ने सुना, पाल पर उसका तनिक प्रभाव न पड़ा। पाल अब नतालिया से इतना अनुरक्त हो चुका था कि उसे दिल से दूर करने की बात तो दरकिनार उसकी एक क्षण की अनुपस्थिति भी अब उसे खलती थी; वह चाहता था कि वह दूकान में उसके सामने बैठी रहे ताकि वह उसी गर्मजोशी और उत्साह के साथ काम करता रहे जैसा कि पहले किया करता था।

एक दिन काम खत्म करने के बाद जब वह उससे मिलने गया तो नतालिया कमरे पर नही थी। वह पीला पड़ गया और काँपने लगा। दरवाजे पर बैठ गया और तब तक बैठा उसकी प्रतीक्षा करता रहा जब तक वह आ न पहुँची। जब वह लौटी तो आधी रात से ज्यादा समय बीत चुका था। लेकिन फिर भी वह उतनी ही गम्भीर और

संतुष्ट थी जितनी हो सकती थी। उसने पाल को यह कहकर चुप कर दिया कि वह अपनी किसी सहेली से मिलने गई थी जिसने उसे एक नौकरानी का काम दिलवाने का वादा किया था। पाल ने उसकी बात का विश्वास कर लिया और खुश हो गया, उसके अपने संदेह भी वह भूल गया।

पर उसके शीघ्र ही बाद वह सोचने लगा—यह पैसे कहाँ से लाती है? इस सवाल के आते ही उसके शरीर में सिहरन दौड़ गई। उसी शाम उसने नतालिया से पूछ भी लिया। और उसने उसका जवाब एक और सवाल से दिया :

"मुझे कितने पैसों की जरूरत पड़ती होगी?"

पर पाल इस प्रश्न से सन्तुष्ट न हुआ।

"मैने एक-एक कोपेक जोड़ कर रखा है। बस, उसी से काम भी चलाती हूँ।"

किसी बात ने उसे यह कहने के लिए उकसाया :

"दिखाओ मुझे कहां है तुम्हारे पैसे?"

वह सकुचाई अन्त में उसने कहा, "अच्छा। अगर तुम देखना ही चाहते हो तो मै बता भी सकती हूँ।"

लेकिन उसे अपने सन्दूक की चाबी ही न मिली।

प्रश्न का जवाब न मिल सका।

जब पाल ने अपने भविष्य के जीवन का सुंदर चित्र नतालिया को दिखाया तो वह चुप रही और उसकी आँखें झपकने लगीं। जब वह अपनी कल्पना की उड़ानों में खूब ऊपर उड़ गया तो उसे चुमकारने लगा, नतालिया का जिस्म ठण्डा था। एक बारगी तो वह इतनी स्पष्ट हो गई कि वह पूछने पर मजबूर हो गया :

"शायद तुम्हें मेरी बात अच्छी नहीं लगी?"

वह बड़ी देर तक उसके प्रश्नों का उत्तर न दे सकी; उसकी नजरों में असमजस झलक रहा था। चुपचाप, मानो अपने शब्दों पर स्वयं उसे

विश्वास न हो, वह अंततः बोली:

"न ऽ ऽ हीं। तुम ऐसी बातें क्यों सोचते हो? ये बातें मुझे बहुत पसन्द हैं।"

उसे शांत करने के लिये यह काफी था।

पाल ने अपनी तनख्वाह लाकर नतालिया को देनी शुरू कर दी मानो वह उसकी स्त्री हो, गृहिणी हो। एक बार वह उसकी पोशाक के लिए कपड़ा खरीदकर लाया। उस उपहार को लेकर जो नतालिया की प्रतिक्रिया हुई वह बड़ी रस्मी और कोमल थी। उस समय पहली बार पाल ने अपने प्रति प्रकट की गई सम्मान की कमी और द्वेष के चिन्ह नतालिया के व्यवहार में अनुभव किये। इस प्रकार की भावनाओं व विचारों को वह ठीक से न समझ पाता था लेकिन यह वह जरूर जानता था कि ऐसे विचार प्रकट नहीं किये जाने चाहिये।

कई दिन बाद एक बार जब वे दोनों चाय पी रहे थे, किसी के कदमों की चापें और उच्छृंखल लोगों की सीटियों की आवाजें ज़ीने में सुनाई पड़ी। कोई पतली, ऊँची आवाज में गा रहा था:

"मैं चला अपनी प्यारी नताशा के यहाँ,
और लो यह आ गया मेरी प्यारी का घर।"

पाल फ़ौरन भाँप गया कि कुछ दुःखदाई घटना, घटने वाली है। वह गुस्से में गुर्राने लगा:

"तो वह आ गया मेरी प्यारी का घर—ऐं! तुम्हारे मेहमान आए हैं?" गायक ने अपना गाना समाप्त किया और निराश हो दरवाजे पर आकर ठिठक गया।

वह कुछ दयनीय-सा छैल-छबैला, नाटा-सा शख्स था जिसकी मूँछें ऊपर को चढ़ी हुई थीं। पाल की ओर घूरते हुए वह बड़ी बेतकल्लुफी के साथ कमरे में दाखिल हुआ और उससे भी ज्यादा बेतकल्लुफ़ी से उसने अपना हैट खूँटी पर टाँगा, फिर नतालिया की ओर बढ़ा जिसकी स्वागतपूर्ण मुस्कान में कुछ ऐसी झलक थी मानो वह असमंजस

में पड़ गई हो और साथ ही अपने जुर्म का उसे आभास भी हो रहा हो ।

"कहो मेरी जान, सौंदर्य की देवी नताशा !"

"क्या चाहते हो तुम ?" पाल ने गरजकर पूछा ।

छैले ने पाल की ओर देखा, और मूँछों पर ताव दिया और फिर पाल की तरफ कोई ध्यान न देते हुए उसने वीरता के साथ नतालिया का हाथ पकड़ते हुए अपना अभिवादन पूरा किया ।

"मिस क्रिवित्सोव ! पहले तो मुझे चाय पिलाओ और फिर इस सड़ी शक्ल वाले सज्जन के बारे मे बताओ ।"

"मारो इस मरदूद को !" सड़ी शक्ल वाले सज्जन ने कुर्सी पर से उठते हुए कहा ।

"क्या है यह ? नताशा, क्या मतलब इस बात का ?" अपनी मेजबान को सम्बोधित करते हुए अपमानित छैले साहब बोले ।

"मारो इसको !" पाल ने क्रोध से काँपते हुए दोहराया ।

"अच्छा भई, हम जाते है," मेहमान ने झट समझौता किया और जाते हुए सीढ़ियों पर चिल्लाता हुआ गया :

"खुदा करे तुम्हारी शादी कामयाब हो जाय, नताशा ! मै उन्हें भी बता दूँगा—"

लेकिन वह किसे बतला देगा, यह न मालूम हो सका ।

बड़ी देर तक वे मौन बैठे रहे ।

पाल ने बड़ी मायूसी से पूछा :

"इनका आना कब बन्द होगा ?"

"जब तुम उन सबको निकाल बाहर कर दोगे," नतालिया न शांतिपूर्वक कहा ।

"क्या और भी बहुत से हैं ?"

"मुझे नहीं मालूम । मैंने तो उन्हें कभी गिना नहीं । उनसे तुम्हें इतनी सख्त नफरत क्यों है ?" वह उपहास करते हुए बोली ।

"मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता ? समझी ? मैं इसे कतई बर्दाश्त नहीं करूँगा ! तुम अब मेरी हो चुकी हो।"

"अच्छा, तो यह बात है ! तुमने मुझे खरीदा कब था ? इस सौदे के लिए क्या दाम दिये थे तुमने ?"

पाल उसे घूरने लगा।

"तुम हँसती हो······नहीं हँसना नहीं चाहिये तुम्हें। मैं तुमसे झूठ नही बोल रहा हूँ, जानती हो ! तुम अब मेरी हो, दिन में भी और रात को भी। मैं हमेशा तुम्हारे बारे में ही सोचता हूँ, हमेशा तुम्हारा ही ख्याल मेरे दिल में रहता है।"

"बस, काफी है······खतम करो इसे। अब हम ज्यादा बातें नहीं करेंगे !" नतालिया के स्वर में रुखाई थी।

कुछ दिनों तक तो पाल का नतालिया के मेहमानों के प्रति दृष्टिकोण उसे परेशान किये रहा। वह उन लोगों का नाता तोड़ना अनावश्यक समझती थी। उनमें से कुछ बड़े व्यक्ति थे, खुशी मिजाज और दिलचस्प। कभी-कभी तो पाल उसके साथ न केवल असभ्यता का व्यवहार करता था बल्कि समाज-विरोधी बातें भी करता था। अगर वह हर वक्त उसके साथ रहेगा तो नतालिया को बड़ी कठिनाई होगी। उसकी पसन्द-नापसद और थी जबकि पाल की पसंद बड़ी अजीब और हास्यास्पद थीं। लेकिन इस सबके बावजूद वह भला आदमी था, दिल का साफ, ईमानदार; वह उससे प्रेम करता था और नतालिया को उसके प्रेम पर गर्व था। जब पाल उसे अपनी बराबर समझता तो वह बड़ी प्रफुल्लित हो जाती। वह उससे हरेक बात पर बड़ी आजादी के साथ बहस किया करता था और वह भी उससे उतनी ही बेतकल्लुफ थी। और यह भी बहुत बड़ी बात थी। वह अब सोचने लगी और मंसूबे बनाने लगी कि क्या कोई ऐसी सूरत भी निकल सकती है जिसमें वह पाल को भी अपने साथ रखे और साथ ही अपना पेशा भी जारी रख सके। हालाँकि उसने सोचा कि इस प्रकार की जिंदगी कभी-कभी

दु:खदाई ही साबित होगी फिर भी अक्सर उसमें लुत्फ भी आया करेगा। हर अच्छी चीज तो वह अपने लिए रखना चाहती थी और बुराइयों में पाल को साझीदार बनाना चाहती थी। उसे आशा थी कि कुछ दिनों में वह पाल को इतना मोहित कर लेगी कि वह इस प्रकार का सुझाव स्वीकार करने को तैयार हो जायगा। शादी के सम्बन्ध में जो मन्सूबे वह बनाया करता था उसे वह बड़े गौर सुनती थी। आंखें मूंदे हुए वह मुस्कराती और पारिवारिक जीवन के भव्य दृश्यों का चित्र देखती थी—दृश्य जो बड़े सौम्य व सुखद थे और रोचक भी।

कभी-कभी तो पाल के चित्रण की रौ में ही वह बह जाती थी। लेकिन वह बड़ी बुद्धिमान थी और खूब जानती थी कि यदि ये काल्पनिक चित्र यथार्थ में परिणत होगये तो पाल की सारी तमन्नाएँ धूल में मिल जायेंगी। उसे दृढ़ विश्वास था कि पाल का उत्कट प्रेम जल्द ही बह जायगा। पाल के प्रेम को वह अपने ढंग से समझती थी और वह ढंग कोई खुशामद या चापलूसी का नहीं था। वह भली भाँति जानती थी कि उसका प्रेम गया नहीं और वह उसे उलाहने देगा, उसे पीटेगा। फिर इसके अलावा हमेशा एक ही पुरुष के साथ जिंदगी भर रहना, दिन-रात, एक ही कमरे में बस अकेले ही रहना भी बोझिल साबित होगा।

फिर बाद में कभी उसे खयाल आता कि नहीं, वह उसके साथ बड़ी अच्छी तरह रह भी सकती है, और काफी समय तक रह सकती है, लेकिन फिर वह यही निश्चय करती कि नहीं वह ठीक नहीं है। वह उसके योग्य नहीं है। वह सिर्फ़ इसलिए ही उससे शादी नहीं करेगी क्योंकि वह उस पर तरस खाती है; वह बहुत अच्छा आदमी है। नहीं नहीं, वह ऐसा नहीं करेगी चाहे वह उससे कितनी ही बार क्यों न कहे। वह उसके सुख व समृद्धि की कामना करती थी—लेकिन उसकी अपनी जिंदगी तो उसी प्रकार जारी रहनी चाहिए जैसी कि वह अब तक रही है।

इस प्रकार के विचार अपने साथ कुछ अनजाने और मजेदार एहसास लाते थे। जब वह इस प्रकार सोचती थी तो लगता था वह अब साफ और चतुर बनती जा रही है। अपनी विलासप्रियता और शारीरिक भूख से प्रेरित उसने कुछ कृत्रिम चित्तवृतियाँ बना ली थीं। जब वह पाल के साथ होती तो बड़ी शांत, चिन्तनशील और शालिनी बन जाती। पाल उसके साथ बड़ी नजाकत से पेश आता। वह अपना इसी प्रकार मनोविनोद कर लेनी थी और पाल के साथ रहने मे जो उसे उक्ताहट महसूस होने लगी थी उसे भी कुछ हद तक वह दूर कर लेती थी। लेकिन हमेशा वह अपनी वह भूमिका न निबाह पाती थी। तब वह उससे छिप जाती थी या अपने पजे दिखाती थी। दूसरी ओर पाल उससे और ज्यादा अनुरक्त होता जा रहा था। बार-बार इच्छा होती कि नतालिया से मिलकर कुछ निर्णयात्मक बातें करल और आखिरकार उसकी यह आकाँक्षा पूरी भी हुई।

एक दिन शाम को शहर में घूमते-घूमते वे एक छोटे से बाग में चले गये। वे कुछ थक गये थे इसलिए बबूल के घने वृक्षों के नीचे पड़ी एक बेंच पर बैठ गये। हेमंत के प्रतीक पीले-पीले पत्ते कभी-कभी चमककर उन पर प्रकाश डालते थे।

"हाँ तो, नताशा, क्या ख्याल है तुम्हारा?" पाल ने उसे कनखियों से देखते हुए बड़ी गम्भीरता से पूछा।

"काहे के बारे में?" एक टूटी हुई टहनी से पंखा झलते हुए उसने पूछा। वह समझ गई थी सवाल का सकेत किस ओर है।

"मैंने कहा, फिर कब कर रही हो शादी?"

चाँद की किरणें बबूल के वृक्षों से छन-छनकर उन पर पड़ रही थी। एक बारीक-सी छाया उन दोनों को अपने आगोश में लिए हुए थी। उनके पाँवों के नीचे की जमीन पर वे झिलमिलाती और बेंच के सामने चमककर उन्हें छोड़ देती थीं। बागीचे मे निस्तब्धता छाई हुई थी। ऊपर शाँत, निर्मल आकाश मे परदार, सुंदर बादल धीरे-धीरे

छँट रहे थे और उनकी रोवेंदार चमकीली बनावट में से कभी-कभी झिलमिलाते तारे झाँक लेते थे।

घूम-फिरकर थके हारे और बातें करते हुए नतालिया ने कुछ उदास, चिंतनशील भंगिमा ग्रहण करली। शादी के प्रति उसका जो विरोध था वह उस क्षण बड़ा ही सच्चा, न्यायोचित और प्रामाणिक लग रहा था।

"शादी ?" उसने अपना सिर हिलाया। "लो सुनो। भूल जाओ उस सबको। मै कैसी बीवी बन सकती हूँ ? मै तो गली-कूचों में भटकने वाली औरत हूँ। और तुम एक ईमानदार और काम करने वाले आदमी हो। इसीलिए हम तुम मियाँ-बीवी नही बन सकते। मैं तो तुमसे पहले ही कह चुकी हूँ कि मै आत्म-विहीन हूँ। मै अब और कुछ नहीं कर सकती।"

आत्म-ग्लानि में उसे आनंद आ रहा था; इस समय वह सोच रही थी कि वह भी उन्हीं नायिकाओं में से एक है जिनके बारे में वह किताबें पढ़ती रही थी।

"और तुम्हें," उसने उसी उदास स्वर में कहा, "तुम्हें तो एक अच्छी-सी, ईमानदार बीवी की जरूरत है। मै तो पैदा ही इस पाप-भरी जिंदगी के लिए हुई थी। मैं चाहती हूँ तुम्हारी जिंदगी अच्छी तरह से बसर हो। तुम्हारी अच्छी-सी बीवी हो, बच्चे हों, और अपनी दूकान हो।" और अपने आँसू रोकते हुए लरजती आवाज में उसने उसके कान में कहा, "और मैं चुपचाप, दबे पाँव तुम्हारे यहाँ आया करूँगी और देखूँगी मेरा प्यारा पाल किस हाल में है—"

वह सिसकियां लेने लगी। सच पूछो तो उसने अभी जो कुछ भी कहा था वह बड़ा दु:खद और कष्टकर था। अपनी छोटी-सी किताब का उसे एक दृश्य याद हो आया—वह "उससे" बड़ी गहरी मुहब्बत करती थी, उसी पर और उसके सुख पर अपना प्रेम न्यौछावर करती थी, हरेक कोई उसकी उपेक्षा करता था लेकिन मेरी डिजायरी, अपने

फटे-पुराने कपड़े पहने, मुसीबत की जिन्दगी बिताते हुए भी चार्ल्स लिकान्ते से प्रेम करती थी, उसकी खिड़की पर खड़ी होकर शीशे में से उसे झाँका करती थी; चार्ल्स उसकी पत्नी फ्लोरंस के पैरों में बैठा कोई किताब पढ़ कर सुना रहा था, फ्लोरंस एक हाथ से अपने घुटने पर बच्चे को बिठाए थी और दूसरा हाथ चार्ल्स के बालों को कुरेद रहा था। वह बैठी अपनी चिमनी की ओर नजरें गड़ाए हुए थी। बेचारी मेरी बहुत दूर से पैदल चल कर वहाँ आई थी और अपने साथ अपना भोलापन और प्यार लाई थी लेकिन हाय ! अब समय जा चुका था ! वह खिड़की पर खड़ी-खड़ी ठिठुर गई।—' नतालिया को खबर ही न हुई कि आखिर वह कहानी खतम कहाँ हुई। किताब के आखिर के पन्ने फट गये थे। जब उसे यह कहानी याद आई नतालिया सिसकियाँ लेने लगी, वह फूट-फूट कर रोने लगी।

पाल हमदर्दी और प्यार, मजबूरी और ग़म से दबा धूजने लगा। उसने उसे कस कर सीने से लगा लिया। आँसुओं से ज़ार-ज़ार उसने भर्राई हुई आवाज मे कहा :

"नताशा प्यारी ! नताशा, मेरी रानी ! बस बहुत हो गया। बंद करो ! मैं तुझसे प्यार करता हूँ। अब मै तुझे इस तरह नहीं छोड़ सकता !"

आखिरकार वह किंचित ठण्डी पड़ी। उसके प्रेम से उत्तेजित और उसकी आत्मा की उच्चता से भयभीत, जिसे वह भली प्रकार समझता था, पाल ने शान्तिपूर्वक तथा दृढ़ता से कहा :

"लो सुनो जरा ! तुम मेरी हो क्योंकि तुम दिन-रात मेरे दिल में समाई रहती हो। मेरे लिए तुमसे बढ़कर और तुम्हारे अलावा कोई नहीं है न ही मुझे किसी और की आवश्यकता है। किसी की मुझे चाह नहीं। बस मेरी तो तुम्हीं हो, और रहोगी, कहो तुम मेरी रहोगी। खुदा के लिए मेरी बात समझो, नताशा ! मै तुम्हें किसी और को नहीं दूँगा। क्योंकि तुम्हारे बिना जिंदा रहना मेरे लिए ना मुमकिन है। भला मैं

तुम्हारे बगैर कैसे जिंदा रह सकता हूँ जब चौबीस घण्टे मुझे तुम्हारा ही खयाल रहता है ? तुम मेरी हो ! मै तुम्हें अपना सर्वस्व दे दूँगा ! समझ रही हो ? आओ बस इस पर ज्यादा बातें करने की हमें जरूरत नहीं !"

लेकिन नतालिया तो उस पर बहस करके ही मानी। उसने पाल के सम्मुख अपने को हीन प्रदर्शित करके गर्व अनुभव किया। जब उसने अपने आप पर गालियों-कोसनों की बौछार की तो उसे परम हर्ष हुआ। उसकी दीनता व आत्म ग्लानि और भी स्पष्ट और रूखी प्रतीत हुई। शीघ्र ही वह कहने लगी :

"तुम समझते हो इस अर्से मै मै बिल्कुल पाक रही हूँ ? क्यों क्या यही खयाल है तुम्हारा, भोले बुत ! हर रात मै—"

लेकिन वह वाक्य पूरा न कर सकी। पाल खड़ा हो गया, अपने हाथ उसके कंधों पर रख कर उसने उसे झिझोड़ा और कर्कश आवाज में आहिस्ता से कहा :

"खामोश ! चुप रहो ! मैं तुम्हें जान से मार डालूँगा !"

वह बड़ी भयंकरता से दाँत पीसने लगा।

नतालिया उसके हाथों से दबी पीछे को झुकी हुई थी, वह अपने हाथों से उसके कंधे दबाये हुए था। वह जानती थी उसने जो कुछ कहा वह न कहना चाहिये था। अब वह सहम गई। पाल ने देखा वह लरज रही थी और उसे देखकर उसके हृदय में दया उमड़ आई, उसकी क्रोध-पूर्ण डाह शांत पड़ गई लेकिन उसके घाव की पीड़ा कम न हुई। वह उसके पास ही लुढक गया। एक लम्बी खामोशी, एक उक्ता देने वाला सन्नाटा छा गया। नतालिया का भय अभी दूर न हुआ था पर उसने वह मौन तोड़ा। बडी नाजुक आवाज में वह भुनभुनाई :

"आओ घर चलें।"

वह कुछ देर बिना बोले उसके साथ चलता रहा, फिर तिरस्कार-पूर्ण स्वर में बोला :

"अगर तुम ऐसी बातें मुझसे कह सकती हो तो इसका मतलब है तुम्हें मुझसे मुहब्बत नहीं है। तुम्हारे शब्दों मे दया का कहीं नाम तक नही। तुम्हें तो चाहिए था बस चुप रहती।"

नतालिया ने गहरी साँस ली; उसके चेहरे पर सच्चा प्रायश्चित झलक आया। तब पाल ने कहना जारी किया :

"खैर, जो हुआ सो हुआ। आइंदा कभी ऐसी बातें अपने मुँह से न निकालना। हम बहुत बातें कर चुके। मेरे पास कुछ पैसे है—बयालीस रुबल। मालिक पर मेरे उन्नीस और आते है। शादी के लिए हमे इतने काफी है बल्कि कुछ और दिन भी इनमें निकल जाएँगे। तुम्हारे पास कपड़े भी हैं जिन्हें पहन कर गिरजे में चल सको? वह वाली फ्राक तो तुमने कभी पहनी ही नहीं—एक बार भी नहीं पहनी, ऐ?"

"हाँ, नही पहनी।" नम्रता से उसने जवाब दिया।

"अच्छा तो, तुम्हें एक और बनवा देंगे। कल मै तुम्हें कुछ कपड़ा ला दूँगा।"

वह कुछ न बोली। जब वे घर पहुँचे तो पाल ने जीने पर ही उससे विदा होना चाहा और सरगोशी के अंदाज में कहा :

"मैं आज ऊपर नहीं चलूंगा।"

"बहुत अच्छा।" उसने सिर हिलाया और सीढ़ियाँ तै करती हुई ऊपर को दौड़ी।

ताला खुलने की आवाज उसने सुनी और गली में से निकल गया। नतालिया की दुःखद बातों ने उसे बहुत जख्मी कर दिया था। समूची गली उसके प्रति उदासीन और रूखी थी, उसमें वे विचार व भावनाएँ पुनः जाग रही थी, जिन्हें मुद्दत से वह भूल गया था। अकेलेपन का ख्याल और ग़म से भरी भावनाएँ उसे घेर रही थी। उसके पुराने विचार व भावनाएँ उसे अब और भी कष्टकर प्रतीत हो रही थीं, उसकी समझ में कुछ न आ रहा था जबकि उन विचारों ने एक नई शक्ल अख्तियार कर ली थी।

नतालिया ने अपने कमरे को ताला लगाया पर कपड़े न उतारे खिड़की खोलकर उसके सामने बैठ गई और उसने चैन की साँस ली। हथेली पर गाल रखे वह खिड़की में से देखने लगी।

आकाश में बादल घिर आए। घने अंधकार से उभरकर वे क्षितिज को एक मखमली पर्दे से ढँक रहे थे। वे इतने आहिस्ता-आहिस्ता छा रहे थे मानो मुद्दत से यही काम करते-करते थक गये हों। आकाश पर फैलते हुये उन्होंने एक-एक करके सभी तारों को बुझा दिया था। और फिर मानो आकाश की इस सजावट को मिटा कर उसकी सुन्दरता नष्ट करके उन्हें खेद हुआ हो और उसकी नर्म, शांतिपूर्ण चमक-दमक धरती से छिपाने का उन्हें पश्चाताप हो वे सारे बादल रोने लगे और पानी की बड़ी-बड़ी बूँदें आने लगीं। पानी लोहे की छत पर इस ज़ोर से टप-टप पड़ रहा था मानो धरती को चेतावनी भेज रहा हो।

पाल की तरह नतालिया को भी रंज हो रहा था। लेकिन उसे लगा वह फँस गई है। "अच्छा, तो यह है तुम्हारी ज़ात! बिल्कुल दूसरों की तरह के ही हो! आज मुझसे मुहब्बत करते हो, कल मेरे दाँत तोड़ दोगे! हाँ तो, मेरे लख्तेजिगर! तुम मुझसे खिलवाड़ करोगे हुहँ! अच्छा, जरा ठहर जाओ।"

उसे पाल का विकृत, भयँकर चेहरा, उसके कट-कटाते दाँत और उसकी वह कानाफूसी याद हो आई—"चुप रहो! मैं तुम्हें जान से मार डालूँगा।" क्यों? क्या इसलिये कि वह इतनी साफगो थी और उसने सब कुछ उसे सच-सच बता दिया था? वाह, वाह, क्या कहने हैं! और इस पर वह अपने आपको मेरा दोस्त कहता है! वह तो यह भी सोचता है कि उसे मुझसे मुहब्बत है।

ज़िंदगी में पहली बार किसी ने उसे मार डालने की धमकी दी थी। जब ग़ैर उसे मारते थे तो योंही मार लेते थे, शराब के नशे में बगैर कुछ कहे सुने उसे पीट लेते थे और अब तुम भी उन्हीं के नक़्शे-

कदम पर चलने लगे—तुममें और उनमें फर्क ही क्या रहा ? इसके बाद वह इसी विचार में लीन होगई कि पाल के साथ जिदगी कैसी रहेगी—और दिन-रात वह इसी सोच-विचार में गुँथी रही। उसे सवेरे जल्द ही उठना पड़ेगा। वैसे तो उसकी आँखों में नींद होगी लेकिन समावार भी तो चढ़ाना ही होगा, पाल को काम पर जाना होगा। इसलिये स्टोव जलाकर उसके लिये अगर कुछ हुआ तो खाना तैयार किया करेगी। सारा कमरा उसे झाड़ना-पोंछना पड़ेगा। फिर मेज़ सजानी पड़ेगी। दोपहर का खाना हुआ और उसके बाद बर्तन धोने पड़ेंगे, फर्श झाड़ना होगा, अपने लिये या पाल के लिये कुछ सीना-पिरोना पड़ेगा और फिर शाम के लिए समावार चढ़ा देना होगा। और बस तब शाम हो जाया करेगी—

फिर फर्ज करो अगर उन्हें फुर्सत हुई तो वे दोनों घूमने भी चले जायेंगे। लेकिर उसके साथ घूमने जाना तो बड़ा बोझिल और खुश्क रहता है। उनसे मिलने भी शायद ही कोई आये। वह उजड्ड और चिढ़चिढ़ा तो वैसे ही है। घूम-फिर कर वे लौटेंगे, खाना खायेंगे और सो जायेंगे और एक दिन पूरा हो जायगा।

लेकिन अगर उसके पास कोई काम न हुआ तो ? और अगर मेरी पिछली जिंदगी पर वह मुझे भला-बुरा कहने लगा तो ? मारने-पीटने लगा तो ? और फिर हो सकता है बारह साल के छोकरे से लेकर सत्तर साल के बूढ़े तक से उसे जलन हो। और मैं उससे बातें क्या करूँगी ? वह तो मुझसे भी ज़्यादा मूर्ख है—पढ़ना-लिखना भी नहीं जानता। मुझे तो किताबें पढ़ने में मज़ा आता है, बहुत-सी किताबें मैं कहाँ से लाऊँगी ?

जितना ज्यादा वह अपनी और पाल की विवाहित ज़िदगी के बारे में सोचती जाती वह उतनी ही बदमज़ा और बोझिल दिखाई देती।

उसने अपने आप से प्रश्न किया, "मैं अपने आप को क्यों उसके

हाथों बेच दूँ ?" और तुरंत उसे महसूस हुआ कि पाल के पास उसके एवज़ देने के लिये कुछ भी तो नहीं है। फिर उसने यह सोचना शुरू किया कि आख़िर वह कौनसी चीज है जो हम दोनों को प्रेम-बंधन में बाँधे हुये है। आख़िर उस पर पाल का कौनसा एहसान है जिसके तले वह दबी हुई है ? उसे यह नतीजा निकाल कर अपार आनन्द हुआ कि वह नहीं बल्कि पाल ही उसके एहसानों तले दबा हुआ है और वह उसके प्रति इसीलिए अनुरक्त हुई थी क्योंकि पाल की स्थिति दयनीय थी और वह बिल्कुल अकेला था।

तो अब मैं क्या करूँ ? उसने साँस ली और उसे चैन पड़ गया।

बड़े घृणापूर्ण स्वर में उसने जोर से पाल को फटकारा:

"अबे, माता के मठ ! हा ! तू ठहर जरा मैं तुझे बताती हूँ ! मैं बताती हू तुझे मैं किस किस्म की औरत हूँ ! अब तू पीस अपने दाँत मुझ पर कलमुहें ! तू समझे बैठा है मैं तेरी गुलमटी हूँ, तेरी बाँदी हूँ ! अभी तुझे पता चल जायगा, तूने देखा ही क्या है अभी !"

ऊपर को उछल कर उसने एक रूमाल अपने सिर पर डाल लिया।

किवाड़ों में ताला लगाने की परवाह किये बगैर ही वह धड़-धड़ाती हुई ज़ीना उतर कर नीचे चली गई। उसने ज़रा भी यह न सोचा कि बारिश जोरों से हो रही है, लोहे की छतों पर, पगडंडियों और खिड़की के शीशों पर उसके गिरने की पट-पट की बोझिल आवाज आ रही है। वह दौड़ती हुई चली गई। वह पाल को यह बताने जा रही थी कि वह किस किस्म की औरत है। भयंकर क्रोध और साहस और अपनी स्वाधीनता का एहसास उसमें पैदा होगया था।

६

नतालिया को घर से गये हुये दो दिन हो चुके थे। पहले ही दिन सवेरे ज्योंही पाल उसके कमरे मे दाखिल हुआ उसे लगा कि कुछ अनहोनी होगई है। दिन भर वह नतालिया की प्रतीक्षा करता रहा। उस दिन रात वह उसे शहर के आस-पास तलाश करता रहा। धर्मशालाएँ और सरायें सब उसने छान मारी लेकिन वह कहीं न मिली। उसने अपने दाँत कटकटाये, गुस्से में खूब गुर्राया, उछलता-कूदता फिरा और अगले दिन खामोश होगया। प्रत्याशित कुछ भयंकर अनहोनी के घटने के विचार ने उसे आन दबोचा। शनैः शनैः नतालिया के प्रति उसका प्रकोप बढ़ता गया। तीसरे दिन तक तो वह ऐसा दुर्बल और निढाल होगया, गाल इस क़दर पिचक गये मानो किसी भयंकर रोग से उठा हो।

उसी दिन शाम दो गाड़ियाँ उसकी दूकान की खिड़की के सामने से गुजरीं और खड़खड़ करती हुई फाटक की ओर बढ़ गईं। पाल ने नतालिया की हँसी सुनी तो उसका चेहरा पीला पड़ गया और भौचक्का हो आँगन की ओर लपका।

नतालिया एक पीले से आदमी के बाहुपाश में थी जो पोशाक से सैनिकों के दफ्तर का क्लर्क लगता था। उसकी मूँछें, चेहरा, जाकेट सब कुछ ऐसा दीख रहा था मानो मुर्झा गये हों। वह शराब में धुत्त लोट रही थी, गाने गारही थी और हँस रही थी। उसके पीछे ही एक और जोड़ा चल रहा था एक पतली-दुबली, साँवली-सी लड़की किसी अधेड़ उम्र के व्यक्ति के साथ जा रही थी जो शक्ल से रसोइया दिखाई देता था।

हाल में लगे तख्तों की एक दरार में से पाल यह सब झाँक रहा था। अन्दर ही अन्दर उसका खून खौल रहा था। उसने सोचा कहीं क्रोध के मारे उसका दम न घुट जाय। लेकिन जब वे सब-के-सब जीना चढ़ कर उसकी नजरों से ओझल होगये तो फौरन उसका गुस्सा शांत होगया और वह निराश के अन्धकार में डूब गया। वह भौचक्का हो हाल के दरवाजे की ओर लुढ़कता हुआ चला। उसका सिर पानी के कनस्तर से जाकर टकराया। अटारी में जो बातें होरही थी और क़हक़हे लग रहे थे उनकी आवाजें नीचे पाल के कानों तक पहुँच रही थीं। नतालिया के चेहरे की भाव, भंगिमाएँ—आनन्दित, जोर-जोर से हँसती हुई, बहुत प्रफुल्लित, बहुत उल्लसित ऐसी कि कभी पाल के साथ न रही थी—सब उसकी नज़रों में घूम रही थीं।

"इतनी उल्लसित व प्रमुदित वह मेरे साथ क्यों नहीं हुई?" उसने सोचा। तुरंत बड़ी सत्य प्रियता के साथ उसने अपने प्रश्न का उत्तर खुद ही दिया। "मेरे साथ, पाल के साथ वह इतनी खुश कभी न हुई। मै बेहूदा हूँ, रूखा हूँ, और दिक़ करता हूँ।" इस बात के एहसास से उसकी तकलीफ़ दुगुनी होगई। ऐसा प्रतीत हुआ कि वह उसके हाथ से गई और इसमें दोष भी उसी का था। वह हाथ से जाती रहेगी! वह उससे हाथ धो बैठेगा! और फिर उसकी पुरानी जिंदगी उसे वापस मिल जायगी; वह फिर अकेला, खामोश, सबसे तिरस्कृत, भोंडा और उपहासास्पद अनाथ हो जायगा। वही जो हर उस शख्स के साथ होता है जो किसी स्त्री से प्रेम करता है और उसे खो बैठता है। पाल ने अब नतालिया की बेहतरीन विशेषताएँ स्मरण कीं। उसके बारे मे कुछ भी बुरा सोचने का वह ख्याल भी न कर सकता था। अन्त में नतालिया इतनी पाक, इतनी कोमल, इतनी भोली दीख पड़ी —और उसका होना पाल के लिए बहुत जरूरी भी होगया था—कि उसकी पीड़ा और बढ़ गई, उसका दम घुटने लगा।

अचानक वह उछल पड़ा और हँस दिया। उसका चेहरा खुशी से

दमक रहा था मानो महत्वपूर्ण फैसला कर चुका हो, और आँगन में से कूदता हुआ बाहर होगया। धड़धड़ाता हुआ वह जीना चढ कर ऊपर पहुंचा; खी-खी और हा-हा की आवाज़ उसके कानों पर पड़ी।

वह दरवाजे पर खड़ा था। नतालिया उत्तेजित हो, प्रमुदित और साहसी, एक हाथ अपने कूल्हे पर रखे और दूसरे में रूमाल थामे नाचने ही वाली थी। उसे तो सिर्फ नतालिया ही साफ़, सुन्दर और खुश दिखाई दे रही थी—बाकी सब धुँधला था।

"अरे, नताशा!" पाल उल्लसित हो कांपती हुई आवाज में चीखा।

"अरे, तुम हो प्यारे!......" उसका अचरज-भरा उत्तर भयभीत हो, काँपते हुए, कुहरे को चीरता हुआ पाल तक पहुँचा।

भीषण नीरवता का साम्राज्य था, प्रत्येक वस्तु कुहरे में तैरती हुई नज़र आरही थी। सिर्फ नतालिया ही दिखाई दे रही थी—वह निश्चल हो खड़ी हुई घूर रही थी; उसकी बड़ी-बड़ी नीली आँखें बड़ी भोली, बड़ी उज्ज्वल लग रही थीं।

"हाँ, हाँ। मै ही हूँ....तुमसे...मिलने आया हूँ—कुछ देर तुम्हारे साथ बैठने। यहाँ तो बड़ा ही आनन्द-मंगल होरहा है। मैंने सुना हरेक कोई क़हक़हे लगा रहा है सोचा, चलो मैं भी पहुँच जाऊँ," पाल ने असमंजस में पड़ते दए कहा!

आंतरिक शक्ति उसे आगे बढ़ने के लिए उत्प्रेरित कर रही थी और वह लुढ़कता हुआ नतालिया के क़दमों में जा गिरा।

"नताशा! नताशा! मैं आगया हूँ...निकाल बाहर करो इन सब मरदूदों को! मुझे माफ़ करना। मैं तुम्हारे बिना जीवित नहीं रह सकता!......कैसे जी सकता हूँ मैं भला? अकेला? नहीं, अकेला जिंदा रहना असम्भव है!......मै तुमसे मुहब्बत करता हूँ! मैं तुम पर दिलो-जान से मरता हूँ, तुम तो जानती हो! मैंने तुमसे सैकड़ों बार कह दिया है मुझे तुमसे प्रेम है!......तुम मेरी हो...इन गैर

लोगों की तुम्हें क्या जरूरत है ? दिन-रात, चौबीस घण्टे मैं तुम्हारा नाम जपता हूँ···मेरे सारे विचार, मेरी तमन्नाएँ, मेरे अरमान··· मैं खुश रहूँगा ! मेरी जिंदगी झूम उठेगी ! मैं हँसूँगा खूब बातें करूँगा······"

वह उसकी टाँगों से लिपट गया, अपना सिर उसने नतालिया के घुटनों में देदिया और बड़ी मंद, विनम्र और दया-भरी वाणी में वह कुछ बुदबुदाया, उसके शब्द इतने मार्मिक और हृदयग्राही थे कि सबके-सब उन्हें सुन कर स्तभित रह गए।

नतालिया के काटो तो खून नहीं। उसका चेहरा फ़क होगया वह पीछे दीवार से टिक गई। उसने पाल का सिर जकड़ा और दोनों हाथों से उसे धकेलने की कोशिश की। लेकिन वह बड़ी बुरी तरह उससे लिपटा हुआ था, हट न सका। नतालिया के नीले होंठ अपनी लाचारी के साथ हिले पर वह कुछ कह न सकी······

फिर कमरे में एक हल्की-सी दबी हुई हँसी सुनाई पड़ी। सांवले रंग वाली लड़की हँस रही थी। क्लर्क भी उसे देखकर हँसने लगा और फिर रसोइये ने भी उसी का अनुकरण किया। नतालिया हक्की-बक्की हो उनकी ओर मुड़ी, पाल की ओर उसने दृष्टि डाली और खुद भी ठहाका मार कर हँस पड़ी। सारी अटारी चार व्यक्तियों के बुलंद क़हक़हों से लरज़ उठी।

क़हक़हों के इस अचानक विस्फोट से दबा और अचंभित पाल फर्श पर बैठा रहा और खुश्क तथा पागलों की तरह एक कोने की ओर टिकटिकी लगाये देखता रहा। असल में वह बड़ा ही हास्यास्पद लग रहा था। उसका चेहरा आँसुओं से भीग गया था, आँसू उसके चेचक के दाग़ों में आकर जम गये थे और वह भौचक्का-सा बड़ा ही दयनीय दिखाई दे रहा था। उसके उलझे हुए बाल उसके माथे पर इस तरह भद्दे पन से लटक रहे थे मानो किसी विदूषक के नक़ली 'विग' हों। उसकी आँखें खुश्क थीं, मुँह खुला हुआ था, उसके चमारों के

'एप्रन' से फाड़ कर बनाई हुई, कमीज, उसके जूतों से चिपका हुआ किसी चिथड़े का पैबन्द—इस सबको देखते हुए यह असंभव था कि कोई उस दुखियारे पर तरस खाए।

चारों व्यक्ति उसे देख कर हँसते-हँसते दोहरे हो गए। वह असमंजस में पड़ गया और मौन, निश्चल हो फर्श पर ही बैठा रहा। किसी ने बियर की बोतल खोली और बहा दी। उसकी एक बारीक-सी धार बहती हुई पाल की ओर बढी। साँवली लड़की ने हिस्टीरिया के दौरे में स्त्रियों का एक हैट उछाल कर उसके सिर पर फेंक दिया। वह जा कर उसके घुटनों पर गिर पड़ा। उसने उसे उठा लिया और देखने लगा उसे उस हैट पर भी असमंजस हो रहा था।

इसे देख कर तो लोग और खिलखिला पड़े। वे हँसते, कराहते, खरखर करते और तड़पने लगते। पाल इतने फूहड़ व भोंड़े अदाज में खड़ा हुआ कि और भी हास्यापद लगने लगा। और जब वह लड़खड़ाता हुआ दरवाजे तक गया तब भी बड़ा उपहासकर लग रहा था। वह दरवाजे पर जाकर घूमा और उसने हैट फर्श पर फेंक दिया। नतालिया की ओर संकेत करते हुए उसने दाँत पीस कर कहा :

"याऽऽद रखना!" और वह चला गया, उसके जाने पर फिर ठहाकों की झड़ी लग गई।

"अरे, वाह क्या हीरो है!" कोई चिल्लाया। हँसते-हँसते लोगों की आँखों में पानी आने लगा। "ओ हो हो हो! अहा हा! हा! हा! ओह, शैतान का हवाला उसे! हा, हा, हा! अरे उसकी गर्दन का चिथड़ा भी देखा तुमने! हः! हः! हः! कमर ऐसी झुकी हुई थी जैसे उसकी पूँछ हो! ओह हः हः हः! अरे उसके बाल! हः हः हः ऐसे थे जैसे फूलों का गुलदस्ता! हः हः हः! ओह, फट जाय इसका पेट मर दूद का हः हः हः!"

और बाहर आँगन में मूसलाधार बारिश हो रही थी जिसकी आवाज ऐसी कर्कश थी जैसे ढोल पिट रहे हों। शाम हो चुकी थी।

तीन दिन तक लगातार बारिश होती रही और काली टहनियों पर लगे आखिरी पत्ते तक झाड़ कर ले गई। नियति की निष्ठुर उदासीनता से त्रस्त और थके-हारे पेड़ों के गुद्धे ठण्डी, घृणापूर्ण, दुःखद हवा के भयंकर वेग मे सिर नचाते थे और जमीन पर इस तरह रगड़ते मानो कुछ अपनी प्यारी चीज तलाश कर रहे हों। हठी, ज़िद्दी बारिश और न रुकने वाली गड़गड़ाती हुई तेज हवा ने मरणासन्न हेमन्त के लिए बडा ही अद्भुत 'मरसिया' पेश किया था; और आसन्न जाड़ों का असाधारण स्वागत कर रही थी। घने, रूखे, सफेद बादल आकाश पर इस तरह घिर रहे थे मानो अब कभी छँटने की उन्हें कोई इच्छा ही न हो; मानों आकाश को अपना सौंदर्य सूखी, टुकड़े-टुकड़े हुई धरती को बताने से रोक रहे हों। चौथे दिन तो बर्फ गिरने लगा। बर्फ के भारी गीले लोंदे हवा में शहर भर में चक्कर काटते रहे; अब भी कुछ तलाश करती हुई हवा, बेधड़क, बेतहाशा बढ़ती हुई हवा मकान की दीवारों और छतों पर बर्फ चिपका रही थी।

उस दिन शाम को पाल ने आँगन में इस तरह कदम रखे मानो उसका काम तमाम हो गया हो। वह बड़े फूँक-फूँक कर कदम रख रहा था कि कहीं उसके बूट खराब न हो जायँ। जीना चढ़ कर वह ऊपर गया और कुछ खोया हुआ-सा नतालिया के दरवाजे पर खड़ा हुआ। आज उसने अपने बेहतरीन साफ-सुथरे कपड़े पहने थे, उसका चेहरा शांत और अकड़ा हुआ था। वह कुछ क्षण रुका, फिर उसने दरवाजे पर दस्तक दी। वहाँ खड़े-खड़े वह थक गया, कभी इस पाँव पर खड़ा होता तो कभी उस पर लेकिन दरवाजा न खुला। उसने बड़ी हल्की-सी लेकिन कुछ जोर सीटी बजाई।

"कौन है ?" किसी की आवाज आई।

"मै हूँ, नतालिया, मैं !" पाल ने शांतता से और जोर से जवाब दिया।

"ग्राह !" ग्रौर दरवाजा खुल गया।

"हलो !" पाल ने टोपी उतारते हुए उसका ग्रभिवादन किया।

"हलो, ग्ररे मसखरे तुम हो ! क्या है ? ठीक तो हो ग्रब ? भई उस दिन तो तुमने हमारा बड़ा मनोरंजन किया ! क्या दिखाई दे रहे थे तुम ! तुम तो ऐसे लग रहे थे जैसे उन्होंने तुमसे फर्श धो डाला हो उस दिन तो तुमने कपड़े भी ढंग के नहीं पहने थे ?"

"मुझे तो वह सूझा ही नहीं। माफ करना !" पाल मुँह फेरते हुए हँस दिया।

"चाय पियोगे क्या तुम ? मैं समावार चढ़ाये देती हूँ।"

"नही, शुक्रिया ! मै पहले ही पी चुका हूँ।"

नतालिया ने पाल के रस्मी शब्द ताड़ लिये।

"यह क्या बात है ? इतना दुराव क्यों ?"

नतालिया तिरस्कारपूर्ण हँसी हँसी। ग्रब तो वह उसकी नजर में भी ग्रौर लोगों की तरह ही था, उसमें ग्रौर दूसरों में वह कोई फर्क न समझती थी। जिस दिन वह गैरों के सामने उसके कदमों पर गिरा था उसी दिन से उसकी कद्र कम हो गई थी। उसके पहले ग्रपनी बेवफाई के लिये वह बड़ी बेदर्दी से पीटी गई थी। उसी की वह पाल से भी ग्राशा रखती थी। लेकिन वह तो था ही कुछ ग्रौर किस्म का। वह समझती थी कि यदि वह पाल के साथ भी दूसरों की तरह व्यवहार करेगी तो उससे पाल को कोई लाभ न होगा। वे लोग तुम्हें पीटते थे —यानी वे तुमसे मुहब्बत करते थे जब वे वास्तव में तुम्हें प्यार करते हैं तो न सिर्फ वे तुम्हें पीटते हैं बल्कि तुम्हें जान से मारने की भी कोशिश करते हैं, वे तो किसी भी हद तक जा सकते है। लेकिन पाल ने—वह तो बेचारा गैरों के सामने सिर्फ उसके पैरों में गिर पड़ा था ग्रौर ग्रौरतों की तरह रोया था ! यह कोई मर्दानगी की बात तो है नहीं। यह तो एक मर्द को शोभा नहीं देती। तुम न तो खुदा से दुग्रा करो, न गिड़गिड़ाग्रो, न रोग्रो बल्कि ग्रौरत को हासिल करने के लिये

लड़ो। बस, फिर वह तुम्हारी हो जायगी। लेकिन शायद तब भी न हो पाये......

पाल ने आह भरी।

"अब हमारा-तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं है। एक दिन था, हमारी तुम्हारी दोस्ती थी लेकिन वह मुद्दत हुई खतम हो गई है। बस, सब कुछ खतम हो गया है!"

नतालिया विस्मित हो गई पर उसने अपने विस्मय को छिपा लिया "जाहिर है तुम मुझसे विदा लेने आये हो।" वह उसके पास पलंग पर बैठ गई और आइंदा क्या कहेगा उसका इन्तेजार करने लगी।

"यहाँ कुछ ज्यादा अंधेरा है, नतालिया। ऐसा करो, लैम्प जला लो..........."

"अच्छा!" और उसने लैम्प जला लिया।

नतालिया की ओर कुछ विचारमग्न हो उसने देखा और कहना शुरू किया :

"मै तुमसे आखिरी बार बातें कर रहा हूँ, नतालिया। आइंदा कभी मिलने और बातें करने का मौका हमें नहीं मिलेगा!"

"वह भला कैसे?" उसने आँखें झुका लीं।

वह खुद न जानती थी कि उस प्रकार की परिस्थिति में किस तरह बात करे। हर बात पर वह किसी संकेत की प्रतीक्षा करती ताकि ठीक से चीजों को समझ सके और उनका उचित उत्तर दे सके। उसने देखा पाल गत चार दिन में ही कितना दुबला हो गया था। आज उस की शांतता ने नतालिया को चकित कर दिया था।

"तुम इस तरह से क्यों बातें कर रहे हो?"

"इसका अब वक्त आगया है। मैंने इस पर खूब-खूब गौर कर लिया है। अब इसे खतम होना चाहिये.........और क्यों न हो? क्या अब भी कोई ऐसी चीज है जिसकी मैं तुमसे आशा कर सकूँ?" उसने उसकी ओर देखा और उसके जवाब की प्रतीक्षा करने लगा।

जो कुछ हुआ था उसका नतालिया को रंज था। वह उस पर तरस खा रही थी। वह यह भाँप गई थी कि उसके मौन और शांत होने के बावजूद वह दुःखी है और उसका दिल जख्मी है। आखिर वह भी औरत ही तो थी। और एक औरत के होते हुए किसी भी बदनसीब इन्सान को देखकर वह अपनी दया नहीं रोक सकती थी।

"क्या मतलब है तुम्हारा ?" वह उसकी ओर झुकी। "क्यों मैं तो हमेशा तैयार हूँ.........."

"अरे नहीं, नहीं ! उसकी जरूरत नहीं है !" उसने नतालिया को धकेल कर अलग कर दिया। "बस यही इसका अन्त है। खतम होगया हमारा रिश्ता। तुम ही ठीक कहती थी। शादी से होता भी क्या है ? अब मै समझ गया हूँ इसकी हकीकत। मै कैसा पति हो सकता हूँ ? और तुम भला कैसी पत्नी बन सकती हो ? यही तो सारे मामले की जड़ है.........."

वह रुक गया।

"आखिर यह कहना क्या चाहता है ?" उसने सोचा। वह न समझ सकी। गीले-गीले बर्फ के लौदे आ-आकर खिड़की के शीशों पर जमते जाते थे मानो नतालिया को किसी चीज के प्रति चेतावनी देना चाहते हों या उसे कोई बात याद दिलाना चाहते हों.........

"हाँ, हाँ मै भी यही समझनी हूँ, तुमने ठीक ही कहा। मामला हमारा..........खराब ही रहता," वह बड़ी शांततापूर्वक बुदबुदाई और उसे अब पहले से भी अधिक रंज पाल पर होने लगा।

"हाँ, हाँ बिल्कुल ठीक ! लेकिन मै तुम्हे इस हाल में नहीं छोड़ सकता। हरगिज नही ! तुम बहुत देर तक मेरे दिल में समाई रही हो। मुझे तुमसे बहुत कुछ रकबत रही है। मै फिर कह सकता हूँ कि इस दुनिया में तुमसे ज्यादा प्रिय और घनिष्ट इन्सान मेरे लिए कोई नही रहा है। तुम मुझे सबसे बढ़कर अजीज थी। तुम्हारे ही साथ रहकर मैने जिंदगी को समझना सीखा। तुम्हारा मेरे लिए बहुत महत्व

है। मेरे लिये सबसे ज्यादा मूल्यवान भी तुम ही थीं। मैं तुमसे ईमानदारी के साथ कहता हूँ—तुम मेरे दिल में बैठी रही हो !"

उसकी आवाज काँपने लगी। नतालिया के गालों पर आँसू ढलक आये। वह अब पाल की ओर देखना भी न चाहती थी और इसीलिए उसने अपना सिर घुमा लिया।

"तुम मेरे दिल में रही हो !" उसने दोहराया। "मैं तुम्हें इस तरह नष्ट होने और गंदा होने के लिए नहीं छोड़ सकता ! कभी नही ! मैं वह नहीं कर सकता ! उस स्त्री को जिससे मैं दिलो-जान से मुहब्बत करता हूँ, जिसे मैं दुनिया में सबसे अजीज चीज समझता हूँ उसका दूसरों द्वारा दुरुपयोग हो यह मैं बर्दाश्त नही कर सकता। नही, हरगिज नहीं, नतालिया, हरगिज नहीं !"

वह झुका हुआ खड़ा था और उसकी ओर नही देख रहा था। उस की आवाज से प्रकट होता था वह किसी नतीजे पर पहुंच चुका है और उसे उस पर दृढ़ विश्वास है—लेकिन साथ ही उसकी आवाज में कुछ और भी था। कुछ निवेदन, याचना और क्षमा-प्रार्थना। उसका बायाँ हाथ नतालिया के घुटने पर रखा था और दाहिना उसके कोट की जेब में।

"क्या मतलब है तुम्हारा ?" नतालिया भुनभुनाई। वह अब भी उससे अलग थी और सिसकियाँ भर रही थी।

"बस यही मेरा मतलब है !.........."

पाल ने जेब में से एक लम्बा चाकू निकाला और बड़े विश्वास और सफाई से उसके सीने में पेवस्त कर दिया।

"उफ !" उसकी कराह निकली और वह पलंग पर लुढ़क गई, ठीक उसके सामने उसका चेहरा पाल के सामने आ गया।

पाल ने उसे अपनी बाँहों में ले लिया उसे बिस्तर पर लिटा दिया, उसके कपड़े सीधे किये और उस पर एक ग्लानिपूर्ण नजर डाली। नतालिया के चेहरे पर विस्मय की छाप लगी हुई थी। उसकी भँवें

ऊपर उठ गई थीं, उसकी आँखें अब मन्द थी लेकिन खुली-की-खुली रह गई थीं। उसका मुँह अधखुला था और गालों पर आँसू ढुलक रहे थे।

पाल की कसी हुई नसें फौरन तड़ख उठीं। उसने मंद कराह ली। उसने नतालिया का चेहरा गर्म, भूखे चुम्बनों से ढँक दिया, सिसकियाँ भरता हुआ वह लरजने लगा मानो बुखार आ गया हो। वह ठंडी पड़ चुकी थी।

बर्फ़ पटाख-पटाख खिड़की के शीशों पर पड़ रहा था। चिमनी स टकराकर हवा जोर का शोर मचा रही थी। आँगन में अंधकार फैल गया था; कमरा बिल्कुल अँधियारा हो गया था। नतालिया का चेहरा अब एक-मात्र सफेद धब्बे में परिणत हो गया था। पाल स्तभित हो उसके शरीर पर झुका पड़ा था।

चौबीस घण्टे तक वे अकेले उस कमरे में रहे। नतालिया के सीने में चाकू लगा हुआ था, वह बिस्तर पर लेटी थी। पाल अपना सिर उसके वक्षस्थल पर रखे सो रहा था। खिड़की के बाहर हेमंत की वायु शीत और नम, जोर-जोर से चल रही थी।

अगले दिन शाम को जब वे आए तो उन्होंने उन्हें इसी स्थिति में पाया।

जब पाल गिबली पर इन्सान के न्याय का सर्वोच्च कानून लागू हुआ तो वसंत ऋतु आ चुकी थी।

नवोदित वसन्त के सूर्य का प्रकाश खिड़की में से होकर हाल में पड़ रहा था जहाँ अदालत का अधिवेशन हो रहा था। जूरी के दो सदस्यों के गंजे चिकने सिरों को धूप अपनी क्रूर गर्मी पहुँचा रही थी, जिसे पाकर उन्हें नींद-सी आने लगी थी। अपनी आलस जजों, अदालत और श्रोताओं से छिपाने की ग़रज से वे आगे की ओर झुके हुए थे और झूठ-मूठ यह प्रकट कर रहे थे कि अदालत के मामले में उन्हें असाधारण रुचि है।

उनमें से एक ने श्रोताओं की मुखाकृतियों को बड़ी गौर से देखा। जाहिर है कि उनमें उसे एक शख्स भी अक्लमंद न जान पड़ा और इसीलिए उसने उदास हो अपना सिर हिला दिया। दूसरे ने अपनी मूछों पर ताव दिया और अपने सेक्रेटरी की ओर गौर से देखने लगा जो पेंसिल तराश रहा था।

उसी क्षण बेंच पर बैठे अफसर ने कहा।

"अपराधी के पूरे होश व हवास को देखते हुए........के आधार पर........मैं गवाह से प्रश्न पूछता हूँ........"और सरकारी वकील की ओर मुड़कर उसने पूछा : "कुछ कहना है आपको ?"

यह मधुरदर्शी सज्जन जिसकी मूँछें ऐसी थीं जैसे दो झींगर बैठे हों, बड़ी विनम्रता से मुस्करा दिया।

"मुझे कुछ नहीं कहना है, हुजूरे वाला !"

"बचाव-पक्ष के महाशय ! आपको कुछ कहना है।"

बचाव-पक्ष का वकील भी सरकारी वकील से कुछ कम साफगो न था। उसने भी बुलन्द आवाज में कहा कि उसे कुछ नहीं कहना है और यही उसके चेहरे से भी झलक रहा था।

"अभियुक्त ! तुम्हें कुछ कहना है ?"

अभियुक्त को भी कुछ नहीं कहना था। वह बड़ा मंद और रुक्ष-सा बैठा था और उसके चेचक-भरे, स्थिर चेहरे का लोगों पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ रहा था।

सरकारी वकील, बचाव पक्ष के वकील और अभियुक्त तीनों ने श्रोताओं को धोखा दिया। सभी ने एक आवाज में कहा किसी को भी कुछ नहीं कहना है।

सरकारी वकील में यह आश्चर्यजनक योग्यता थी कि वह अपना चेहरा एक भूखे बुलडाग की भाँति भयंकर और खूँखार बना लेता था। आडम्बर करने और डरावना चेहरा बनाने की ओर भी उसकी प्रवृत्ति थी। उसके हाव-भाव से ऐसा प्रतीत होता था मानो वह जूरी को धमका रहा हो कि यदि तुमने अभियुक्त के साथ जरा भी नरमी बरतने की जुरअत की तो तुम्हारे टुकड़े कर दूँगा।

बचाव-पक्ष के वकील को जब विरोध करना होता तो बोलते-बोलते नाक सिनकने की, बड़ी उदासी के साथ बाल पीछे करने की और अपनी तकरीर को करुणा भरे शब्दों में व्यक्त करने की आदत थी। बड़े धारा प्रवाह रूप में, क्रोधित हो विरोध करते हुए उसने बलन्द आवाज से कहा :

"जूरी के सदस्य महोदय !" इसी सम्बोधन में उसने अपनी सारी करुणा और वाक्-शक्ति भर दी। लेकिन उसकी बाकी तकरीर बिल्कुल सूखी, बोदी और प्रभावहीन थी जिसका जूरी के दिलों पर कोई असर न पड़ा। बचाव-पक्ष के वकील ने इसी एक संबोधन के लिए अपनी सारी शक्ति नष्ट करदी थी।

मुकद्दमे के दौरान में अभियुक्त की एक ही लालसा थी। जब उसे

बारह वर्ष की कैद बामशक्कत की सजा हुई तो उसने अपनी यही इच्छा सबके सामने जाहिर की :

"क्षमा कीजिए।" वह अफसर के सम्मुख झुक गया। उसकी आँखें सूख गई थीं, याचना करते हुए वह बड़बड़ाया : "हुजूरे वाला ! क्या मैं एक बार उसकी कब्र पर जा सकता हूँ ?"

"क्या कहा ?" अफसर सख्ती से चीखा।

"मैं सिर्फ उसकी कब्र पर एक बार जाना चाहता हूँ," अभियुक्त ने बड़े डरते-डरते अपनी इच्छा दोहराई।

"ना मुमकिन !" अफसर गरजा और धड़धड़ाता हुआ दालान से बाहर हो गया।

दो सिपाहियों ने अपराधी को पकड़ा और उसी तरह ले चले जिस तरह मुजरिम हमेशा अदालत से ले जाये जाते हैं।